कर्मभूमि

वर्ष १६ अंक २७

मई २०२३

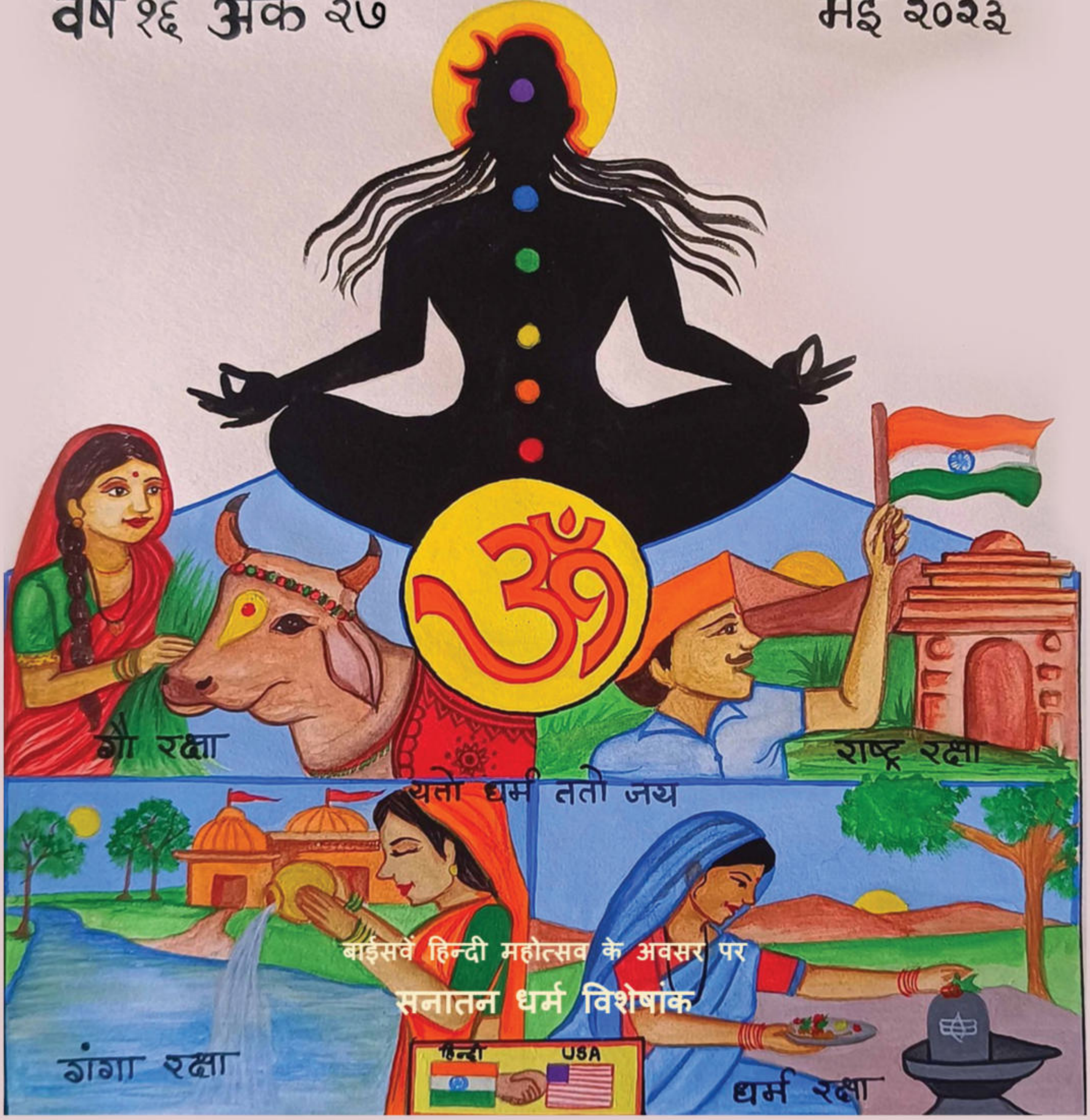

बाईसवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

सनातन धर्म विशेषांक

Best wishes for Hindi Mahotsava

from

Vijay & Neeta Singhal

Celebrate the beauty of the Hindi language and culture with us

Your trusted source for comprehensive insurance and financial planning services. We offer the right coverage for your auto, home, or business, and help you plan for college savings, retirement, and protect your loved ones with Life Insurance and Annuity.

Contact us today at

732-668-6071

for personalized attention and tailored solutions to secure your future

www.hindiusa.org

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335
रचिता सिंह (शिक्षण/प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966
राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619
माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429
सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी - कनिष्ठा-१ स्तर
रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे - कनिष्ठा-२ स्तर
मोनिका गुप्ता, मीनाक्षी सिंह - प्रथमा-१ स्तर
सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके - प्रथमा-२ स्तर
इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी - मध्यमा-१ स्तर
मीनाक्षी सिंह, गरिमा अग्रवाल - मध्यमा-२ स्तर
ऋतु जग्गी, राजीव महाजन - मध्यमा-३ स्तर
सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह - उच्चस्तर-१
कविता प्रसाद - उच्चस्तर-२

अन्य समितियाँ

अमित खरे – वेब साइट, वीडियो
योगिता मोदी – बुक स्टाल प्रबंधन
वेणुगोपाल वर्मा – शिक्षण प्रबंधन और ऑनलाइन पंजीकरण

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429), सुनील दुबे (848-248-6500)
साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)
मॉन्टगोमरी: रीना सिंह (908-499-1555)
पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535), स्वाति सिंघानिया (609-819-3305)
ईस्ट ब्रंस्विक: स्वागता माने (646-415-4072)
वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)
जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)
प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)
लॉरेंसविल: राखी वैश्य (732-881-1995)
चैरी हिल: जय जैन (856-236-6272), वेनू वर्मा (609-598-4038)
चैस्टरफील्ड: मधु राजपाल (732-331-5835)
होमडेल: रंजना गुप्ता (908-380-8697)
मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)
नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)
बस्किंग रिज: संजय गुप्ता (732-331-9342)
विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690), चेतना मल्लारपु (475-999-8705)
स्टैमफर्ड: मनीष महेश्वरी (203-522-8888)
एवॉन: बसवराज गरग (732-201-3779)
ट्रम्बुल: रुचि शर्मा (203-570-1261)
एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्शियान (201-892-7898)
नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394)
अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631)
सैन डिएगो (CA): मुदिता तिवारी (858-229-5820)
सैंट लुइस (MO): मयंक जैन (636-575-9348)

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कर्मभूमि

०७ - युवा स्वयंसेवक अभिनंदन समारोह - २०२३

०८ - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम

१० - सनातन धर्म की विशेषता

११ - हिंदुत्व की पहचान सनातन धर्म

१२ - भगवद् गीता के सबसे महत्वपूर्ण श्लोक

१७ - सनातन धर्म का महत्व

१८ - सनातन धर्म के प्रसिद्ध ऋषि, मुनि और संत

२० - सनातन धर्म की परिभाषा और मान्यताएँ

२४ - विश्व के हिन्दू मंदिर

३२ - भारत के महान ऋषि

३३ - सनातन धर्म का महत्व

३४ - सनातन धर्म के महत्व - ऑनलाइन पाठशाला

३६ - हमारे जीवन में धर्म का महत्व और प्रभाव

३८ - एडिसन उच्चस्तर-२ पाठशाला के लेख

४६ - मुझे सनातन धर्म में क्या अच्छा लगता है

४८ - सनातन धर्म की विश्व को देन

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

HindiUSA
70 Homestead Dr|ve
Pemberton, NJ 08068

मुखपृष्ठ — नियति चोरडिया, उच्चस्तर-१

६२ - सनातन धर्म में मूर्ति पूजा

६३ - सनातन धर्म: परिभाषा, संत, ग्रंथ और जीवन शैली

६६ - साऊथ ब्रन्सविक, मध्यमा-१

६८ - भारतीय सनातन धर्म — एक महान वृक्ष

७० - चेरी हिल पाठशाला, उच्च स्तर - १

७२ - मध्यमा-२ पाठशालाओं के लेख - हमारे प्रसिद्ध मंदिर

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर २१ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की २५ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

संपादकीय

वर्ष २०२३ हिंदी यू. एस.ए. की स्थापना का बाईसवां वर्ष है। विगत २२ वर्षों में संस्था ने अभूतपूर्व प्रगति की है जिनके प्रमाण आपके समक्ष हैं।इस प्रगति का पूर्ण श्रेय हमारे समर्पित अध्यापकों, स्वयंसेवकों एवं अभिभावकों को ही जाता है, उनके कठोर श्रम के बिना संस्था का इस स्तर पर और इतनी उपलब्धियां प्राप्त करना कदापि संभव नहीं था।

वर्ष २०२२-२०२३ के शिक्षण सत्र में हमारी सभी पाठशालाएं कोरोना की महामारी से उबरकर पुनः सुचारू रूप से शाला-भवनों में पुनर्स्थापित हो गयी हैं तथा छात्रोंप के सभी वार्षिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएं जैसी २०२० के पहले थी उसी प्रकार प्रारम्भ हो चुकी हैं, यह एक प्रसन्नता का विषय है ।

कर्मभूमि का यह अंक, 'सनातन धर्म विशेषांक' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष है । सनातन धर्म का महात्म्य, हमारी प्राचीन संस्कृति,संस्कारों एवं राष्ट्रभक्तिकी भावनाओं से भरे लेख, कहानियां,एवं कविताओं से सरोबार यह विशेष पत्रिका आपको अवश्य ही पसंद आयेगी तथा यह एक अमूल्य संकलन के रूप में आपके लिए उपयोगी होगा ऐसी हमारी आशा है ।भारत में स्थित प्राचीन मंदिरों के साथ साथ ही अमेरिका में स्थित मंदिरों का सुन्दर वर्णन चित्रों सहित हमारे छात्रों ने अपने विभिन्न लेखों में बहुत ही आकर्षक रूप में किया है । आप इन्हें अवश्य पढ़ें ।सनातन धर्म विश्व का सबसे प्राचीन एवं अखंड धर्म है जिसका मूल उद्देश्य अनंत जीवन का मार्गदर्शन करवाना है जिससे सभी प्राणी धर्म, आध्यामिकता, नैतिकता,और सम्पूर्ण विकास के लिए एक साथ काम कर सकें।हमारे सभी प्राचीन ग्रन्थ वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण गीता, महाभारत इत्यादि सभी सनातन धर्मकी ही व्याख्या करते हैं ।

हमारे छात्रों, अभिभावकों, एवं स्वयंसेवकों ने अति सुन्दर लेख एवं प्रभावी सामग्री इस अंक में प्रस्तुत की है।सनातन धर्म के विभिन्न पंथ, हमारे जीवन में धर्म का प्रभाव,'सनातन धर्म की विश्व को देन' जिसके अंतर्गत लेखिका ने बताया है कि कैसे योग,आयुर्वेद, शल्य-शास्त्र, खगोल विज्ञान, शून्य,आदि का प्रादुर्भाव सनातन धर्म से ही हुआ है ।सनातन धर्म और संस्कृति कितनी महान है और कला और विज्ञानं हजारों वर्ष पूर्व कितना विकसित था इसका प्रमाण हमारे ये विशाल प्राचीन मंदिर हैं जो पूरे भारत में जगह जगह फैले हुए हैं ।

हमारी संस्कृति और संस्कारों को हमारे बच्चों एवं आने वाली पीढ़ियों को देने हेतु हिंदी यू. एस. ए. ने इस वर्ष से कुछ पाठशालाओं में एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया है, 'मातृ-पितृ पूजा', इसके अंतर्गत भाग लेने वाले सभी छात्रों के माता-पिता को स्कूल में आमंत्रित किया जाता है फिर एक समारोह में, छात्र-छात्राएं अपने माता पिता की पूजा अर्चना कर उनको तिलक लगाकर उनके चरण स्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेते हैं तथा माता-पिता को हमेशा सम्मान देने एवं जीवन पर्यंत उनकी सेवा करने का संकल्प सभी बच्चे लेते हैं ।इस कार्यक्रम को सभी अभिभावकों ने बहुत पसंद किया है।हमारा प्रयास रहेगा की आने वाले वर्षों में हम सभी पाठशालाओं में इस कार्यक्रम को संपन्न करें।

हिन्दी यू.एस.ए. को अपने समस्त अभिभावकों, छात्रों, और समर्पित स्वयंसेवकों पर हमेशा गर्व रहा है और रहेगा। आप सभी के समर्पण से ही यह संस्था अपने बाईस वर्ष पूर्ण कर पाई हैऔर निरंतर प्रगति कर रही है। पिछले २ वर्षों में संस्था ने अपने अधिकांश प्रशिक्षण एवं अन्य कार्यों का आधुनिकरणकिया है। विधार्थियों के पंजीकरण का नया ऑनलाइन सिस्टम संस्था ने बनवाकर दो वर्ष पहले कार्यान्वित किया था जिससे अभिभावकों को अपने बच्चों के पंजीकरण में सुविधा होने के साथ ही अध्यापकों को भी अपनी कक्षा के छात्रोंका पूर्ण विवरण, गृह कार्य, पुस्तकें, परीक्षाएं,अंकतालिकाएं तथा रिपोर्ट-कार्ड आदि कोव्यवस्थित रखने में अत्यंत सुविधा हुई है।जिन राज्यों और क्षेत्रों में हमारी पाठशालाएं नहीं हैं उनके लिए हिन्दी यू.एस.ए. ने ऑन-लाइन कक्षाएं पिछले वर्ष से प्रारम्भ की है जिनमे २०० से अधिक छात्र पंजीकृत हैंजो कि न केवल अमेरिका से अपितु अन्य देशों से भी हैं और हमारी कक्षाओं में नियमित रूप से हिंदी का प्रशिक्षण virtually ले रहे हैं।

आप सभी के सहयोग से हिंदी यू. एस.ए. निरंतर

प्रगतिपथ की ओर अग्रसरहै।इसके कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने हेतु किसी प्रकार के कोई भी सुझाव हों तो हमें उनसे अवश्य ही अवगत कराएँ। जो भी अभिभावक संस्था से जुड़कर अध्यापक या स्वयंसेवक के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करने के इच्छुक हो तो कृपया अवश्य संपर्क करें।

कोरोना संक्रमण का अभी पूर्ण रूप से उन्मूलन हुआ नहीं है, आप सभी से यही निवेदन है कि स्वस्थ रहें तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी नियमों का अनुशासित रहकर पालन करें।

धन्यवाद........

-संपादक मंडल

जीवन में अपनों के साथ समय का पता ही नहीं लगता है, मगर समय के साथ ही अपनों का पता भी लग जाता है इसलिए बदला लेने की नही, बल्कि बदलाव लाने की सोचो। शिखर की प्रखरता स्वयं, आपके कदम चूमेगी।

युवा स्वयंसेवक अभिनंदन समारोह - २०२३

हिंदी यू.एस.ए. भारत से बाहर हिंदी सीखने के लिए सबसे बड़ी संस्था है। आज यह संस्था अमेरिका के कई राज्यों में हिंदी के प्रचार प्रसार में लगी हुई है जिसमें से न्यू जर्सी में सबसे अधिक १५ तथा अन्य राज्यों में ११ पाठशालाओं में करीब ४५०० विद्यार्थी है। इन सभी पाठशालाओं को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए ५०० से भी ज्यादा स्वयंसेवक, शिक्षक, शिक्षिकाएँ और करीब २०० युवा स्वयंसेवक अपना बहुमूल्य योगदान दे रहे है। संस्था से अब तक ११०० से ज्यादा विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुकें है जो आज संस्था की कई पाठशालाओं में अपना योगदान पढ़ाने में दे रहे हैं। हिंदी यू.एस.ए. के युवा स्वयंसेवक हमारी अगली पीढ़ी हैं और हिंदी भाषा की जो जोत २००१ में जलाई गई थी उसे आगे बढ़ाने का संकल्प ले कर आगे बढ़ रहे हैं। वर्ष २०२३, युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह सभी ने साथ मिलकर एडिसन के रॉयल अल्बर्ट - नीलकमल हाल में मनाया गया। इस कार्यक्रम में १२५ से भी ज्यादा स्वयं सेवकों ने भाग लिया, हाल की सजावट से साथ-साथ हमारे स्वयंसेवकों के परिधान भी जँच रहे थे। कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय संस्कृति की परंपरा के अनुसार प्रथम पूजनीय श्री गणेश जी की वंदना से हुई और फिर हनुमान चालीसा के पाठ से सारा हाल गूंज उठा और सभी ने एक ऊर्जा का अनुभव किया। हिंदी यू.एस.ए. के किसी भी कार्यक्रम में यह पहली बार था और सभी ने बहुत ही आनंद लिया। संस्था के संस्थापक श्री देवेंद्र जी और राज मित्तल जी ने युवा स्वयंसेवकों को संदेश और जीवन में काम आने वाली बहुमूल्य बातों से साथ-साथ धर्म के बारे में भी कुछ बातें कही जिसे सभी ने बहुत ही ध्यानपूर्वक सुना। सरिता नेमाणी जी और माणक काबरा जी ने कार्यक्रम का संचालन बहुत ही मनोरंजक तरीके से किया। सभी पाठशाला संचालकों ने स्वयंसेवकों का परिचय कराया। हमारे युवा स्वयंसेवकों ने मंच पर विविध प्रकार की प्रस्तुतियाँ करके अपनी प्रतिभा का परिचय दिया तथा यह बताया की हम सिर्फ पढ़ते-पढ़ाते ही नहीं बल्कि हमारी रुचि भजन, भारतीय नृत्य, संगीत में भी है। इसके अलावा जो स्वयंसेवक दूसरी संस्था में भी अपना योगदान देतें हैं उन्हें श्री सुशील जी के द्वारा विशेष सम्मान के साथ-साथ प्रमाणपत्र भी दिए गए। हिंदी यू.एस.ए. सभी युवा स्वयंसेवकों को उनके आने वाले भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता है और आशा करता है की भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा को बहुत दूर तक ले जायेंगे।

"भलाई करना कर्तव्य नहीं,
आनंद है, क्योंकि
वह स्वास्थ्य और
सुख की वृद्धि करता है।"

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

सत्र २०२२-२३

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि "यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए"। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण - पिछले १० वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (www.hindiusa.org) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण - हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में हिन्दी के मोबाइल ऐप का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार - ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्योहार का परिचय - प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्योहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बैसाखी आदि त्योहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा - दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह - हिन्दी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू.एस.ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा - छात्रों को प्रोत्साहित करने और उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा भारत से सम्बंध बने रहने के लिए हिंदी यू.एस.ए. उन्हें भारत यात्रा पर भी भेजता है, जिससे वे अपने संस्कारों की जन्मभूमि से जुड़ें रहें और भाषा एवं संस्कृति की ऊर्जा की उन्हें कभी कमी महसूस न हो। यह यात्रा हर २-३ वर्ष में एक बार होती है।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन - प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी - जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अन्तर्शालेय कविता पाठ - इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू.एस.ए. की २० पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन - इसका विस्तृत विवरण पेज ७ पर देखें।

१२. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी - मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१३. मौखिक परीक्षा - मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१४. हिन्दी महोत्सव - यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोक नृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्योहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१५. वार्षिक परीक्षा - जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

१६. वार्षिक पिकनिक - जून के अंत में पिकनिक का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक और परिवार सम्मिलित होते हैं।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू.एस.ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश: धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं? क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं? क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट www.hindiusa.org पर जाएँ या हमें 1-877-HINDIUSA पर फोन करें।

टीना चोर्डिया

अध्यापिका
मध्यमा-२

सनातन धर्म की विशेषता

मेरा नाम टीना चोर्डिया है और मैं ईस्ट ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला में मध्यमा-२ की अध्यापिका हूँ। भारत में मैं महाराष्ट्र से हूँ। अपनी भावनाओं को लेख के रूप में लिखकर उसे आप सब के साथ साझा करने का मेरा प्रयास है। इस प्रयास में मुझे बहुत आनंद आया। मैं पिछले ५ वर्षों से हिन्दी पाठशाला के साथ जुड़ी हुई हूँ।

सनातन शब्द का अर्थ क्या है? यह जानना महत्वपूर्ण है। सनातन उच्चारण ही हमें एक शाश्वत बोध की ओर ले जाता है जिसका न आदि है और न अंत है। ऐसे गरिमामय भावों से तत्कालीन ज्ञानियों के सृजन से सनातन धर्म बना है। धर्म की व्याख्या एक वाक्य में करें तो, "विस्तृत ज्ञान से बनी एक ऐसी आचार संहिता जो समाज को दिशा दे और बाँधकर रखे।" यही बात को हमें समझने के लिये कई प्राचीन ग्रंथों की रचना हुई है।

सनातन धर्म की उत्पत्ति के संदर्भ में सनातन धर्म की प्राचीनता को लेकर कोई ठोस प्रमाण नहीं है। ऐसा माना जाता रहा है कि जैन धर्म लाखों वर्ष पूर्व आदि मानव काल से आदिनाथ प्रथम तीर्थकर द्वारा उद्भव हुआ किन्तु धर्म में कई जटिलताओं से एक परिष्कृत वर्ग निर्माण हुआ जिसमें वस्त्र, शाकाहार, और संस्कृत भाषा देव भाषा कहलायी गई। इन सभी आविष्कारों से ही सनातन धर्म अंकुरित हुआ होना चाहिये ऐसी मान्यताएँ हैं।

सनातन धर्म की आवश्यकता समाज के जागरूक वर्ग ने महसूस की और यह फलता फूलता गया। लोगों की धर्म में आस्था बढ़ने लगी और सकल मानवीयता उन्नत होने लगी। कालान्तर में विविधताएँ भी आने लगीं। कार्यों के आधार पर ऋषियों ने वर्णों की रचनाएँ की। चार वर्ण प्रमुख रहे ब्राहमण, वैश्य, क्षत्रिय एवं शूद्र। देवी- देवताओं को भी कार्यों के अनुरूप पूजा जाने लगा। महादेव विनाश के, विष्णु जी सृष्टि के पालक एवं ब्रहमा जी रचनाकार बन पूजे जाने लगे। भारत की भौगोलिक विविधता के बावजूद सनातन धर्म ने समस्त भारतवासियों को एकरूपता प्रदान की। संस्कृत भाषा देव भाषा मानी जाने लगी और महान विद्वानों ने बहुत ज्ञानवर्धक, समाज हित कारक ग्रंथों की रचनाएँ की जिनमें वाल्मिक ऋषि द्वारा रामायण, तुलसीदास जी द्वारा रामायण बोलचाल की भाषा में एवं वेदव्यास जी द्वारा रचित महाभारत और उसी ग्रंथ से ही गीता जैसे महान दर्शनशास्त्र का जन्म हुआ।

जीवन में सरलता हो, आचार विचार शुद्ध हों, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के सिद्धांतों पर जीवन यापन करके मानव जीवन महामानव की ओर जाये यही सनातन धर्म का प्रवाह है।

जीवन में सरलता हो, आचार विचार शुद्ध हों, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के सिद्धांतों पर जीवन यापन करके मानव जीवन महामानव की ओर जाये यही सनातन धर्म का प्रवाह है। स्वार्थी भावों ने बहुत सी विकृतियां भी इस धर्म में पैदा की हैं किन्तु लाखों वर्षों से सतयुग, त्रेता युग, द्वापर और कलियुग लाँघकर यह धर्म निरन्तर प्रवाह मान है।

ममता अग्रवाल

अध्यापिका
मध्यमा-१

हिंदुत्व की पहचान सनातन धर्म

नमस्ते, मैं ममता अग्रवाल, साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला की शिक्षिका हूँ। मुझे यहाँ शिक्षण का काम करने में बहुत खुशी मिलती है। इस संस्था से जुड़ने के बाद मुझे एकदम परिवार के जैसा महसूस होता है। ऐसा लगता है मानो अपने परिवार के लिए ही काम कर रही हूँ। मेरी एक बेटी यहाँ युवा स्वयंसेविका रह चुकी है, और दूसरी बिटिया यहाँ की विद्यार्थी है। मैं हिंदी यू.एस.ए की बहुत आभारी हूँ कि मुझे इस कर्मभूमि पत्रिका के माध्यम से सनातन धर्म के बारे में अपने विचार प्रकट करने का अवसर मिला। इसके लिए मैं हिंदी यू.एस.ए का हृदय से धन्यवाद करती हूँ।

हिंदुत्व की पहचान सनातन धर्म का अर्थ है "सदा से" जो था, है, और रहेगा। कहने का अर्थ है सबसे प्राचीन। सनातन धर्म वह है जो हिंदुत्व की पहचान करवाता है। सनातन धर्म का प्रतीक चिन्ह ओम है, जिसमें संपूर्ण ब्रह्मांड समाया हुआ है। ओम बहुत ही पवित्र शब्द है जो कि पूरे ब्रह्मांड में गुंजायमान रहता है।

कालांतर में इसके विभिन्न नाम हुए जैसे आर्य धर्म, वैदिक धर्म और हिंदू धर्म, लेकिन इसका अर्थ केवल यह नहीं है कि यह सिर्फ हिंदू धर्म है। इसके अंतर्गत बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म आदि भी आते हैं, क्योंकि इन सब में भी वही बात कही गई है जो कि हिंदू धर्म में है। पर यह भी सच है कि हिंदू धर्म ही सनातन धर्म का पर्याय है।

सनातन धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जिसमें मोक्ष की प्राप्ति का साधन बताया गया है।

आर्यवर्त की इस भूमि पर मुगल शासन और ब्रिटिश शासन जैसे बहुत से शासन आए, जिसके कारण धर्म की व्याख्या ही बदल दी गई। किसी ने धर्म को कुछ नाम दिया तो किसी ने कुछ। सनातन धर्म वह धर्म है जो एकता की भावना पैदा करता है, सब को समान मानता है, सब भगवानों को एक समान मानता है। प्राचीन समय में हर कोई संप्रदाय अपने- अपने इष्ट को बड़ा बताते थे, जिसके चलते मतभेद हुआ करते थे। लेकिन बाद में ऋषि-मुनियों ने वेदों के द्वारा ज्ञान का प्रचार किया और लोगों को समझाया कि शिव, विष्णु और शक्ति सब समान है। न कोई छोटा है, न ही कोई बड़ा।

सनातन धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है जिसमें मोक्ष की प्राप्ति का साधन बताया गया है। उसमें कहा गया है कि उसके बिना आत्मा की कोई गति नहीं होती। इसलिए इस धर्म के अनुसार मोक्ष का मार्ग अपनाना चाहिए। आज हमारा सनातन धर्म शायद लुप्त होता जा रहा है। हमें इसे बचाना चाहिए। जन-जन तक इसका सही प्रचार करना चाहिए। आगे आने वाली पीढ़ियों को भी इसका महत्व समझाया जाना बहुत आवश्यक है।

वैसे तो सनातन धर्म के बारे में जितना लिखूँ उतना कम है, लेकिन अब मैं अपनी लेखनी को यहीं विराम देती हूँ। जय सनातन धर्म! धन्यवाद।

संकलन - विश्वजीत अग्रवाल

भगवद् गीता के सबसे महत्वपूर्ण श्लोक

गीता एक अद्भुत पुस्तक है। गीता सभी सनातनी पवित्र ग्रन्थों (वेद, पुराण, उपनिषद, श्रुति, तथा स्मृति) का सारांश है। गीताकार ने गीता में ७०० जीवनोपयोगी श्लोकों का समागम किया है जिन्हें पढ़ने और समझने में कई जीवन भी लग सकते हैं। इस लेख के माध्यम से यह प्रयास किया गया है कि गीता का परिचय १५-२० महत्वपूर्ण श्लोकों से ही किया जाए तो अच्छा है। इस लेख को पढ़ने के पश्चात यदि आपकी रूचि नहीं भी बनी तो भी आप ज्ञान की इस गंगा में गोता तो लगा ही चुके होंगे।

गीताकार का आत्मविश्वास तथा साहस

गीताकार अत्यंत साहसी हैं, किसी और धर्म के ग्रंथों में इतना साहस देखने को नहीं मिलता, वे अधिक से अधिक ईश्वर के सन्देशवाहक होने का दावा करते हैं, गीता में श्री कृष्ण छाती ठोककर कहते हैं, मैं स्वयं ईश्वर हूँ।

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो, लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्त: |
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे, येऽवस्थिता: प्रत्यनीकेषु योधा: || 11:32 ||

यह अतुलनीय श्लोक है जिसमें कृष्ण सीधे-सीधे कहते हैं, मैं ही काल हूँ, हे अर्जुन, तेरे बिना भी यह युद्ध होगा तथा शत्रु सेना का संहार भी होगा। तुझे तो केवल मेरा माध्यम बनना है।

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रित: |
प्राणापानसमायुक्त: पचाम्यन्नं चतुर्विधम् || 15:14 ||

कृष्ण कहते हैं कि वे स्वयं ही हर शरीर में विद्यमान वह शक्ति हैं जो अन्न को पचा कर रक्त बना सकती है।

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् |
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम् || 18:14 ||

हर घटना, आविष्कार, खोज, क्रांति, या परियोजना के पीछे पांच कारक होते हैं जिनमें चार मनुष्य के पास हैं तथा पाँचवाँ ईश्वर के पास (ध्यान दें पाँचवाँ, पहला नहीं), १) उचित स्थान या समय, २) कर्ता या उद्यमी, ३) बहुत सी विधियां और तरीके, ४) बहुत से अलग-अलग प्रयास, तथा ५) प्रारब्ध या ईश्वर की इच्छा।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज |
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच: || 18:66 ||

यदि कोई एक ही श्लोक में पूरी की पूरी गीता कहना चाहे तो वह श्लोक १८:६६ ही हो सकता है। इस श्लोक में कृष्ण कहते हैं कि तू सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ, मैं तुझे सभी पापों से मुक्त कर दूँगा।

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् |
य: प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशय: || 8:5 ||

कृष्ण कहते हैं कि जो मनुष्य मेरा स्मरण करते हुए शरीर का त्याग करते हैं, वे सीधे मेरे पास आते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है।

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति |
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मन: || 9:26 ||

कृष्ण कहते हैं कि यदि कोई भक्तिपूर्वक मुझे एक पत्ता, एक फूल, एक फल, या जल ही एक बूँद अर्पित करता है, तो भी मैं शुद्ध भावना से प्रेमपूर्वक दी गई उस वस्तु को आनंदपूर्वक स्वीकार करता हूँ। ईश्वर को छप्पन भोग की कामना नहीं है, वे तो केवल भावना के भूखे हैं।

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते |
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मता: || 12:2 ||

इस श्लोक में मूर्तिपूजा का महत्व बताया गया है, निराकार ईश्वर को साकार रूप देकर मन को एकाग्रचित करने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार बिना अभ्यास किए सीधे ही निराकार रूप को समझना/पूजना संभव नहीं है।

गीता की आधुनिक युग में प्रासंगिकता

गीता आधुनिक युग में भी प्रासंगिक है इसका प्रमाण इन श्लोकों में मिलता है।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मन: |
काम: क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् || 16:21 ||

नर्क के तीन द्वार हैं: काम, क्रोध,तथा लोभ। इनका सर्वथा त्याग देना चाहिए।

ध्यायतो विषयान्पुंस: सङ्गस्तेषूपजायते |
सङ्गात्सञ्जायते काम: कामात्क्रोधोऽभिजायते || 2:62 ||

क्रोधाद्भवति सम्मोह: सम्मोहात्स्मृतिविभ्रम: |
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति || 2:63 ||

काम, क्रोध, तथा लोभ का आपस में क्या सम्बन्ध है और ये कहाँ से आते हैं? इन्द्रियों के विषयों का चिन्तन करते-करते उनमें आसक्ति (काम) उत्पन्न हो जाती है। आसक्ति से कामना (लोभ) उत्पन्न होती है, कामनापूर्ति न होने से या विलम्ब होने से क्रोध उत्पन्न होता है, क्रोध सोचने-समझने की शक्ति को क्षीण कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप स्मृति व्यग्र या सम्मोहित हो जाती है। जब स्मृति चली जाती है, तो बुद्धि नष्ट हो जाती है; और जब बुद्धि नष्ट हो जाती है तो ऐसे व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है।

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् |
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मन: || 6:5 ||

मनुष्य का दिमाग उसके मन, बुद्धि, चित्त, तथा अहंकार का सम्मिश्रण होता है। मनुष्य का अपने दिमाग पर नियंत्रण रहे तो वह उसका सबसे अच्छा मित्र, नहीं तो सबसे बड़ा शत्रु हो जाता है।

गीताजन्य विज्ञान तथा तत्वज्ञान (देह और आत्मा)

गीता का तत्वज्ञान आधुनिक विज्ञान और शैक्षिक दर्शनशास्त्र से बहुत आगे जाता है।

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्य: परं मन: |
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धे: परतस्तु स: || 3:42 ||

यह एक अभूतपूर्व एवं निराला श्लोक है, इसके अनुसार स्थूल शरीर से इन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं और इन्द्रियों से श्रेष्ठ मन है। मन से श्रेष्ठ बुद्धि है और बुद्धि से भी श्रेष्ठ आत्मा है। हम सब बुद्धि पर आकर रुक जातें है, लेकिन मनुष्य की आत्मा उसकी बुद्धि से भी श्रेष्ठ है क्योंकि वह परमात्मा का ही एक अंग है।

आत्मा का परिचय

न जायते म्रियते वा कदाचि, नायं भूत्वा भविता वा न भूय: |
अजो नित्य: शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे || 2:20 ||

आत्मा न कभी जन्म लेती है, न कभी मरती है; आत्मा जन्म रहित, शाश्वत, अमर, और चिरयुवा है। शरीर के नष्ट होने पर यह नष्ट नहीं होती।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृहणाति नरोऽपराणि |
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा, न्यन्यानि संयाति नवानि देही || 2:22 ||
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक: |
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत: || 2:23 ||

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही मृत्यु के समय जीवात्मा अपने पुराने शरीर को त्याग कर नए शरीर में प्रवेश करती है। आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते और न अग्नि जला सकती है। जल इसे गीला नहीं कर सकता और न ही वायु इसे सुखा सकती है।

ईश्वर का सामयिक अवतरण

गीता में ईश्वर के समय-समय (भूत और भविष्य दोनों में) पर अवतरण होना निश्चित बताया गया है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत |
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् || 4:7 ||
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् |
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे || 4:8 ||

जब-जब धर्म का ह्रास होता है और अधर्म की वृद्धि होती है, कृष्ण कहते हैं, हे अर्जुन, उस समय मैं स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होता हूँ। सज्जनों की रक्षा के लिए, दुष्टों का संहार करने के लिए, और धर्म के सिद्धांतों को फिर से स्थापित करने के लिए मैं इस धरती पर युगों युगों से प्रकट होता रहा हूँ।

कर्म तथा कर्मफल

गीता में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि मनुष्य को कर्मफल से आसक्ति नहीं होनी चाहिए, फल की कामना से कर्म दूषित हो जाता है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन |
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि || 2:47 ||

मनुष्य को कर्म का अधिकार है, परन्तु उसे स्वयं को अपने कर्मों के फल का कारण नहीं समझना चाहिए। (१८:१४, दैवं चैवात्र पञ्चमम्)

व्यक्तित्व का विकास

गीता आधुनिक मानव को एक योगी के जैसा व्यक्तित्व बनाने को कहती है।

मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदु:खदा: |
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत || 2:14 ||

कृष्ण कहते हैं, इन्द्रियों और इन्द्रियविषयों के बीच संपर्क क्षणभंगुर तथा भोगजन्य सुख-दु:ख को जन्म देता है। ये अस्थायी हैं, और सर्दी और गर्मी के मौसम की तरह आते और जाते हैं। इसलिए हमें उनसे परेशान हुये बिना उन्हें सहन करना सीखना चाहिए।

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि |
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता: समदर्शिन: || 5:18 ||

वास्तव में ज्ञानी, अपने दिव्य ज्ञान की आँखों से, एक ब्राह्मण, एक गाय, एक हाथी, एक कुत्ते और एक कुत्ते को खाने वाले को समान दृष्टि से देखते हैं।

अश्रद्धा तथा पाखंड

गीता अश्रद्धा और पाखंड से बचने को कहती है, मनुष्य को अपनी बुद्धि और श्रद्धा में सामंजस्य साधना आना चाहिए।

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जना: |
दम्भाहङ्कारसंयुक्ता: कामरागबलान्विता: || 17:5 ||
कर्षयन्त: शरीरस्थं भूतग्राममचेतस: |
मां चैवान्त:शरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् || 17:6 ||

कठोर तपस्या (भूखा रहना, निर्जल व्रत, रोजा, केशलोचन, ठण्डे स्थानों पर निर्वस्त्र रहना, अंगारो पर चलना) शास्त्रों में वर्णित नहीं है, बल्कि पाखंड और अहंकार से प्रेरित होती है। ऐसे लोग काम और आसक्ति से प्रेरित होकर न केवल अपने शरीर के तत्वों को, बल्कि मुझ परमात्मा को भी (जो उनके भीतर निवास करता है), कष्ट देते हैं। इन मूर्खों के संकल्प असुरी होते हैं। ऐसा करने में कोई श्रद्धा नहीं है।

गुड़ी पड़वा/चैत्र नवरात्रि
प्रकृति का नव श्रृंगार..
नव वर्ष का रूप..
जब प्रकृति का श्रृंगार होता है तब हमारा नववर्ष प्रारम्भ होता है।
चैत्र का अर्थ होता है, "मधु"
वसंत के चैत्र मास में इस लोक में मधु रस उत्पन्न होता है।
आज से पेड़-पौधे व लताएँ पुष्पादित होती हैं
और वृक्षों की नई कोपलें फूटकर प्रकृति को नवीनता प्रदान करती हैं,
प्रकृति में चहुओर हरियाली, हरित चुनरिया सा दृश्य बनना आरम्भ होता है।
इसलिये हम चैत्र शुक्ल एकम को गुड़ी पड़वा महापर्व नव वर्ष के रूप में मनाते है

हमारे पूर्वज, ऋषि मुनियों का ज्ञान-विज्ञान उद्देश्य पूर्ण था

सनातन धर्म का महत्व

राखी वैश्य
पाठशाला सहसंचालिका, लारेंसविल पाठशाला

सनातन धर्म मात्र धर्म ही नहीं अपने आप में विज्ञान है,
विश्वपटल पर इसकी सदियों से सबसे अलग पहचान है ।

राम कृष्ण और महादेव की अनुपम अलौकिक कृपाएँ हैं,
भूमंडल और चहुँ दिशाओं में जगह-जगह परिमाण हैं ।

माथे पर तिलक कलाई पर मौली, घंटे और शंखनाद की धुन,
भजन कीर्तन और माला जपने के पीछे भी हैं वैज्ञानिक गुण ।

पंचामृत और भोग अर्पण की परम्परा हमने सदियों से अपनाई,
सामान्य भोज के प्रसाद में बदलने की वैज्ञानिकों ने भी पुष्टि जताई ।

सात्विक भोजन और फलाहार को पूरी दुनिया अपना रही है,
व्रत और उपवासों की परंपरा को हेल्दी लाइफ स्टाइल बता रही है ।

त्योहार मनाने की परंपरा के पीछे ऋषि मुनियों ने पूरी गणित लगाई,
सूर्य और नवग्रहों की स्थिति के तर्क से विश्लेषण कर यह रीति बनाई ।

माथे पर बिंदी पैरों मैं बिछिया कंधे पर जनेऊ कान में कुंडल,
इन पुरानी परंपराओं के पीछे सदियों पहले बताये गये बहुत से गुण ।

हमारे पुराणों की महिमा का कभी कोई ना खंडन कर पाया,
भागवत गीता और रामायण पढ़कर सब ने जीने का ढंग पाया ।

ओम के उच्चारण की महत्वता को नासा ने भी स्वीकारा है,
श्लोकों और मंत्रोच्चार को सभी ने अलौकिक बताया है।

सनातन धर्म की रीतियाँ हम सब को अपने जीवन में सदा अपनानी हैं,
अपनी नई पीढ़ी को यह सनातनी परम्पराएँ सौगात में दिलवानी हैं।

सनातन धर्म के प्रसिद्ध ऋषि, मुनि और संत

चैरी हिल मध्यमा-१ - अध्यापिकाएँ वंदना वर्मा, वर्षा बांगड़

१. द्रोणाचार्य धृतराष्ट्र और पांडु के पुत्रों के गुरु थे।
२. द्रोणाचार्य का एक पुत्र था, जिसका नाम अश्वत्थामा था।
३. द्रोणाचार्य गुरु अग्निवेश और गुरु भारद्वाज के शिष्य थे।

पार्थ सोनी

१. परशुराम जी त्रेता युग (रामायण काल) में एक ब्राह्मण ऋषि के यहाँ जन्मे थे जो विष्णु के छठे अवतार हैं।
२. परशुराम जी का उल्लेख रामायण, महाभारत, भागवत पुराण और कल्कि पुराण इत्यादि अनेक ग्रन्थों में किया गया है।
३. उनके जाने-माने शिष्य थे - भीष्म, द्रोण, कौरव-पाण्डवों के गुरु व अश्वत्थामा के पिता एवं कर्ण।

श्रीवत्स खन्ना

१. मुनि अत्रि ब्रहमा के मानस पुत्र थे जो ब्रहमा जी के नेत्रों से उत्पन्न हुए थे।
२. पुत्रोत्पत्ति के लिए इन्होंने ऋक्ष पर्वत पर पत्नी अनुसूया के साथ घोर तप किया था।

सीओना सारंगी

१. महर्षि भृगु सात महान संतों, सप्तर्षियों में से एक थे।
२. वे भविष्यवाणी ज्योतिष के पहले संकलनकर्ता थे, और ज्योतिषीय (ज्योतिष) भृगु संहिता के लेखक भी थे।
३. महर्षि भृगु ने जन्म चार्ट एकत्र किए, पूरे जीवन की भविष्यवाणियां लिखीं और उन्हें एक साथ भृगु संहिता के रूप में संकलित किया।

राही गोहिल

१. वाल्मीकि, संस्कृत रामायण के प्रसिद्ध रचयिता हैं जो आदिकवि के रूप में प्रसिद्ध हैं।
२. वाल्मीकि रामायण एक महाकाव्य है जोकि राम के जीवन के माध्यम से हमें जीवन के सत्यव कर्तव्य से परिचित करवाता है।

अनिरुद्ध गुरुप्रसाद

१. महर्षि वेद व्यास को भारतीय इतिहास के सबसे महान संतों में से एक माना जाता है।
२. उन्होंने चार वेदों को संपादित करने में सहायता की, १८ पुराण, महाभारत और श्रीमद भगवत गीता लिखी।

निकिता चावला

१. **ऋषि भारद्वाज** एक प्रसिद्ध विद्वान, अर्थशास्त्री और चिकित्सक थे।
२. वे सप्तऋषियों में से एक थे। उन्होंने और उनके छात्रों ने ऋग्वेद की छठी पुस्तक लिखी।
३. ऋषि भारद्वाज ने चरक संहिता, एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा पुस्तक, में भी योगदान दिया।

जिया सिंह

१. **अगस्त्य मुनि** को सप्तर्षियों में से एक माना जाता है।
२. महर्षि अगस्त्य राजा दशरथ के राजगुरु थे।
३. इन्हें चिकित्सा और वैज्ञानिक ऋषियों में एक और तमिल भाषा वैय्याकरण के पिता माना जाता है।

नंदिनी यादव

महर्षि विश्वामित्र इतिहास के सबसे श्रेष्ठ ऋषियों में से एक थे जो जन्म से एक ब्राह्मण नहीं थे। अपने तप और ज्ञान के कारण इन्हें महर्षि की उपाधि मिली जिसके साथ ही इन्हें चारो वेदों का ज्ञान एवम् ॐ कार का ज्ञान प्राप्त हुआ।

इप्सिता चौधरी

ऋषि वशिष्ठ महान सप्त ऋषियों में से एक हैं। वे श्री राम के गुरु भी थे और सूर्यवंश के राज पुरोहित भी थे। उन्हें ब्रह्माजी का मानस पुत्र भी कहा जाता है। उनके पास कामधेनु गाय और नंदिनी नाम की बेटी थी।

समायरा बिनय

१. **कपिला जी** एक प्रसिद्ध हिन्दू संत थे।
२. कपिला जी को "चक्रधनुः" के नाम से भी जाना जाता है।
३. उनको विष्णु भगवान का अवतार माना जाता है।

आरव कोहली

स्वामी विवेकांनद जी का जन्म १२ जनवरी १८६३ को कोलकत्ता में हुआ था। वे एक महान हिन्दू संत और नेता थे। इन्होने रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मठ की स्थापना की थी।

रिधिमा सिंह

सनातन धर्म की परिभाषा और मान्यताएँ

अमेरिका के हिन्दू मंदिर

स्टैमफ़ोर्ड पाठशाला

मध्यमा-३

सनातन धर्म की मूलभूत मान्यताएँ बताती हैं कि आत्मा शरीर से श्रेष्ठ है और आत्मा को मोक्ष के लिए प्रयास करना चाहिए। सभी जीवात्माओं का जन्म उनके कर्म के अनुसार होता है, और वे जीवन में जो कुछ भी सामना करते हैं वह उनके कर्म का परिणाम होता है। प्रत्येक आत्मा को ईश्वर तक पहुँचने के लिए मार्ग का सहारा लेना चाहिए। इस संबंध में स्वयं परमेश्वर ने हमें कई विकल्प दिए हैं। हम उन तक पहुँचने के लिए कर्म योग, भक्ति योग या ज्ञान योग, या शरणागति का सहारा ले सकते हैं। यही हमारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए। मोक्ष वह लक्ष्य है जिसके लिए हमें काम करना चाहिए। सनातन धर्म को हिन्दू धर्म भी कहते हैं। हिन्दू धर्म में कई देवी और देवताओं की घर और मंदिरों में पूजा की जाती है। हम यहाँ आपको अमेरिका के मंदिरों के बारे में बताएँगे।

श्री महावल्लभ गणपति देवस्थानम, फ्लशिंग, न्यूयोर्क

नमस्ते, मेरा नाम वेदांग पालीवाल है। मैं मध्यमा-३ में पढ़ता हूँ। मैं छठी कक्षा में अध्ययन करता हूँ। मेरे मंदिर का नाम गणेश मंदिर है जो फ्लशिंग, न्यू यॉर्क में है।

इस मंदिर का निर्माण १९७७ में उत्तरी अमेरिका के हिंदू मंदिर सोसायटी द्वारा किया गया। यह सोसायटी एक निर्लाभ-संगठन है जो १९७० में स्थापित की गई थी। यह संयुक्त राज्य अमेरिका का पहला मंदिर था, जिसे भारत से Granite लाकर बनाया गया है।

श्री रंगनाथ मंदिर, पमोना, न्यूयोर्क

मेरा नाम इरी पल्लेपु है। मैं अपने परिवार के साथ ग्रीनविच में रहता हूँ। मैं ईस्टर्न मिडिल स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।

मेरे मंदिर का नाम श्री रंगनाथ मंदिर है। यह पोमोना शहर में न्यूयॉर्क में है। हमारा परिवार हर हफ्ते शनिवार को मंदिर जाता है। मंदिर बहुत ही सुंदर है। मंदिर का द्वार सिर के ऊपर तक आता है और सोने के खंभे जैसा दिखता है। मंदिर के मुख्य भगवान श्री रंगनाथ हैं, लेकिन इनके साथ अन्य कई भगवान की मूर्तियाँ हैं जैसे श्री हनुमान, राम और कृष्ण आदि।

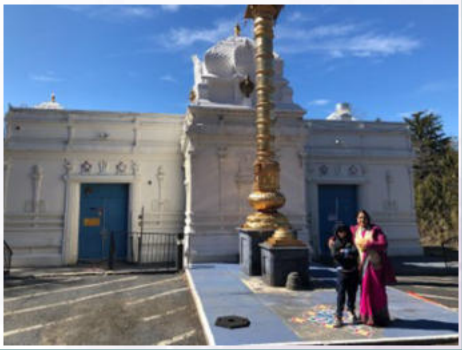

डेलावेयर का हिंदू मंदिर

मेरा नाम रोमिर उप्पल है। मैं १२ वर्ष का हूँ और ७वीं कक्षा में हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए में मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं अमेरिका में पैदा हुआ हूँ और भारतीय मूल का हूँ। मुझे भारतीय परंपराओं और संस्कृतियों के बारे में सीखना अच्छा लगता है। मुझे अपनी बहन के साथ खेलना अच्छा लगता है।

यह डेलेवेयर का पहला हिंदू मंदिर है। इसमें श्री लक्ष्मी देवी की मूर्ति है। इसे २००२ में स्थापित किया गया था। इससे पहले डेलावेयर में भारतीय परिवार पूजा करने और हिंदू त्योहार मनाने के लिए स्थानीय चर्चों और स्कूलों में जाते थे। इसका निर्माण १९९६ में शुरू किया गया था। इसमें मंदिर के प्रवेश द्वार पर हनुमान जी की एक मूर्ति भी है। इसे २०२० में स्थापित किया गया था। हनुमान जी साहस और बुद्धि के देवता हैं। यह प्रतिमा २५ फुट ऊँची है। यह संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे ऊँची मूर्ति है और इसका वजन ६०००० पाउंड है। यह मंदिर विलमिंगटन से २५ मिनट की दूरी पर है।

हिन्दू समाज मंदिर, मॉवाह, न्यू जर्सी

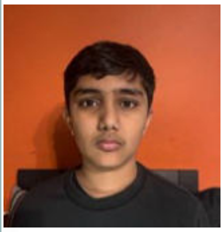

नमस्ते, मेरा नाम सिद्धांत बिसाने है। मैं स्टैमफोर्ड में अपने परिवार के साथ रहता हूँ। मेरे परिवार में मेरा छोटा भाई और माता पिता हैं। मैं छठवीं कक्षा में हूँ। भारत में मेरा परिवार नागपुर शहर में रहता हैं। मैं आपको मॉवाह के हिन्दू समाज मंदिर के बारे में बताऊँगा।

हिन्दू समाज मंदिर न्यू जर्सी राज्य के मॉवाह शहर में है। यह मंदिर मेरे घर से चालीस मील दूर है। मंदिर में प्रवेश करते ही गणेश जी की बड़ी मूर्ती के सामने छोटा सा तालाब है। तालाब में कमल के फूल और मछलियाँ तैरती हैं। जब हम मंदिर में प्रवेश करते हैं तो गणेश जी के इस मंदिर के सामने एक तालाब है। मंदिर के अंदर कई भगवान और बाबा की मूर्तियाँ हैं। शिव जी और पार्वती जी की मूर्ति की हम पूजा करते हैं और महाशिवरात्रि पर शिवलिंग पर दूध चढ़ाते हैं। मंदिर में नवग्रह, हनुमान जी, गणपति जी, श्री विष्णु और लक्ष्मी जी, माँ दुर्गा, माँ सरस्वती, श्री कृष्ण और राधा जी, वेंकटेश्वर जी और राम परिवार की मूर्तियाँ हैं। हम नवरात्रि में दर्शन करने जाते हैं और वहाँ माता का जगराता होता है। मंदिर में ऊपर की ओर साईबाबा, आदिनाथ, नवनाथ की भी मूर्तियाँ हैं।

दिवाली और होली में यहाँ मेला लगता है। मैं अपने परिवार के साथ त्यौहार और जन्मदिन पर पूजा करने जाता हूँ।

विल्टन हिंदू मंदिर

मेरा नाम अद्विवितिया माहेश्वरी है। मैं पाँचवीं कक्षा की छात्रा हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. स्टैमफ़ोर्ड स्कूल में मध्यमा-३ की विद्यार्थी हूँ। मुझे कला, नृत्य और हाइकिंग बहुत पसंद है। मुझे किताबें पढ़ने में भी रुचि है।

विल्टन हिंदू मंदिर ६८ वेस्टपोर्ट रोड, विल्टन, ०६८९७ पर स्थित है। यह मंदिर २०१४ में स्वामी बालगोपाल जी द्वारा शुरू किया गया था। स्वामी बालगोपाल जी के पास हिंदू दर्शन में स्नातक की डिग्री है। मैं प्रत्येक मंगलवार को विल्टन हिंदू मंदिर जाती हूँ और वहाँ अन्य लोगों के साथ श्री राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान, सरस्वती माता, विष्णु, गणेश जी की प्रार्थना करती हूँ। मैं अपने जन्मदिन पर भगवान जी का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये मंदिर जाती हूँ। विल्टन मंदिर में लोहड़ी, मकर संक्रान्ति, शिवरात्रि, होली, बसंत पंचमी, सरस्वती जयंती, तुलसी विवाह, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, माता की चौकी, दीपावली और कई अन्य त्योहार भी बड़े धूम धाम से मनाये जाते हैं। स्वामी बालगोपाल जी का अनुमान है कि हर वर्ष लगभग ५,००० से ७,००० भक्त हिंदू मंदिर आते हैं और उन्हें आशा है कि यह संख्या बढ़ेगी। विल्टन, कनेक्टिकट में मंदिर आने से कई लोगों के जीवन में नई रोशनी आयी है। मुझे और विल्टन में रहने वाले हर भारतीय को विल्टन में हिंदू मंदिर के होने पर बहुत गर्व है।

व्रज मंदिर

मेरा नाम अनुषा मुंद्रा हैं। मैं मध्यमा-३ कक्षा की छात्रा हूँ। मैं पाँचवीं में पढ़ती हूँ और नॉरवाक, कनेक्टिकट में रहती हूँ।

॥हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैयालाल की॥

व्रज मंदिर पेन्सिलवेनिया में है। मंदिर में हम भगवान श्रीनाथजी की सेवा करते हैं। इसे १९८८ में बनाया गया था। जहां मूर्ति है, उसे हवेली कहते हैं। हवेली ६० फुट ऊँची है। मंदिर की इमारत के सामने एक बढ़े कमल की संरचना और चंद्र सरोवर भी है। मंदिर में एक बड़ा हॉल है जिसमें हम प्रार्थना करते हैं। दर्शन के पट हमेशा खुले नहीं रहते। समय-समय पर भगवान को दर्शन के लिए पर्दा खोलते हैं। अलग-अलग समय के दर्शन के अलग नाम हैं। जैसे की मंगला, राजभोग, शृंगार, शयन। मंदिर का प्रसाद बहुत ही स्वादिष्ट होता हैं। व्रज के परिसर में गोवर्धन पर्वत है। मान्यता हैं कि उसकी परिक्रमा करने से सारी इच्छायें पूरी होती हैं। व्रज में रात में रुकने के लिये कमरे भी हैं, जिससे आप सारे दर्शन भी समय पर कर सकते हैं और सुंदर परिसर का आनंद भी उठा सकते हैं। व्रज धाम की बहुत मान्यता है। पूरे अमेरिका से लोग इसके दर्शन करने आते हैं।

बाप्स श्री स्वामी नारायण मंदिर

नमस्ते, मेरा नाम अलीशा सक्सेना है। मेरी उम्र बारह वर्ष है और मैं स्टैम्फ़र्ड में रहती हूँ। मैं स्कोफ़ील्ड मैग्नेट मिडल स्कूल में सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। इसके अतिरिक्त मैं टाएकवोंडो, तैराकी, गणित और कई भाषाएँ जैसे की फ़्रांसीसी, स्पैनिश, जापानी और हिंदी भी सीखती हूँ। मैं बड़ी होकर गायिका बनना चाहती हूँ। मैं सन २०१८ में मेरे दादाजी, दादीजी, पिताजी और माताजी के साथ रोब्बिन्सविल, न्यू जर्सी के बाप्स श्री स्वामी नारायण मंदिर गई थी।

यह मंदिर भारत के बाहर दुनिया का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है। यह मंदिर एक आध्यात्मिक, देवत्व, भारतीयता, एवं मानवता का प्रतीक है। इस मंदिर का निर्माण बाप्स स्वामी नारायण संस्था के द्वारा २०१४ में प्रमुख स्वामी महाराज के निरीक्षण में किया गया था। यह १६० एकड़ ज़मीन पर फैला हुआ है। इसके निर्माण के लिए कई सफ़ेद मार्बल यूरोप से भारत भेजे गए जहाँ हज़ारों कारीगरों ने उन्हें तराशा और फिर अमेरिका लाकर मंदिर का रूप दिया। मंदिर के मुख्य द्वार को मोरों, हाथियों, भक्तों और परमहँसों से सजाया गया है। इस मंदिर में मुख्य श्री स्वामी नारायण एवं गुनातीयानंद स्वामी जी की मूर्तियाँ हैं। यह मंदिर अनगिनत लोगों को कला, भाषा, संगीत और आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से अपनी संस्कृति और विरासत को बनाए रखने में सहायता करता है। यहाँ पर हेल्थ ड्राइव, ब्लड डोनेशन आदि जैसे कई प्रयासों द्वारा सामाजिक उत्थान के कार्य किए जाते हैं। कोई भी भक्त वहाँ जाकर इन उन्नतिशील कार्यों में अपना सहयोग दे सकता है। अपने बड़ों के साथ की गयी इस मंदिर की यात्रा मेरी सभी अन्य यात्राओं में सबसे यादगार है।

भारत के बाहर सनातन धर्म के मंदिर

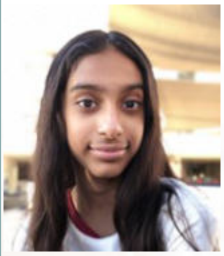

नमस्ते, मेरा नाम रिया कलिकिरी है। मैं मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मैं आपको भारत के बाहर सनातन धर्म के मंदिरों के बारे में बताऊंगी।

भारत के बाहर कई सनातन धर्म मंदिर हैं। सबसे बड़ा मंदिर कंबोडिया में अंगकोर वाट मंदिर है। अंगकोर वाट मंदिर का निर्माण सूर्यवर्मन द्वितीय ने करवाया था। यह भगवान विष्णु को समर्पित था और इसे विष्णुलोक के नाम से जाना जाता था। भारत के बाहर कुछ अन्य सनातन धर्म मंदिर, ऑस्ट्रेलिया में सिडनी दुर्गा मंदिर, इंडोनेशिया में प्रम्बानन मंदिर और नेपाल में पशुपतिनाथ मंदिर हैं।

विश्व के हिन्दू मंदिर

विल्टन पाठशाला, मध्यमा-३

श्री वेंकटेश्वर मंदिर, पिट्सबर्ग, यू.एस.ए.

मेरा नाम ऐशानी दिबौलिया है। मैं अपने माता-पिता और अपने जुड़वाँ भाइयों के साथ विल्टन नगर में रहती हूँ। मैं ५वीं कक्षा में हूँ। मैं पिछले ५ वर्षों से भरतनाट्यम सीख रही हूँ। पढ़ाई के अतिरिक्त मुझे पेंटिंग, तैराकी, जिमनास्टिक करना भी अच्छा लगता है।

श्री वेंकटेश्वर मंदिर संगठन की स्थापना अगस्त १९७५ में पिट्सबर्ग, यू.एस.ए. के पूर्वी उपनगर में हुई थी। श्री वेंकटेश्वर मंदिर का प्रतिनिधित्व करने वाले देवता भगवान विष्णु हैं। भगवान वेंकटेश्वर भगवान विष्णु के अवतार हैं। भगवान विष्णु को संरक्षण का देवता माना जाता है। भगवान वेंकटेश्वर को श्रीनिवास और गोविंदा के नाम से भी जाना जाता है। श्रद्धालु वेंकटेश्वर मंदिर में अपने बाल चढ़ाते हैं। बाल दान करने का कारण यह है कि भगवान वेंकटेश्वर भगवान कुबेर से लिए गए अपने ऋण को चुकाते हैं। ऐसा माना जाता है कि तिरुपति बालाजी मंदिर में भक्त जितने बाल दान करते हैं उससे दस गुना अधिक मूल्य भगवान आपको धन के रूप में देते हैं। कहा जाता है कि जो भी व्यक्ति अपने बालों का दान करता है उस पर माँ लक्ष्मी की कृपा होती है। श्री वेंकटेश्वर मंदिर का उद्देश्य हिंदूओं को पारंपरिक शैली में पूजा करने के लिए जगह प्रदान करना और हिंदू धर्म में रुचि रखने वाले सभी लोगों को धार्मिक, मानवीय, सांस्कृतिक और शिक्षा संसाधन प्रदान करना एवं विश्व शांति, सद्भाव, आध्यात्मिक और व्यक्तिगत स्वास्थ्य के आदर्शों का प्रचार करना है।

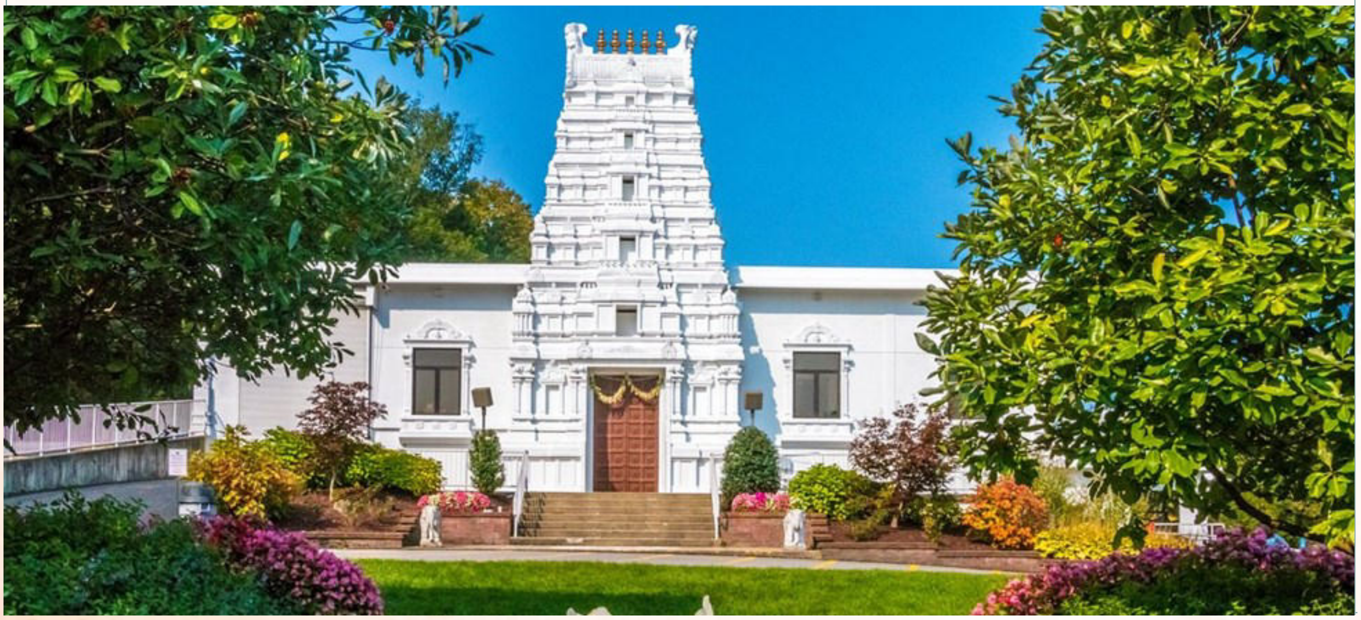

पशुपतिनाथ मंदिर, काठमांडू, नेपाल

नमस्ते, मेरा नाम आर्यन शर्मा है। मैं विल्टन की हिंदी यू.एस.ए. मध्यमा-3 क्लास में हूँ। मैंने जिस मंदिर पर शोध किया है, उसे नेपाल की राजधानी काठमांडू में पशुपतिनाथ मंदिर कहा जाता है।

यह मंदिर हिंदू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। इसका नाम हिंदू देवता पशुपति के नाम पर रखा गया था, जिन्हें भगवान शिव के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर के निर्माण की सटीक तिथि अज्ञात है लेकिन आधुनिक संरचना १६९२ सी.ई. (१६९२ ईस्वी) के आसपास हुई थी। पशुपतिनाथ मंदिर का अस्तित्व पहली बार ४०० AD में दर्ज किया गया था। मंदिर की संरचना वास्तुकला की एक नेपाली पगोडा शैली है जिसमें सोने से ढकी तांबे की २ छड़ें और एक वर्गाकार आधार मंच है। दुख की बात है कि २०१५ के नेपाली भूकंप में मंदिर के कुछ बाहरी हिस्से नष्ट हो गए थे लेकिन मुख्य मंदिर और आसपास के अधिकांश मंदिरों ने कंपन को सहन किया। आज भी आप काठमांडू, नेपाल के गौशाला क्षेत्र में मंदिर देख सकते हैं। इस मंदिर का महत्व यह है कि जो लोग यहाँ मरते हैं वे अगले जन्म में अपने पापों का फल भोगे बिना मनुष्य बनते हैं। हालांकि मंदिर के अस्तित्व पर कई कहानियाँ हैं, लेकिन सबसे प्रमुख कहानी यह है कि जब भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती ने बागमती नदी के किनारे जंगल में मृगों का रूप धारण किया तो देवताओं ने उन्हें देखा और एक मृग के सींग को तोड़ दिया। भगवान शिव के सींग ने उन्हें अपना दिव्य रूप लेने के लिए मजबूर किया। तब से टूटे हुए सींग को लिंग के रूप में पूजा जाता था, लेकिन समय के साथ यह समाप्त हो गया और खो गया। सदियों बाद एक चरवाहे ने अपनी गायों में से एक को दूध की बौछार करते हुए पाया और वहाँ खोदने के बाद पशुपति नाथ के दिव्य लिंग की खोज हुई।

तानाह लोट, बाली, इंडोनेशिया

मेरा नाम अयान भौमिक है। मैं ईस्ट रिज मिडिल स्कूल से आठवीं कक्षा का छात्र हूँ।

बाली भाषा में तानाह लोट का अर्थ है "समुद्र में भूमि"। तबानन में स्थित मंदिर एक बड़ी अपतटीय चट्टान पर स्थित है जिसे समुद्र के ज्वार द्वारा वर्षों से लगातार आकार दिया गया है। कहा जाता है कि तानाह लोट की स्थापना डांग ह्यांग निरार्थ ने की थी। इंडोनेशिया के दक्षिण तट पर अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने रॉक-द्वीप की सुंदर जगह देखी और वहाँ आराम करने का निर्णय किया। कुछ मछुआरों ने उन्हें देखा और उन्हें उपहार दिए। निरार्थ ने उस छोटे द्वीप पर रात बिताई। बाद में उन्होंने मछुआरों से बात की और उन्हें चट्टान पर एक मंदिर बनाने के लिए कहा, क्योंकि उन्हें लगा कि यह जगह सागर देवताओं की पूजा करने के लिए एक पवित्र स्थान है। मंदिर के मुख्य देवता देवा बरूना या भटारा सेगारा हैं जो समुद्र देवता हैं। तनाह लोट मंदिर सदियों से बाली पौराणिक कथाओं का एक हिस्सा रहा है। यह मंदिर बाली तट के आसपास सात समुद्री मंदिरों में से एक है। बाली पौराणिक कथाओं के अनुसार यह मंदिर हिंदू धर्म से काफी प्रभावित था।

श्री काली मंदिर, यांगून, बर्मा

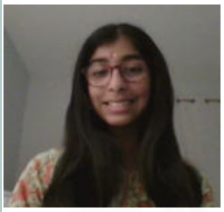

नमस्ते, मेरा नाम ऋचा राघवन है और मैं मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ। आज मैं आपको बर्मा के श्री काली मंदिर के बारे में बताऊँगी। श्री काली मंदिर बर्मा के यांगून में स्थित है। श्री काली मंदिर का निर्माण १८७१ में तमिल प्रवासियों द्वारा किया गया था, जब यह ब्रिटिश भारत का हिस्सा था। देवी काली को काले रंग में दिखाया गया है और उनकी चार भुजाएँ हैं, एक में एक राक्षस का कटा हुआ सिर और दूसरे में तलवार है। देवी काली विनाश और शक्ति की देवी हैं, इस मंदिर में उन्हें फूलों और कई भक्तों के साथ पूजा जाता है। मंदिर की मीनार को हिंदू कथाओं की कई मूर्तियों से सजाया गया है, इसलिए मंदिर के अंदर कई खंभे और दीवारें सुंदर नक्काशी से भरी हैं।

प्रम्बनन मंदिर, योग्यकार्ता, इंडोनेशिया

नमस्ते, मेरा नाम वीर गुलिया है। मैं छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं वेस्टन, कनेक्टिकट में रहता हूँ। मैं विल्टन हिंदी स्कूल में हिंदी सीखता हूँ।

प्रम्बनन मंदिर योग्यकार्ता, इंडोनेशिया के क्षेत्र में ९वीं शताब्दी का हिंदू मंदिर परिसर है। मंदिर त्रिमूर्ति (विष्णु, शिव और ब्रह्मा) को समर्पित है। प्रम्बनन मंदिर इंडोनेशिया में सबसे बड़ा हिंदू मंदिर स्थल है और अंगकोर वाट के बाद दक्षिण पूर्व एशिया में दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है। यह मंदिर दुनिया भर के पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। मंदिर परिसर में मूल रूप से २४० मंदिर संरचनाएं शामिल थीं। मंदिर का निर्माण संभवतः रकाई पिकाटन द्वारा शुरू किया गया था और उसके बाद उनके उत्तराधिकारी राजा लोकपाल द्वारा जारी रखा गया था। प्रम्बनन मंदिर परिसर में मूल संरचनाएँ ९वीं शताब्दी ईस्वी में बनाई गई थीं। लगभग ८० वर्षों तक इस्तेमाल और विस्तार के बाद मंदिरों को रहस्यमय तरीके से १०वीं शताब्दी के मध्य में छोड़ दिया गया था। भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट और राजनीतिक सत्ता में बदलाव के कारण शायद मंदिर ढह गए और १७वीं सदी में उन्हें फिर से खोजा गया। प्रम्बनन मंदिर परिसर न केवल एक वास्तुशिल्प और सांस्कृतिक खजाने का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि पिछले धार्मिक शांतिपूर्ण सहवास का एक स्थायी प्रमाण भी है।

अंगकोर वाट, कंबोडिया

निखिल पोपली

भगवान विष्णु का यह मंदिर दुनिया का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर परिसर और सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक भी है। अंगकोर वाट का अर्थ है 'मंदिरों का शहर'। यह कंबोडिया देश के अंकोर शहर में स्थित है। इस मंदिर का पुराना नाम यशोधपुर था जिसे अब अंगकोर वाट मंदिर के नाम से जाना जाता है। अंगकोर वाट मंदिर का निर्माण राजा सूर्यवर्मन द्वितीय ने १२ वीं शताब्दी में करवाया था। मंदिर की दीवारों पर आपको रामायण और महाभारत जैसे कई धार्मिक ग्रंथों के प्रसंग देखने को मिल जाएंगे। इसे राजा की राख को सुरक्षित रखने के लिए बनवाया गया था। तो, आप देखते हैं कि इस परिसर का उद्देश्य वही था जो मिस्र के पिरामिडों का था। यह मंदिर कंबोडिया के मीकांक नदी के किनारे बना है। इस मंदिर के चारों ओर एक विशाल खाई है। इस मंदिर को यूनेस्को ने भी विश्व विरासत में सम्मिलित किया है।

बैसाकिह मंदिर, बाली, इंडोनेशिया

मेरा नाम सेजल गुप्ता है। मैं मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ और मुझे फील्ड-हॉकी खेलना पसंद है। मैं आपको माँ बेसाकिह मंदिर के बारे में बताऊँगी।

बैसाकिह का मंदिर एक हिंदू मंदिर है। यह बाली में सबसे बड़े पर्वत माउंट अगुंग के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। बैसाकिह का मातृ मंदिर प्रागैतिहासिक काल का है और यह बाली द्वीप पर सबसे बड़ा और पवित्रतम मंदिर है। मंदिर में प्रवेश करने के लिए आपके पास अपने पैरों को ढकने के लिए एक सारंग, एक कपड़ा होना चाहिए। बैसाकिह का मातृ मंदिर एक ज्वालामुखी पर है और १९६३ में विस्फोट से बच गया। बैसाकिह मंदिरों का एक समूह है और इसमें २३ प्राचीन मंदिर परिसर और ८६ मंदिर हैं। बैसाकिह में चार मंदिर देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं- उत्तर में पुरा बटु मडेग, दक्षिण में पुरा किदुलिंग क्रेतेग, पूर्व में पुरा गेलप और पश्चिम में पुरा उलुन कुलकुल हैं। मंदिर में तीन मुख्य देवताओं, शिव, विष्णु और ब्रह्मा को भी दिखाया गया है। केंद्र में, पुरा पेनाटरन अगुंग सफेद बैनरों के साथ विध्वंसक शिव का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दायीं ओर लाल बैनर पुरा किदुलिंग क्रेतेग में निर्माता ब्रह्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं। पुरा बटु मडेग के काले बैनर विष्णु को संरक्षक का प्रतिनिधित्व करते हैं। बैसाकिह का माता मंदिर १२८४ में श्री मार्कंडेय और उनके अनुयायियों द्वारा बनाया गया था। श्री मार्कंडेय भारतीय मूल के एक हिंदू धार्मिक नेता हैं और बाली आए थे। बैसाकिह का नाम संस्कृत वासुकी की पुरानी भाषा बासुकी के शब्द से आया है, और फिर यह प्राचीन जावा भाषा बन गई। इस संस्कृत में बासुकी का अर्थ है बधाई। बैसाकिह मंदिर में हर मार्च या अप्रैल में १०वीं पूर्णिमा होने पर एक विशाल उत्सव मनाया जाता है। २१ दिनों तक चलने वाला समारोह पूरा होता है और २४ घंटे लगातार प्रार्थना होती है। बाली के लोग मंदिर में बारी-बारी से प्रार्थना करते हैं ताकि २१ दिनों तक प्रार्थना बंद न हो। यह निरंतर प्रार्थना उन्हें सुरक्षा का आशीर्वाद देती है।

श्री स्वामीनारायण मंदिर, अटलांटा

एम्मा थॉमस

मेरा नाम एम्मा थॉमस है। मुझे गिटार बजाना पसंद है। मेरे पास स्नूपी नाम का एक कुत्ता है। मैं विल्टन सीटी में रहती हूँ।

श्री स्वामीनारायण मंदिर संगमरमर करारा और भारतीय गुलाबी बलुआ पत्थर से बना है। मंदिर नक्काशीदार संगमरमर के ३५००० टुकड़ों से बना है। मंदिर के अंदर एक असेंबली हॉल, फैमिली एक्टिविटी सेंटर और क्लासरूम हैं। श्री स्वामीनारायण मंदिर के कई अन्य मंदिर भी हैं, और हाल ही में एक मंदिर २००७ में बनाया गया था, और सबसे पहला १९८० में बनाया गया था। मंदिर का निर्माण ९२ वर्षीय प्रमुख महाराज स्वामी जी ने किया था। सबसे पुराना श्री स्वामीनारायण मंदिर अब लगभग २०० साल पुराना है। मंदिर अपनी विशेषताओं के कारण अद्भुत है। मंदिर में ११२ नक्काशीदार खंभे, २ नक्काशीदार गुंबद और ६६०० हाथों से तैयार की गई मूर्तियाँ हैं।

इस छोटे से लेख से आप देख सकते हैं कि यह मंदिर एक बहुत ही रोचक मंदिर है और बहुत सुंदर है और इस मंदिर को सुंदर और अद्वितीय बनाने के लिए इसमें बहुत समय और मेहनत लगी है।

अक्षरधाम, न्यू जर्सी

रिया पेंडसे

अमेरिका का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर, अक्षरधाम, न्यू जर्सी राज्य के रॉबिन्सविल कस्बे में है। इस मंदिर को देखने के लिए लोग दुनिया भर से न्यू जर्सी आते हैं। अक्षरधाम मंदिर संगमरमर से बनाया गया है। मंदिर की दीवारों पर बहुत सुन्दर नक्काशी का काम किया गया है। यह मंदिर बहुत सुंदर है और इसे निर्माण करने के लिए लगभग १५० मिलियन अमेरिकी डॉलर की निधि लगी थी। मंदिर का निर्माण सन २०१० में शुरू हुआ और सन २०१४ में सम्पन्न हुआ। कई महत्त्वपूर्ण हस्तियों को मंदिर के उद्घाटन के लिए आमंत्रित किया गया था। १० अगस्त, २०१४ को जनता के लिए मंदिर खोल दिया गया। मंदिर बहुत बड़ा है और इसके कुछ हिस्से अभी भी निर्माणाधीन हैं। मंदिर में दान में मिली धनराशि को कई मानवीय परियोजनाओं के लिए प्रयोग किया जाता है। कोविड के समय मंदिर ने आस-पास के अस्पतालों में मास्क बाटें और अपने भव्य परिसर का टीकाकरण के लिए उपयोग किया। मंदिर में अक्सर फ़ूड ड्राइव का भी आयोजन किया जाता है।

श्री शिव सुब्रमण्यम मंदिर, फिजी

सिद्धांत रामाकृष्णन

श्री शिव सुब्रमण्यम मंदिर एक हिन्दू मंदिर है। यह मंदिर फीजी देश के नादी शहर मे है। यह पूर्व एशिया में सबसे बड़ा मंदिर है। श्री शिव सुब्रमण्यम मंदिर वर्षा के भगवान मुरुगन के लिए बनाया गया। मंदिर के बीच में भगवान मुरुगन की मूर्ती है जिसे भारत में बनाया गया था। मंदिर के दूसरे भाग में भगवान गणेश का मंदिर है। मंदिर के तीसरे भाग में भगवान मीनाक्षी और भगवान शिव के मंदिर है। यह द्रविढ कलाकारी का मंदिर है जो भारत के बाहर कुछ ही जगहों में है। १८०० के अंत में भारत से कई लोग गन्ने के खेतों में काम करने के लिए आए और फीजी देश मे बस गए। उन लोगों ने पहला श्री शिव सुब्रमण्यम मंदिर बनाया। १९२६ मे तेन इंदिय सन्मार्ग इक्य संगम (TISI) का प्रारम्भ उस मंदिर में हुआ था। यह मदिर और हिन्दू धर्म के कार्यक्रमों का आयोजन करता था। १९७६ मे इस संस्था का स्वर्ण महोत्सव मनाया गया। उस समय नए मंदिर बनाने की शुरुआत भारत के हाई कमिशनर ने किया था। नया मंदिर आदि द्रविढ़ कलाचार के अनुसार, वास्तु और वेद के अनुसार बनाया गया। मंदिर की मूर्तियों को भारत से लाए गए आठ कलाकारों ने बनाया। श्री शिव

सनातन धर्म की विश्व को देन

मेरा नाम अर्जुन छिकारा है। मैं हिंदी यू.एस.ए. में उच्च स्तर-१ का छात्र हूँ। सनातन धर्म ने विश्व को योग दिया है। सनातन धर्म ने बेहतर स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेदिक औषधि दी है। सनातन योगियों ने बीजगणित, गणित और संस्कृत दी। सनातन धर्म मोक्ष प्राप्त करने के लिए राज योग, भक्ति योग, ज्ञान योग और कर्म योग के आध्यात्मिक मार्ग सिखाता है। सनातन धर्म ने सप्त ऋषि, रामायण, महाभारत, गीता, चार वेद और पुराण दिए। स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती और श्री राम कृष्ण परमहंस सनातन धर्म के आधुनिक प्रचारक थे। सनातन धर्म में गाय, परिवार विशेषकर माता-पिता, दादा-दादी और गुरु पूजनीय हैं।

भारत के बाहर सनातन धर्म के मंदिर

रेयांश तिवारी
मध्यमा-३, जर्सी सिटी

मेरा नाम रेयांश तिवारी है। मैं ११ वर्ष का हूँ और पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरे परोवार में मेरे पता, पिता और मारी बहन है। मुझे सॉकर, आइस हॉकी, स्विमिंग और क्रिकेट खेलना पसंद है। मुझे किताबें पढ़ना और स्केचिंग करना भी पसंद है।

सनातन धर्म मंदिर, वेब्ली, लंदन

श्री सनातन हिंदू मंदिर लंदन में दो हिंदू मंदिरों का नाम है, एक वेब्ली में ईलिंग रोड पर स्थित ब्रेंट में और लेटनस्टोन के पास वाल्थम वन में भेड़ क्रॉस। दूसरा, डी. आर. रन. बी. चैरिटी श्री वल्लभ निधि यूके। यह वेब्ली, लंदन में स्थित है और इसकी जटिल नक्काशीदार उज्ज्वल रेत के रंग की दीवारें और गुंबद ईलिंग रोड पर एक अचूक मील के पत्थर के रूप में स्थापित है। श्री सनातन मंदिर का निर्माण सभी हिंदू मंदिरों की तरह शिल्प शास्त्रों पर आधारित है, जिसमें डिजाइन नियम और मानक शामिल हैं। कुल ४१ देवताओं के साथ ११ आंतरिक मंदिर और २९ छोटे गर्भगृह हैं। मंदिर का कुल निर्माण क्षेत्र २०९०० वर्ग फुट है। मंदिर १८२ फीट ऊँचा और ११५ फीट चौड़ा है।

सनातन धर्म मंदिर, फ्लोरिडा

दक्षिण फ्लोरिडा और ऑरलैंडो के बाद राज्य में भारतीय-अमेरिकियों की तीसरी सबसे बड़ी आबादी वाले टैम्पा बे के भारतीय और हिंदू मंदिर न केवल पूजा स्थल हैं, बल्कि भारत और बड़े पैमाने पर जनता के लिए विरासत का पता लगाने वाली युवा पीढ़ियों को विरासत देने के केंद्र भी हैं। फ्लोरिडा का सनातन मंदिर एक गैर-लाभकारी संगठन है जो आम जनता के लिए खुला है। मंदिर विश्वास के अनुयायियों के लिए उस सर्वोच्च व्यक्तित्व, भगवान के माध्यम से अपनी उच्च चेतना को फिर से जोड़ने और उपयोग करने में सक्षम होने के लिए एक महान स्थान रहा है।

चेस्टरफील्ड पाठशाला, मध्यमा-१

भारत के महान ऋषि

यह लेख हमारी कक्षा के विद्यार्थियों का संयुक्त प्रयास है। प्रत्येक छात्र/छात्रा ने एक ऋषि के बारे में लिखा और फिर उसे एक लेख में संकलित किया। - दिव्या जोशी, शिक्षिका

अंशिका रघुवंशी

ऋषि वेद व्यास: ऋषि वेद व्यास हिंदू दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण ऋषियों में से एक हैं। वेद व्यास को कृष्ण द्वैपायन के नाम से भी जाना जाता है। उनकी माता का नाम सत्यवती और पिता का नाम ऋषि पराशर था। महर्षि वेद व्यास एक कवि, ज्ञानी और त्रिकालदर्शी थे। उन्होंने वेद को चार भागों में विभाजित कर दिया और उनका नाम रखा - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद। उन्होंने महान महाकाव्य महाभारत, ब्रह्मसूत्र, और अठारह पुराण भी लिखे हैं। गुरु पूर्णिमा का पर्व उन्हें समर्पित है। इसे व्यास पूर्णिमा के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि यह उनके जन्मदिन और वेदों को चार भागों में विभाजित करने का दिन माना जाता है।

जोशवीर आनंद

ऋषि अत्री: अत्रि महान सप्तऋषियों में से एक हैं। ऋषि अत्रि को अच्छी बुद्धि, ज्ञान, मजबूत ध्यान शक्ति और मंत्र शक्ति के लिए जाना जाता है। ऋषि अत्रि ने अनुसूया देवी से विवाह किया और उनके तीन पुत्र- दत्तात्रेय के रूप में भगवान विष्णु, दुर्वासा के रूप में भगवान शिव और सोम के रूप में भगवान ब्रह्मा पैदा हुए। ऋषि अत्रि ने ऋग्वेद के पाँचवे मंडल की रचना की है। इस रचना में मुख्य रूप से अग्नि और इंद्र के लिए ८७ श्लोक हैं।

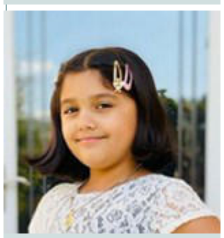

नूर आनंद

ऋषि विश्वामित्र: विश्वामित्र सबसे शक्तिशाली ऋषियों में से एक हैं। विश्वामित्र मूल रूप से आधुनिक कन्नौज के राजा थे, लेकिन अपने स्वयं के प्रयासों और तपस्या से एक ब्रह्म ऋषि बन गए थे। उन्होंने गायत्री मंत्र की रचना की। ऋग्वेद के मंडल तीन की रचना भी उन्होंने की है। वे रामायण में विश्वामित्र राम और उनके भाई लक्ष्मण के गुरु थे। वे ही दोनों भाईयो को राजकुमारी सीता के स्वयंवर में ले गये जहाँ राम और सीता का विवाह हुआ।

इनिका कुमार

ऋषिका गार्गी: गार्गी वाचकंवी, जिन्हें गार्गी के नाम से जाना जाता है, अपने समय की सबसे निपुण और सम्मानित दार्शनिकों में से एक हैं। उनका जन्म सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास हुआ था। गार्गी मानव जाति के लिए नारीवाद के शुरुआती उदाहरणों में से एक थीं। उन्होंने साहित्य और आध्यात्मिकता की दुनिया में समान रूप से कई योगदान दिए हैं। वह राजा जनक के दरबार के नौ रत्नों में से एक थीं। कहा जाता है कि उन्होंने ऋग्वेद में कई सूत्र भी लिखे हैं। उनकी सबसे सार्वजनिक उपलब्धियों में से एक राजा जनक के दरबार में अहंकारी ऋषि याज्ञवल्क्य के साथ हुई एक बहस/चर्चा होगी जिसमें उन्होंने महान ऋषि के अस्तित्व पर सवाल उठाया था। यह प्रवचन बाद में बृहदारण्यक उपनिषद के साथ-साथ योग याज्ञवल्क्य में दर्ज किया गया। छांदोग्य उपनिषद में भी गार्गी के अनूठे दृष्टिकोण को शामिल किया गया है। इतिहास उन्हें एक महान ऋषिका के रूप में याद रखेगा।

सनातन धर्म का महत्व

तरन सिंह

उच्च स्तर-२, वेस्ट विंडसर- प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला

नमस्ते, मुझे अपने भारतीय मूल पर गर्व है। मुझे वायलिन बजाना, पुस्तकें पढ़ना और टेनिस खेलना अच्छा लगता है। मैं हिंदी के साथ-साथ संस्कृत भी सीखता हूँ।

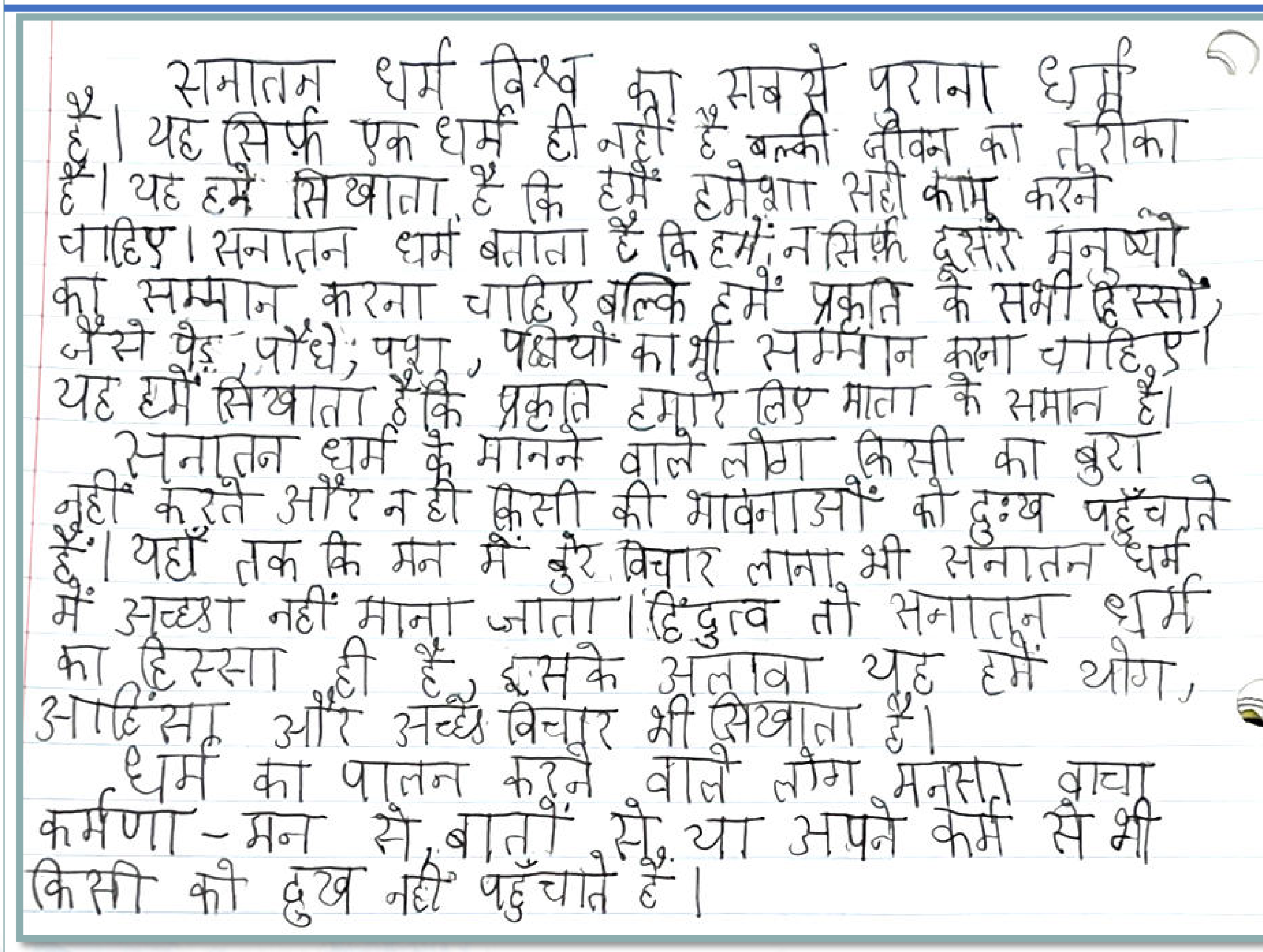

सनातन धर्म विश्व का सबसे पुराना धर्म है। यह सिर्फ एक धर्म ही नहीं है बल्की जीवन का तरीका है। यह हमें सिखाता है कि हमें हमेशा सही काम करने चाहिए। सनातन धर्म बताता है कि हमें न सिर्फ दूसरे मनुष्यों का सम्मान करना चाहिए बल्कि हमें प्रकृति के सभी हिस्सों, जैसे पेड़, पौधे, पशु, पक्षियों का भी सम्मान कना चाहिए। यह हमें सिखाता है कि प्रकृति हमारे लिए माता के समान है।

सनातन धर्म के मानने वाले लोग किसी का बुरा नहीं करते और न ही किसी की भावनाओं को दुःख पहुँचाते हैं। यहाँ तक कि मन में बुरे विचार लाना भी सनातन धर्म में अच्छा नहीं माना जाता। हिंदुत्व तो सनातन धर्म का हिस्सा ही है, इसके अलावा यह हमें योग, अहिंसा और अच्छे विचार भी सिखाता है।

धर्म का पालन करने वाले लोग मनसा वाचा कर्मणा - मन से, बातों से, या अपने कर्म से भी किसी को दुख नहीं पहुँचाते हैं।

सनातन धर्म में मूर्तिपूजा

सनातन धर्म में मूर्तिपूजा की जाती है। हम इन मूर्तियों को भगवान का ही रूप मानते हैं। हम इन मूर्तियों पर फूल चढ़ाकर दीप जलाते हैं और आरती उतारते हैं। इस से भगवान की सेवा करने का भाव मिलता है। इससे मन को बहुत ख़ुशी भी प्राप्त होती है। भारत में ऐसे ही मूर्ति पूजा गणेश चतुर्थी और दुर्गा पूजा के समय में पूरे भारत में देखने को मिलती है। धन्यवाद।। **यश राज प्रशांत, मध्यमा-२, प्लेनस्बोरो पाठशाला**

सनातन धर्म के महत्व

उच्चस्तर-२ **ऑनलाइन पाठशाला**

उर्वी अखौरी

दान (Giving)

वसुधैव कुटुम्बकम। विश्व हमारा परिवार है। और जैसा कि कहावत है, हमारी क्रियाएं हमारे शब्दों से अधिक बोलती हैं। यह सिद्धांत हिंदू धर्म में दूसरों को दान देने के महत्व को स्पष्ट करता है। परन्तु, दूसरों को दान देना इतना सरल नहीं है। सबसे पहले, दान के कई प्रकार हैं जिन्हें दानदाता के इरादों, उपहार के प्राप्तकर्ता, या उपहार क्या है, के कारण दान नहीं माना जाता है। उपहार तीन प्रकार के होते हैं - सात्विक, राजसिक और तामसिक। राजसिक उपहार प्राप्तकर्ता से कुछ हासिल करने के लिए दिए जाते हैं जबकि तामसिक उन्हें अपमानित करने के लिए दिए जाते हैं। दोनों प्रकार के उपहारों को दान नहीं माना जाता क्योंकि दान का अर्थ है कि कुछ प्राप्त करने की उम्मीद के बिना धन को दूसरों के साथ साझा करना; जो कि सात्विक है। दान के सात्विक होने के लिए प्रतिष्ठा के लिए दान देने के बजाय दिल से दान देने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा प्राप्तकर्ता पर भी विचार किया जाता है क्योंकि कुछ लोग हैं जिन्हें दूसरों की तुलना में दान की अधिक आवश्यकता होती है, और उनके उपहार उनके लाभ के लिए होने चाहिए। अपने परिवार को चीजें देना पर्याप्त नहीं है क्योंकि यह एक सामाजिक दायित्व है जिसे आपको निभाना चाहिए। निर्धनों, अनाथों और विद्वानों को दान दो, क्योंकि वे धनवान व्यक्ति की अपेक्षा तुम्हारे इस दान से अधिक लाभ प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त, उनके लिए आपका उपहार कुछ ऐसा होना चाहिए जिसे आप महत्व देते हैं और वह आपके लिये बेकार न हो। ऐसा करने से आप सभी के लाभ के लिए अपने आस-पास दूसरों के लिए धन और प्रेम का प्रसार कर सकते हैं, लेकिन दान तभी दिया जाना चाहिए जब देने के लिए धन हो, क्योंकि हमें दूसरों से पहले अपने आसपास के लोगों की देखभाल करनी चाहिए। लेकिन दान क्यों महत्वपूर्ण है अगर यह केवल दूसरों के लिए लाभ के लिए होता है? ऐसा इसलिए है क्योंकि दूसरों को दान देने से पाप को कम करने में सहायता मिलती है और दान हर किसी को एक खुशहाल और स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। सबके जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

गेयांजलि रेड्डी अल्ला

क्षमा Forgiveness

सनातन धर्म में क्षमा का बहुत महत्व है। कहते है कि हमें लोगों को क्षमा करना चाहिए क्योंकि सभी लोग गलतियाँ करते हैं। क्षमा करने से हमें मुक्ति मिलती है और क्षमा करने वाले लोग अच्छे होते हैं। इसका एक विवरण भारत की दंतकथाओं में है, जब भगवान श्री राम वन से लौटे तो उन्होंने कैकेयी को क्षमा किया था। उनके इस व्यवहार के कारण कैकेयी ने समझ लिया था कि उसने बहुत बड़ी गलती की है और उसे पश्चाताप हुआ। हिन्दू धर्म के अनुसार क्षमा करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि हो सकता है कि हमसे अतीत में गलती हुई हो या भविष्य में हो सकती है।

दया /करुणा kindness compassion

हिंदू धर्म में दया और करुणा का बहुत महत्व है। करुणा और दयालुता ऐसे कारक हैं जिनका हम मनुष्यों को पालन करने की आवश्यकता है, क्योंकि हम सभी प्राणी एक हैं और एक दूसरे के साथ प्यार और सहयोग के बंधन को साझा करना महत्वपूर्ण है। ऐसा माना जाता है कि करुणा बुरे से बुरे लोगों को भी बदल सकती है, जिसे महात्मा गाँधी के कार्यों के माध्यम से देखा जा सकता है। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अंग्रेजों से अपनी दया और करुणा के माध्यम से भारत के लिए संघर्ष किया। एक कहानी है जिसमें गाँधीजी ने सबसे पहले एक चोर को नाश्ता कराया और चोर उनकी दया से इतना प्रभावित हुआ कि उसने अपना दोष मान लिया और फिर कभी चोरी नहीं की। हिंदू धर्म के अनुसार जानवरों और पौधों के प्रति भी दया और करुणा दिखाना आवश्यक है।

नमस्ते, मेरा नाम मृणाली अवस्थी है। मुझे कहानियाँ पढ़ना और लिखना अच्छा लगता है। खाली समय में मैं चित्रकारी और नृत्य करती हूँ।

पश्चाताप (Remorse)

'पश्चाताप' वह मानसिक वेदना या चिंता की स्थिति है जो किसी अनुचित काम को करने के उपरान्त उसके भयानक परिणाम या अनौचित्य का ध्यान करके अथवा किसी उचित या उपयोगी कार्य को न करने के कारण उत्पन्न होती है। 'पश्चाताप' हमारे बचाव का मार्ग है। बिना पछतावे के जीवन में कोई प्रगति या सुधार नहीं होता है। 'पश्चाताप' ही वह कुंजी है जिससे आप ईश्वर से इसके लिए बातें कर सकते हैं, उनके साथ समझौता कर सकते हैं। जिन्हे आपने नुकसान पहुचाया हो, पश्चाताप करके हृदय में शांति प्राप्त कर सकते हैं। रानी केकई को बहुत पश्यताप हुआ था जब उन्होने राम को चौदह वर्षो का वनवास दिया था।

ईमानदारी (Honesty)

ईमानदारी का अर्थ जीवन के सभी आयामो में एक व्यक्ति के लिए सच्चा होना है। ईमानदारी रिस्तों में विश्वास का निर्माण करती है। जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए ईमानदारी बहुत आवश्यक है और सबसे अच्छी बात है कि इन दोनो गुणों को कोई भी व्यक्ति अपने अंदर विकसित कर सकता है। ईमानदारी हमें जीवन में किसी भी बुरी परिस्थिति का सामना करने की शक्ति देती है। ईमानदारी एक शक्ति है जिसमें भ्रष्टाचार को दूर करने और समाज से कई सामाजिक विषयों को हल करने की क्षमता है। स्वामी विवेकानंद जी बहुत ईमानदार थे । उन्होंने कभी अपने मित्रों को धोखा नहीं दिया।

सनातन धर्म – विश्व के लिए उपहार

जोशुआ जोनकुटी

नमस्कार, मेरा नाम जोशुआ जोनकुटी है। मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं स्टैमफ़र्ड में रहता हूँ। सनातन धर्म विश्व के लिए उपहार है, क्योंकि सनातनी विचारधारा हमारे धर्म की सहायता करती है। सनातन धर्म हमारे स्वधर्म में भी मदद करता है। सनातन धर्म आपको एक कर्तव्य के रूप में जो कुछ भी करते है उसके लिए आपको जिम्मेदार ठहराता है। यह आपको भटकने से और गलत रास्ते पर चलने से बचाता है, और आपके अच्छे कर्म को करते रहने के लिए प्रेरित करता है। सनातन धर्म का अर्थ है शाश्वत। इसका मतलब यह है कि यह परम सत्य है और जो कुछ भी कहता है वही सही है। यह मूल रूप से आपको केवल अच्छे काम करने की ओर ले जाता है। यही सनातन धर्म की विश्व को एक उपहार है।

ओजस श्रीवास्तव

हमारे जीवन में धर्म का महत्व

मेरा नाम ओजस श्रीवास्तव है। मैं ७वीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं साउथ ब्रन्सविक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ। मेरी कक्षा अध्यापिका जूही चतुर्वेदी और चेतना जी, युवा स्वयं सेविका आदित्रि चौहान बहुत अच्छे से हिंदी सिखाते हैं। मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मुझे क्रिकेट और शतरंज खेलने, और चाय बनाने में बहुत आनंद आता है। मैं भारतीय शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत गायन, तबला और हार्मोनियम वादन सीख रहा हूँ।

हमारे जीवन में धर्म का महत्व क्या है, इस बारे में जब मैंने खोज बीन की तो बहुत से विचारों, प्रथाओं, जीवन की रोज़मर्रा की बातों पर मेरा ध्यान गया। आइए मेरे साथ आप भी इसके महत्व को पढ़ें और सराहें।

धर्म शब्द संस्कृत मूल शब्द “धृ” से आया है, जिसका अर्थ है पकड़ना, बनाए रखना, या संरक्षित करना। प्रारंभिक वेदों और अन्य प्राचीन हिंदू ग्रंथों में लिखा है कि धर्म वह ब्रह्मांडीय कानून है जिसके द्वारा शून्य से ब्रह्मांड का निर्माण हुआ। बाद में इसे मानव व्यवहार और जीवन जीने के तरीकों सहित अन्य संदर्भों में लागू किया गया, जो समाज, परिवार और प्रकृति को अराजकता में गिरने से रोकता है। इसमें कर्तव्य, अधिकार, धर्म और नैतिक रूप से उचित व्यवहार की अवधारणाएँ सम्मिलित थीं और इसलिए धर्म को धार्मिकता बनाए रखने के साधन के रूप में समझा जाने लगा।

हिंदू और योगिक आस्था का एक महत्त्वपूर्ण आधार है धर्म, जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले कानून या सिद्धांत का मूल भी कहा जा सकता है। इस सार्वभौमिक नियम कानून के अनुसार कार्य करना ही किसी व्यक्ति के लिए अपने धर्म को जीना है। हिंदू धर्म में यह अर्थ, काम और मोक्ष के चार मुख्य दार्शनिक सिद्धांतों में से एक है। इसे धार्मिकता और सत्य के नियम के रूप में भी समझा जा सकता है, जो जीवन को सार्थक बनाने वाले रीति-रिवाजों, व्यवहारों और नैतिकता को दिशा देता है।

धर्म का निहित अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के लिए और दूसरों की सेवा करने के लिए जीवन जीने का एक सही और सच्चा तरीका। धर्म कर्तव्य, निस्वार्थ सेवा, और सेवा की अवधारणाओं से निकटता से जुड़ा हुआ है और इसलिए यह योग का एक मूलभूत सिद्धांत भी है। यद्यपि इसे समझना थोड़ा चुनौतीपूर्ण है क्योंकि इस एक शब्द “धर्म” का कोई सीधा अंग्रेजी अनुवाद नहीं है, एक तरह से इसे “जीने का सही तरीका” कहा जा सकता है।

व्यक्तिगत स्तर पर धर्म को एक व्यक्ति विशेष का मिशन या उद्देश्य के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। परंपरागत रूप से किसी व्यक्ति का धर्म पूर्व निर्धारित माना जाता है। कर्म के आधार पर जब एक आत्मा किसी एक विशेष जाति या सामाजिक समूह में जन्म लेती है तो वह अपने पिछले जन्मों के कर्मों के पुरस्कार या दंड के अनुरूप आती है। हम सभी का जीवन पथ धर्मरूपी सार्वभौमिक कानूनों द्वारा निर्धारित किया गया है और सच्ची प्रगति का एकमात्र तरीका इस पथ के दायरे में रहना और उनके

नियत उद्देश्य की ओर काम करते रहना ही है। भगवद्गीता के अनुसार किसी दूसरे का धर्म पूरे सही ढंग से कर देने की अपेक्षा अपना धर्म करना भले ही वो आधा अधूरा ही हो, श्रेष्ठकर होता है।

ऐसा कहा जाता है कि दुनिया में व्यवस्था और सद्भाव के अस्तित्व के लिए सभी प्राणियों को अपने अपने धर्म को स्वीकार करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अपने धर्म का पालन कर रहा है तो वह अपनी सच्ची भूमिका निभा रहा है और ब्रह्मांड में अन्य सभी प्राणियों की परस्पर सेवा कर रहा है।

हिंदू संस्कृति के लिए सभी जीवों, यहाँ तक कि चर-अचर वस्तुओं का भी अपना धर्म है - जैसे कि सूर्य को चमकना चाहिए और मधुमक्खियों को शहद बनाना चाहिए। धर्म का एक और अर्थ है वेदों की शिक्षाओं और ऋचाओं में वर्णित सत्यों के अनुसार कार्य करना। इस "सही तरीके" से जीने का परिणाम आत्म-साक्षात्कार और आत्मज्ञान माना जाता है। इन सबसे ऊपर जब आपका जीवन आपके धर्म के साथ संरेखित होता है तो यह आनंद और तृप्ति की भावना लाता है। मोक्ष की प्राप्ति का द्वार शायद इसी तरह खुलता होगा।

धर्म का अर्थ सिर्फ़ पूजा पाठ नहीं है। इसका अर्थ है सार्वभौमिक नियम प्रणाली, जिसका सभी को पालन करना चाहिए। इसी से इस ब्रम्हाण्ड का संतुलन बना रह सकता है!!

हमारे जीवन में धर्म का प्रभाव

मेरा नाम अस्मी जैन है। मैं उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी यू.एस.ए. के सारे कार्यक्रम बहुत अच्छे लगते है और मुझे इन में हिस्सा लेना भी बहुत अच्छा लगता है। अगले साल मैं युवा स्वयंसेवक के रूप में ज़रूर वापिस आऊँगी।

ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से धर्म हमारे जीवन में एक विशेष महत्व रखता है। उनमें से मुख्य कारण यह है कि धर्म हमारे रोज़मर्रा के कार्यों में मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह नैतिक विश्वासों और व्यवहारों के लिए एक आधार प्रदान करता है और समान पृष्ठभूमि वाले समुदायों को एक साथ लाता है। धर्म में अक्सर ऐसी शिक्षाएँ होती हैं जो किसी व्यक्ति को यह निष्कर्ष निकालने में सहायता देती है कि क्या सही है और क्या गलत। जब लोग अपने दैनिक जीवन में निर्णय लेते हैं कि वे कैसे व्यवहार करेंगे, तो लोग यह देखना चाहते हैं कि उनका यह व्यवहार या कार्य धर्म संहिता के नियमों का पालन करता है या नहीं। यदि लोगों को निर्णय लेने में परेशानी होती है तब धर्म उन्हें दिशा देकर उन्हें सही निर्णय चुनने के लिए आधार प्रदान करता है। धर्म लोगों को एक साथ लाता है क्योंकि जब लोग एक साथ मिलकर पूजा करते है तो उन्हें एहसास होता है कि उनमें बहुत कुछ समान है। इससे लोगों को पता चलता है कि उन सभी का एक लक्ष्य है- सही और गलत को जानना और एक सुखी जीवन प्राप्त करना। इस सब से हम देख सकते हैं कि धर्म का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

एडिसन – उच्चस्तर-२

धर्म की महत्वपूर्णता

देवेशी भारद्वाज

नमस्ते मेरा नाम देवेशी भारद्वाज है। मैं आठवीं कक्षा की छात्रा हूँ और हिंदी स्कूल में उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी पढ़ना और बोलना बहुत अच्छा लगता है। मेरे परिवार में सब घर में हिंदी में ही बात करते हैं और मैं हिंदी बहुत अच्छी बोलती हूँ। मेरे हिंदी में बात करने का प्रमुख कारण ही धर्म है क्यूँकि हिंदू धर्म में बहुत सारे भगवान हैं और मुझे भगवानों की कहानियाँ सुनना बहुत पसंद है। गर्मियों में जब मेरे नाना और दादाजी यहाँ आते थे तो मुझे बहुत सी कहानियाँ सुनने को मिलती थीं और वे उनका मतलब भी समझाते थे, जिनमें भगवान गणेश जी, राम जी और भगवान हनुमान जी की बहुत सी कहानियाँ होती थीं। तभी से मुझे भी धर्म को जानने की उत्सुकता हुई।

धर्म से सभी अपने जीवन में स्थिरता और संतुलन लाते हैं, चाहें वह कोई भी धर्म हो। सभी धर्म आपस में प्यार और सम्मान करना सिखाते हैं। धर्म हमें न केवल इंसान से बल्कि प्रत्येक जीव से प्यार करना सिखाता है। हिंदू धर्म में बहुत सी मान्यताएँ और जीवन की महत्वपूर्ण बातें है जिन्हें हम अपने जीवन में अपना कर सफल हो सकते हैं। जहाँ भगवान राम की कहानी हमको जीवन में सहनशीलता और संयम सिखाती है, वहीं महाभारत से हमें ज्ञान और कर्म की बातें पता चलती हैं। जब भी मेरे पास कोई समस्या आती थी तो मैं उन धार्मिक कहानियों से ही शिक्षा लेती थी, मेरी बहुत सी परेशानियों और उनके उत्तर मैंने उन धार्मिक कहानियों में ही पाए हैं।

हमारे जीवन में धर्म का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, धर्म हमें अपने परिवार, देश और संस्कृति से जोड़ता है। मैंने अमेरिका में ही जन्म लिया है और मेरा कुछ परिवार भारत में रहता है, पर फिर भी हम धर्म के कारण ही उनसे जुड़े हुए हैं, क्यूँकि धर्म में हमें त्योहारों के बारे में भी सीखने को मिलता है। धर्म न केवल हमें अपने परिवार से जोड़ता है बल्कि हमारी प्राचीन संस्कृति को भी हमारे जीवन में लाता है।

जब भी त्योहार आते हैं, मैं और मेरी बड़ी बहन बहुत उत्सुकता से उन्हें मनाने में लग जाते हैं। धर्म में बहुत से श्लोक भी होते हैं। मेरे पिता ने मुझे गायत्री मंत्र भी सिखाया है जिसको मैं रोज़ सुबह पढ़ती हूँ। इससे मेरा दिन बहुत अच्छा जाता है। धर्म हमको हमारे भारत के बारे में भी सिखाता है।

माना कि आप किसी का भाग्य
नहीं बदल सकते
लेकिन अच्छी प्रेरणा देकर
किसी का मार्ग-दर्शन तो
कर सकते हैं
कहते हैं जीवन में कभी मौका
मिले तो सारथी बनना स्वार्थी नहीं

सनातन धर्म के विभिन्न पंथ

धृतिश्री भामीडीपाटी

नमस्ते, मेरा नाम धृतिश्री भामीडीपाटी है। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में अपनी माँ, पिता और बहन के साथ रहती हूँ। मैं जॉन पी. स्टीवंस हाई स्कूल में दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं उच्च स्तर-२ की हिंदी की कक्षा में हूँ। मैं चौथी कक्षा से वायलिन बजा रही हूँ। मुझे गाना गाने में बहुत आनंद आता है।

सनातन धर्म का अर्थ है कि शाश्वत या शुद्ध कर्तव्य पालन करने का एकमात्र मार्ग। यह मार्ग किसी भी जाति वर्ग या संप्रदाय के लिए समान मार्ग है। सनातन धर्म के मुख्य मूल्य हैं ईमानदारी, दया, धीरज, आत्म संयम और उदारता। सनातन धर्म की तुलना स्वधर्म से की जाती है। स्वधर्म का मतलब है हमे अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए।

हिन्दू धर्म में चार मुख्य संप्रदाय है, वे हैं वैष्णव, शैव, शाक्त, और स्मार्थ। वैष्णव विष्णु भगवान को परमेश्वर मानते हैं। वैष्णवों की पूर्ण वास्तविकता विष्णु के रूप में प्रकट है। विष्णु रूप का अवतरण राम, कृष्ण और विभिन्न अवतारों में हुआ है। इन अवतारों के माध्यम से विष्णु परंपरागत नैतिक धर्म का बचाव करते रहे है। शैव शिव भगवान को परमेश्वर मानते हैं। शैव धर्मशास्त्र शिव को निर्माता, संरक्षक और विध्वंसक होने से लेकर स्वयं के भीतर और हर जीवित प्राणी के समान होने को दर्शाते हैं। शैव भक्तों का विश्वास इन कुछ निम्नलिखित बातों मं होती है। शिव सूत्र समझने की जिज्ञासा, भगवान शिव के साथ एकता प्राप्त करना, भगवान शिव का प्राकृतिक रूप को जानने की सच्चाई, ईश्वर के रूप में भगवान शिव ब्राह्मण की अभिव्यक्ति हैं, और शिवलिंग का महत्व हैं। शाक्त देवी भगवान को परम शक्ति मानते हैं। शाक्त इस ब्रह्मांडीय द्वैतवाद को बताता है कि शिव सच्चाई और परम स्वरूप हैं और शक्ति प्रकृति का मूल निर्माण है। स्मार्थ परमेश्वर के विभिन्न रूपों को एक ही समान मानते हैं। स्मार्थ इस यथार्थ बात पर विश्वास रखता है कि ब्राह्मण सभी व्यक्तिगत देवताओं पर अतिक्रमण करता है। स्मार्थ परंपरा में पाँच भगवानों की पूजा समान रूप से की जाती है। ये पाँच भगवान हैं गणेश, शिव, शक्ति, विष्णु और सूर्य। आदि शंकराचार्य को सनातन धर्म का पहला धर्म सुधारक भी कहा जाता है। आदि शंकराचार्य का जन्म सन ७८८ सी.ई. में हुआ था। उनके माता-पिता शिवगुरु और सती आर्यम्बा ने भगवान शिव से प्रार्थना की और शिव इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने उनके लिए जन्म लेने का फैसला किया। आदि शंकराचार्य ने अपने जीवन काल में समाज में विभिन्न लोगों को सनातन मार्ग की शिक्षा दी थी। उन्होंने छोटी-छोटी सोच से कर्तव्य पालन करने वाले लोगों को सनातन धर्म पालन करने का मार्ग सिखाया।

सनातन धर्म का मार्ग पालन करने से मन को शांति और जीवन में सुख की प्राप्ति होती है। हमें अपने जीवन के कर्तव्य को समझकर लोगों की सहायता करना और ऐसे जीवन जीना चाहिए जो समाज के लिए लाभदायक है।

> सनातन धर्म को शाश्वत धर्म के भी नाम से जाना जाता है। योनि कि वह धर्म जो अनादि काल से इस पृथ्वी पर विद्यमान है, और जो अनंत काल तक इस पृथ्वी पर विद्यमान रहने वाला हो।

हमारे जीवन में धर्म की भूमिका

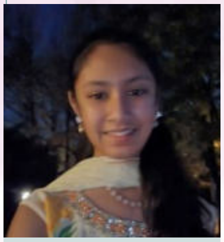
शिव्या रंजन

मेरा नाम शिव्या रंजन हैं। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पिछले आठ वर्ष से हिंदी सीख रही हूँ। मैं छः वर्ष से कत्थक और पियानो भी सीख रही हूँ। मुझे पुस्तकें पढ़ना भी बहुत अच्छा लगता है।

धर्म हमारे जीवन में एक बड़ी भूमिका निभाता है। यह हमें विश्वास करने के लिए बहुत कुछ देता है। यह कई तरह से हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव डालता है। धर्म हमारे समाज में एकता की भावना प्रदान करता है और इसके रीतिरिवाजों के माध्यम से बहुत सी समस्याओं से निपटने में हमारी सहायता कर सकता है।

धर्म के माध्यम से लोग एक समुदाय का हिस्सा बनते हैं और उन लोगों के साथ अच्छा संबंध बनाने में सक्षम होते हैं जो उनके समान विश्वास रखते हैं। इससे लोगों को पहचान और अपनेपन का अहसास होता है। जब लोग संघर्ष कर रहे होते हैं तो ये धार्मिक समुदाय उन्हें मदद करता है।

धर्म की सीख और रीतिरिवाज़ भी कई तरह से हमारी सहायता कर सकते हैं। धर्म हमारी संस्कृति को आगे ले जाने में मदद करता है। धार्मिक शिक्षाएँ हमें सही रास्ते पर रखती हैं और यह सुनिश्चित करने में हमारी मदद करती हैं कि हम सही काम कर रहे हैं। ये शिक्षाएं हमें और अधिक दयालु और करुणाशील बनाती हैं। प्रार्थना जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से भी हम अपनी समस्याओं का सामना कर सकते हैं। होली, दिवाली जैसे त्योहार मनाने से मेलजोल बढ़ता है और लोगों को बहुत खुशियाँ मिलती हैं।

धर्म के बिना लोगों के पास कोई नैतिक मार्गदर्शन या मदद के लिए कुछ भी नहीं होगा। हमारे जीवन में धर्म होने से हमें आवश्यकता पड़ने पर मदद के लिए कुछ देखने की अनुमति मिलती है और यह एक सहायता प्रणाली प्रदान करता है। इसलिए धर्म हमारे जीवन को कई तरह से प्रभावित करता है और हमारे स्वास्थ्य और कल्याण के लिए भी बहुत फायदेमंद है।

आस्था से आशा

विजेता गर्ग

मैं आठवीं की छात्रा हूँ। मुझे किताबें पढ़ना, गानों को सुनना, और टेनिस खेलना पसंद है।

भगवद् गीता में अर्जुन श्री कृष्ण से कहते हैं: "मैं आपके शिष्य के रूप में अपने आप को समर्पित करता हूँ। कृपया मुझे बताएँ कि मै क्या करूँ।" तब श्री कृष्ण अर्जुन को केवल एक ही बात याद दिलाते है: अपना कर्तव्य करो और विश्वास रखो। हम बार-बार मंदिर या कोई अन्य पूजा स्थल पर अपनी परेशानियाँ लेकर जाते हैं। लोग कई अलग-अलग भगवान की पूजा करते हैं और कई अलग-अलग धर्मों का पालन करते हैं। लेकिन हर धर्म में एक बात समान है। हर धर्म आस्था सिखाता है। यह आस्था हमें हर समस्या का सामना करने की शक्ति देती है। हमें कई चीजों में विश्वास रखना चाहिये: अपने आप में, दूसरों में, और कोई बड़ी शक्ति में। यह बड़ी शक्ति हमें यह विश्वास दिलाती है कि हमारा जीवन सुरक्षित हाथों में है, चाहे कितना भी कठिन समय क्यों न हो। इस तरह धर्म दुनिया को जीवित रखने में मदद करता है। यह इस ग्रह पर हर व्यक्ति को विश्वास की शक्ति देता है। धर्म हर किसी को बेहतर कल की आशा दिलाता है।

हमारे जीवन में धर्म का महत्व

तुहिनांशु जेना

हमारा धर्म हिन्दू धर्म है और यह दुनिया का सबसे पुराना धर्म है। हमारा धर्म बाकि सभी धर्मों का सम्मान करता है और यह सिखाता है कि हम सब एक साथ रह सकते हैं। हिन्दू धर्म में बहुत पुराने ग्रन्थ है जो जीवन के सारे विषय में ज्ञान देते हैं। गीता ऐसा ही एक ग्रन्थ है जिसमें बहुत अच्छी अच्छी बातें लिखी गयी हैं। हमारा धर्म सभी मनुष्यों को समान मानता है। हमारा धर्म सब पशु और पक्षियों को भी समान रूप से देखता है। हिन्दू धर्म में गाय को पूजनीय माना जाता है क्योंकि गाय हमें बहुत कुछ देती है। हिन्दू धर्म योग के बारे में सिखाता है। योग से हमारा मन तेज और शरीर स्वस्थ रहता है। अब पूरी दुनिया योग दिवस मनाती है।

धर्म का महत्व हम मनुष्य को प्रकृति और जीवन के तौर तरीके में अनुशासन को पालन करना और एक दूसरे का सम्मान करना सिखाना है। एक प्रमुख बात जिसका सभी धर्म सामान्य रूप से पालन करते हैं वह है एक दूसरे का सम्मान करना और एक दूसरे का अपने-अपने धर्म के ऊपर विश्वास रखना।

एक धर्म जो बाकी सब धर्म से ज्यादा सहन करता है वह है हिन्दू धर्म। हिन्दू धर्म की कई मान्यताएँ हैं और यह जीवन में कई चीजों का समाधान करता है; इसका मानना है कि इंसान से लेकर हर जीवित प्राणी में आत्मा होती है जैसे हाथी से लेकर चींटी तक हर आत्मा की इस धरती पर आने और जाने का एक निर्धारित समय होता है।

हिन्दुओं का मानना है कि जो भी मानव जीवन के अस्तित्व के लिए उपयोगी है जैसेकि ज्ञान, पानी और भोजन जोकि भगवान द्वारा बनाया गया है, उनका सम्मान किया जाना चाहिए।

आज हिन्दू धर्म ने १.२ अरब लोगों को प्रभावित किया है। इससे पता चलता है कि हिन्दू धर्म एक व्यापक रूप से फैला हुआ धर्म है। इस धर्म ने हमें ईमानदार, अनुशासित, बड़ों के प्रति सम्मान करना, छोटे बच्चों से प्यार करना सिखाता है। आज पूरे विश्व में हमारे भारत देश को हिन्दू धर्म का प्रतीक मानते हैं। हिन्दुओं का यह भी मानना है कि हमारे जन्म के पहले से ही हमारे भाग्य का फैसला हो जाता है। भगवान हमारे जन्म के क्षण से ही पूरे जीवन की योजना बना चुके होते हैं जो कि हमारे पिछले जन्म से जुड़ी हुई होती है। यह सब भगवान द्वारा बताई गयी नियति के कारण है।

● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

नमस्ते, मेरा नाम **पीयूष अग्रवाल** है और मैं १४ वर्ष का हूँ। मैं उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ।

सनातन का अर्थ है जो सदा से है। विश्व में सिर्फ एक ही इकलौता धर्म सनातन हिंदू धर्म है। इसके अतिरिक्त ईसाई, बोद्ध, जैन, सिक्ख, इसलाम, यहूदी, पारसी, आदि सभी पंथ हैं।

धर्म का सही अर्थ है जो धारण किया जा सके। जीवन के कई प्रश्नों का उत्तर हमें धर्म से मिलता है। हमारे जीवन को कैसे गुज़ारना है यह सब धर्म पर ही निर्भर है। धर्म हमें सही-ग़लत के बारे में बताता है। हमें इतिहास के बारे में बताता है। धर्म हम सभी को एक साथ चलने का मार्ग दिखाता है जिससे हमें ज्ञान प्राप्त होता है। धर्म ही मानव को मुक्ति देता है।

सनातन धर्म के विभिन्न पंथ

आशी शर्मा

नमस्ते, मेरा नाम आशी शर्मा है। मैं १३ वर्ष की हूँ और मैं वुड्रो विल्सन मिडल स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. की एडिसन शाखा में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे भरतनाट्यम् करना, स्काउट्स करना, व किताबें पढ़ना अति पसंद है। मुझे अपने परिवार और अपने मित्रों के साथ बातें करने और समय बिताने में बहुत आनन्द आता है।

"सनातन" शब्द का अर्थ "वह जिसका न आदि है न अंत" है। हमारे सनातन धर्म का कोई आरम्भ नहीं है। वह शाश्वत, अनन्त, और अपराजेय है। सनातन धर्म पूरे विश्व का सबसे पुरातन, समृद्ध, और प्राचीन धर्म है। समय के साथ सनातन धर्म से अन्य तीन पंथो का निर्माण हुआ। वे तीनों पंथों के नाम हैं जैन धर्म, बौद्ध धर्म व सिख पंथ।

सनातन धर्म का सबसे पुराना निकला पंथ **जैन धर्म** है। जैन धर्म का नाम "जिन" शब्द से आया है, जिसका अर्थ "विजेता" है। अहिंसा, शांति, आत्मसंयम और कैवल्य इस पवित्र पंथ के मुख्य मूल्य हैं। ५वीं और ७वीं शताब्दी के बीच उनके पहले तीर्थंकर (आध्यात्मिक गुरु), ऋषभदेव ने इस धर्म की स्थापना की थी। जैन धर्म के पांच मुख्य महाव्रत अहिंसा (किसी प्राणी को चोट न पहुंचना), सत्य (ईमानदरी से रहना), अस्तेय (चोरी न करना), अपरिग्रह (संचय न करना) और ब्रहमचर्य (इंद्रियों पर पूर्ण संयम रखना) हैं।

बौद्ध धर्म सनातन धर्म का एक और विभिन्न पंथ है, जिसकी स्थापना छठी शताब्दी में सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) ने की थी। बौद्ध लोग आर्य आष्टांगिक मार्ग में विश्वास करते हैं:

१. सम्यक दृष्टि: सत्य में विश्वास करना
२. सम्यक संकल्प: मानसिक और नैतिक विकास करना
३. सम्यक वाक: हानिकारक बातें और झूठ न बोलना
४. सम्यक कर्म: हानिकारक कर्म न करना
५. सम्यक जीविका: कोई भी हानिकारक व्यापार न करना
६. सम्यक व्यायाम: अपने आप सुधरने की कोशिश करना
७. सम्यक स्मृति: मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना
८. सम्यक समाधि: निर्वाण पाना

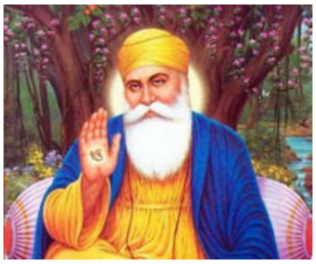

पंद्रहवीं शताब्दी में गुरू नानकजी ने **सिख धर्म** स्थापित किया था। यह सनातन धर्म का सबसे नया निकला पंथ है, केवल ५०० वर्ष पुराना! "सिख" शब्द का अर्थ "शिष्य" होता है। इस पंथ के मुख्य सिद्धांत हैं नैतिक जीवन जीना, निस्वार्थ सेवा करना, और ध्यान करना। सिख मानते हैं कि मुक्ति प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति को दया, सत्य, संतोष, विनम्रता, और प्यार के गुण अपने अंदर बढ़ाने चाहिए, और अहंकार, क्रोध, काम, लोभ, व मोह से दूर रहना चाहिए। सिख ये ५ चीजें पहनते हैं:

१. केश (भगवान की प्राकृतिक कृतियों के सम्मान प्रति कभी भी बाल न काटना)
२. कंघा (स्वच्छता का प्रतीक)
३. कृपाण (दूसरों की रक्षा करने के कर्तव्य का प्रतीक)
४. कछेरा (कछेरा आत्म नियंत्रण का प्रतीक है)
५. कड़ा (कड़ा आपका भगवान के साथ अपराजेय बंधन का प्रतीक है)

सनातन धर्म में और अन्य विभिन्नताएं भी हैं, जैसे

साकार और निराकार ईश्वर, शैव और वैष्णव संप्रदाय, द्वैतवाद और अद्वैतवाद। ऐसे और अनेक विभिन्न पंथ और संप्रदाय हैं, किन्तु उनके सभी अनुयायी सह-अस्तित्व में रहते हैं। जो भी इनमे से कोई से भी संप्रदाय को मानना चाहता है मान सकता है, और वह फिर भी सनातनी कहलाएगा। यह हमारे अनमोल धर्म की सुंदरता है कि हम सभी को अपने पथ पर चलने की स्वतंत्रता है।

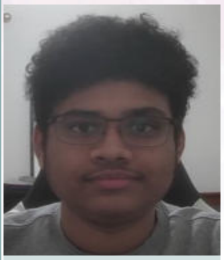

अवनीश गिरि

नमस्कार, मेरा नाम अवनीश गिरि है। मैं दसवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं हिन्दी की कक्षा उच्चस्तर-२ में हूँ। मुझे पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता है।

सनातन धर्म एक भारतीय धर्म है। इसके एक अरब से ज्यादा अनुयायी हैं। वैज्ञानिक इसे हज़ारों वर्ष पुराना मानते हैं। चार मुख्य पंथ वैष्णववाद, शैववाद, शक्तिवाद, और स्मार्त हैं। सनातन धर्म का ग्रंथ वेद हैं। सनातन धर्म में अनेक प्रार्थनाएँ और उत्सव हैं। सनातन धर्म का एक पंथ वैष्णव संप्रदाय है। इस पंथ में भगवान विष्णु हर भगवान के ऊपर हैं। वैष्णव सम्प्रदाय सनातन धर्म का सबसे बड़ा पंथ है। यह पंथ तब शुरू जब विभिन्न पंथियों ने कहा कि उनके भगवान महाविष्णु के अवतार थे। दूसरा सनातन धर्मी पंथ शैव सम्प्रदाय है। इस पंथ के भगवान महाशिव है। यह तपस्वी जीवन और योग पर जोर देता है। यह पंथ दक्षिण भारत में शुरू हुआ। समय के साथ यह ब्राह्मणवाद के साथ एक हो गया। तीसरा सनातन धर्मी पंथ शाक्त होता है। इस पंथ में एक महादेवी हैं। ये देवी दुर्गा, पार्वती या काली हो सकती हैं। शाक्त में दस देवियों का एक महाविद्या भी है। अंत में स्मार्त पंथ है। इस पंथ में कोई भी महाभगवान नहीं है। स्मार्त में गणेश, शिव, शक्ति, विष्णु और सूर्य भगवान सबका महत्व समान है। सनातन धर्म के अनेक अलग-अलग पंथ हैं लेकिन एक ही धर्म के अंग हैं। सब अलग-अलग संप्रदाय भी सहमत हो कर एक साथ चलते है। सभी पंथ और सम्प्रदाय मिलकर सनातन धर्म बनते हैं।

सनातन धर्म में मुझे क्या अच्छा लगता है

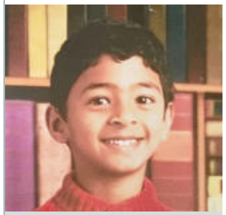

वेद देव

मेरा नाम वेद देव है। मैं सातवीं कक्षा में हूँ और मध्यमा-३ कक्षा का छात्र हूँ। मुझे खेल खेलना बहुत पसंद है।

मुझे हिंदू धर्म के बारे में बहुत सी बातें पसंद हैं। मुझे ऐसे त्योहार पसंद हैं जो हिंदू धर्म का हिस्सा हैं। मुझे होली का त्योहार पसंद है जो रंगों का उत्सव है और वसंत ऋतु की शुरुआत है। मुझे दिवाली का त्योहार बहुत पसंद है जो बुराई पर अच्छाई की जीत का उत्सव मनाने के लिए है। मुझे रक्षाबंधन मनाना पसंद है जो भाई और बहन के बीच के रिश्ते का त्योहार है। हिंदू धर्म में कई त्योहार हैं जो परिवार, प्रकृति और जीवन को प्यार और सम्मान देते हैं। मुझे हिन्दू धर्म का खाना भी बहुत पसंद है। मुझे पनीर और छोले जैसे कई तरह के भारतीय खाने पसंद हैं। मुझे शिव, राम, भीम और कई अन्य देवताओं की कहानियाँ पसंद हैं। कहानियाँ वास्तव में दिलचस्प हैं और उनमें अच्छे मूल्य हैं। हिंदू धर्म अन्य धर्मों का सम्मान करना, ईमानदार और उदार होना जैसे अच्छे मूल्यों के बारे में सिखाता है। यह हमें धैर्य रखना और अपने लक्ष्य के प्रति कड़ी मेहनत करना भी सिखाता है। हिंदू संस्कृति के बारे में पसंद करने के लिए कई चीजें हैं और यह हमें जीवनोपयोगी बहुत सी चीजें सिखाता है।

हमारे जीवन में धर्म का महत्व

रितिका मौर्या

रितिका मौर्या एडिसन हिंदी स्कूल में उच्चस्तर-२ की छात्रा हैं। उनकी कविता धर्म के महत्व का वर्णन करती है, और इसकी अनुपस्थिति लोगों की पहचान और खुद को कैसे प्रभावित करती है।

धर्म एक ईश्वर में विश्वास है,
एक विचार में विश्वास, एक प्रथा में,
भक्ति जहां से हम पैदा हुए हैं,
इसी को हम धर्म कहते हैं।

हमारे जीवन में धर्म के बिना जीने का कोई अर्थ नहीं होगा,
कोई सहारा या प्रेरणा नहीं,
प्रतीक जो हिंदू, जैन, सिख, ईसाई का वर्णन करते हैं,
बिना मूल्य के एक अर्थ के अलावा और कुछ नहीं होगा।

भारत में हम एक राष्ट्र के रूप में गर्व के साथ खड़े होते हैं,
अनगिनत भाषाओं या विश्वासों की विविधता के प्रतिकूल,
सत्तर से अधिक वर्षों के बाद अपनी आज़ादी लेना,
भारत अपने हाथ खुले रखकर सभी प्रकार के धर्म को स्वागत करता है।

धर्म जीवन के सभी संघर्षों की जननी है,
यह जीवन में सभी के भाग्य के लिए समान है,
ये विश्वास ऐसी ताकतें हैं जो हमें अलग करने के बजाय एक साथ लाती हैं,
यही धर्म देने में सक्षम है।

ईश्वर और सृष्टि, दोष और विनाश जैसे विचार,
आराम और मार्गदर्शन, धर्म जीवन को दिशा देता है,
इन विचारों पर गर्व करें, चाहे आपका धर्म कोई भी हो या आपके जीने का तरीका कोई भी हो,
इसी को हम धर्म कहते हैं।

नंदिका शर्मा

मेरा नाम नंदिका शर्मा है। मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में रहती हूँ। मैं पीछे सात वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. में अपनी मातृ भाषा सीख रही हूँ।

मैं हिन्दू, मैं मुसलमान, मैं सिख, मैं ईसाई, मैं जैन। आज दुनिया धर्म में बँटी हुई है। आखिर धर्म क्या है। धर्म वह साधन है जो मनुष्य को मोक्ष और ईश्वर की ओर ले जाता है। धर्म का अर्थ केवल कर्म-कांड, पूजा पाठ, या विधि-विधान नहीं है। धर्म हमें अपना कर्तव्य, राष्ट्र, परिवार और समाज के हित को समझने और अपने कर्मों को सही दिशा में ले जाने का मार्ग दिखाता है।

हर धर्म में धर्म गुरुओं द्वारा रचित प्राचीन ग्रंथ होते हैं जो उस धर्म का सही रूप से पालन करने का मार्ग दिखाते हैं। हिंदू धर्म में वेद एवं पुराण, इस्लाम में कुरान, ईसाई धर्म में बाइबिल और सिख में गुरु ग्रंथ साहिब इन ग्रन्थों के आधार हैं। ये प्राचीन ग्रंथ ईश्वर का वर्णन करते हैं और ईश्वर द्वारा दिए गए निर्देश सिखाते हैं जिनका पालन कर मनुष्य अपने जीवन का सही दिशा में निर्वाह कर सकते हैं। कुछ धर्मों में प्राचीन महाकाव्य और पाठ भी होते हैं जो ईश्वर और उनके इस धरती पर लिए गए अवतारों का वर्णन करते हैं। हिन्दू धर्म में राम चरित मानस एवं भगवद् गीता इन महाकाव्यों के उदाहरण हैं।

दुनिया का हर धर्म सदाचार और सामाजिक कल्याण का मार्ग दिखाता है। किंतु आज हर धर्म में कट्टर पंथी विचारों ने घर कर लिया है। क्योंकि धर्म को आज कई लोग एक व्यापार के रूप में देखते हैं। इसलिए कुछ लोग धर्म के मूल महत्व और शिक्षा की जगह उसे कट्टर और उग्र रूप में दर्शाने का काम कर रहे हैं। किंतु धर्म का वास्तविक महत्व समाज और व्यक्ति में सहिष्णुता, सद्भावना, और नियंत्रण लाना है। एक सच्चे मित्र की तरह धर्म हमें आस्था, निष्ठा, और मोक्ष का मार्ग दिखाता है और हमारी सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने का मार्ग है।

धर्म हमें सहनशीलता, जीवन से प्रेम, अच्छा आचरण, उदारता, एवं दया सिखाता है। समाज में रहकर समाज और देश एवं समस्त मनुष्य जाति के उद्घार के लिए अपना जीवन व्यतीत करना हमें धर्म ही सिखाता है। धर्म हमारे जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

मुझे सनातन धर्म में क्या अच्छा लगता है

अनिष्का जिंदल

अनिष्का जिंदल

मेरा नाम अनिष्का जिंदल है, मैं छठी कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे नृत्य करना और संगीत बहुत पसंद हैं। मुझे अपने खाली समय में तैरना, स्केचिंग करना और बास्केटबॉल खेलना अच्छा लगता है। अपना लेख लिखने से पहले मैं अपने माता-पिता को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे न्यू जर्सी के 'हवन' समूह से परिचित कराया। इस समूह की शिक्षा ने न केवल मुझे अपनी संस्कृति के बारे में और जानने के लिए प्रेरित किया, बल्कि मैं कौन हूं, हमारी जड़ें और मूल, मेरा धर्म, इसके बारे में और जानने के लिए भी प्रोत्साहित किया। यही कारण है कि मैंने इस विषय पर लेख लिखना चुना, और मैं इस लेख का श्रेय अपने मार्गदर्शक, मेरे गुरु श्री हर्ष मेंदिरत्ता (हर्ष अंकल) को देना चाहूँगी, जो इस 'हवन' समूह को चलाते हैं, जिन्होंने न केवल मेरे शोध में मदद की, बल्कि इस लेख को लिखने पर मुझे प्रोत्साहित भी किया ताकि मैं अपने साथी मित्रों और उनके परिवारों में सनातन धर्म के बारे में जागरूकता ला सकूँ।

'सनातन' शब्द संस्कृत भाषा से है जिसका अर्थ है अविनाशी और धर्म का अर्थ है नियम। यह सबसे पुराने धर्मों में से एक है, जिसका स्रोत वेद है। तो सनातन धर्म का अर्थ है कि हमें यह जीवन कैसे जीना चाहिए। इस कथन से मुझे इसके बारे में और जानकारी प्राप्त करने के लिए जागृति पैदा हुई। विभिन्न उपलब्ध लेखों के माध्यम से और सभी आध्यात्मिक लोगों से बात करने के बाद मुझे सनातन धर्म के बारे में कुछ रोचक तथ्य मिले, और धर्म की शिक्षाओं में और दिलचप्सी हो गई। इस लेख के माध्यम से मैं सनातन धर्म के मूल सिद्धांतों पर प्रकाश डालना चाहती हूँ और साथ ही सबसे पुराने धर्म के बारे में मुझे क्या पसंद है यह बताना चाहती हूँ।

'सनातन' शब्द का अर्थ है शाश्वत, प्राचीन और हमेशा चलने वाले शब्द हमारी सोच, मान्यताओं और प्रथाओं की प्राचीनता और अपरिवर्तनीय प्रकृति को दर्शाता है। ये मान्यताएँ समय के साथ भी परिवर्तन के अधीन नहीं हैं। "सनातन" धर्म प्राचीन काल से चला आ रहा है सदा चलता रहेगा। सनातन धर्म ५ सिद्धांतों, ५ अनुशासन और ५ नियमों पर आधारित है।

सिद्धांत	अनुशासन	नियम
भगवान मौजूद है	सत्य	स्वच्छता
सभी मनुष्य दिव्य हैं	अहिंसा	संतोष
अस्तित्व की एकता	ब्रह्मचर्य	स्वाध्याय
धार्मिक सद्भाव	अस्तेय	तपस
३ जी का ज्ञान (गंगा, गीता, गायत्री)	अपरिग्रह	ईश्वर प्रधान

हालांकि सनातन धर्म में असंख्य ऐसे गुण हैं जो किसी को भी इसकी ओर आकर्षित कर सकते हैं, यहाँ मैं कुछ को प्रस्तुत कर रही हूँ:
पहला और सबसे महत्वपूर्ण गुण है एकजुटता (सभी को साथ लेकर चलना)। सनातन धर्म विश्वासों और प्रथाओं की विविधता में, एकता में विश्वास करता है। एक छोटा सा वाक्य "वसुधैव कुटुम्बकम" इसका सार

दर्शाता है। इसका अर्थ है "पूरा संसार एक परिवार है"। यह सोच सनातन धर्म का एक केंद्र बिंदु है। यह मुझे सिखाती है कि हम सभी प्राणी, अपनी जाति, धर्म या राष्ट्रीयता के अलग होते हुए भी एक बड़े समुदाय का एक हिस्सा हैं। हम सब एक तरह से आपस में जुड़े हुए हैं।

यहाँ जो चीज मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित करती है वह यह है कि सनातन धर्म में प्यार, करुणा, दया और सम्मान की बातें केवल मानव जाति तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि यह पक्षियों, जानवरों और वनस्पतियों सहित हर जीवित जानवरों के प्रति प्रेम की शिक्षा देता है। सनातन धर्म पर्यावरण और प्रकृति के संरक्षण को भी बढ़ावा देता है, क्योंकि सभी जानवर आपस में जुड़े होने के साथ साथ प्रकृति पर भी निर्भर करते हैं।

सनातन धर्म हमें परिवार और समुदाय के महत्व को भी सिखाता है। यह परिवार और समुदाय के महत्व पर जोर देता है और मानव जाति को अपने प्रियजनों की देखभाल करने और अपने समुदायों की भलाई में योगदान करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।

परिवार को समाज के एक अत्यंत जरूरी हिस्से के रूप में देखा जाता है। बच्चों को अपने माता-पिता का सम्मान करने और उनकी देखभाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जबकि माता-पिता को अपने बच्चों को प्यार, समर्थन और सलाह प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

सनातन धर्म में सांस्कृतिक विरासत एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सनातन धर्म ने कला, संगीत, नृत्य सहित भारतीय संस्कृति के कई पहलुओं को प्रभावित किया है। सनातन धर्म की समृद्ध और विभिन्न सांस्कृतिक कलाएँ हम सब के लिए गर्व और प्रेरणा का स्रोत है।

जहाँ संस्कृति बाहरी सुंदरता दर्शाती है तो आध्यात्म अंदरूनी। सनातन धर्म अंदरूनी सुंदरता बढ़ाने के लिए ज्ञान और आध्यात्मिक विकास की खोज पर जोर देता है। सनातन धर्म हमें आंतरिक शांति, प्रेम, करुणा और सद्भाव पैदा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सनातन धर्म की नींव नैतिकता और मानवता के मूल्यों पर आधारित है। यह हमें धर्म के सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह हमें एक नैतिक ढाँचा देता है जो हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है। कुछ बातें जो मुझे बहुत अच्छी लगती हैं: चोरी न करना, किसी को दर्द न पहुँचाना, कर्मफल का सिद्धांत, अपने शरीर को बलशाली बनाना (योग और प्राणायाम द्वारा), निरंतर आत्मनिरीक्षण करना, किसी को दोष देने से पहले अपनी गलतियों को देखना, सही तरीकों से पैसा कमाना, सही और सच्चे प्रयासों के द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त करना, परिवार और समाज में खुशियाँ बाँटना, और अंत में मोक्ष को प्राप्त करना।

मैं जितना इस धर्म के बारे में पढ़ती और समझती हूँ उतना ही मेरा सर गर्व से ऊँचा हो जाता है और हृदय विनम्रता से भर जाता है! मुझे अपने सनातनी होने पर अत्यंत गर्व है!

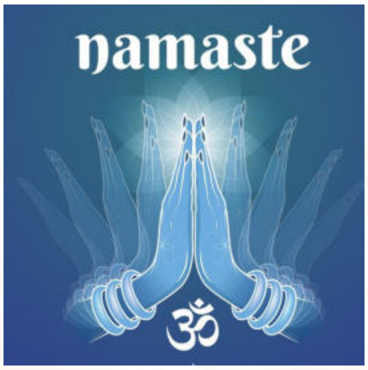

सनातन धर्म की विश्व को देन

सरगम गोडबोले

मेरा नाम सरगम गोडबोले है। मैं सातवीं कक्षा की विद्यार्थी हूँ। मुझे हिंदी के अलावा गणित और फ्रेंच विषय बहुत प्रिय हैं। साथ में मैं हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का भी अभ्यास कर रही हूँ। खेल में मैं 'मल्लखांब' नामक भारत की मिट्टी में जन्मा खेल भी तीन वर्षो से सीख रही हूँ, जो तंदुरुस्ती कायम रखने में मेरी बहुत सहायता करता है। इसके साथ खाली समय में मेरे दोस्तों के साथ खेलना, मेरी दीदी और मेरे ममेरे भाई बहन के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है। आशा है आपको मेरा 'सनातन धर्म' पर लिखा निबंध पसंद आएगा।

भारत खंड बहुत भाग्यशाली हैं जिसे सनातन धर्म की देन मिली है और भारतीय बहुत ही भाग्यशाली है जिन्हें सनातन धर्म के मार्ग पर चलने का एक बहुत सुनहरा अवसर मिला है। सनातन धर्म ने बहुत सारी प्रकृतियाँ खुले उपहार की तरह बांटी है। आइये जानते हे कुछ ऐसी विभिन्न बातें जो भारत में ही नहीं, सारे विश्व ने अपनायी हैं ।

१. योग

योग एक ऐसी विद्या है जो प्राचीन धर्मों के जन्मों से भी पहले से अस्तित्व में है। योग विद्या में शिवजी को आदि योगी तथा आदि गुरु माना जाता है।

आधुनिक काल में पतंजलि ने सुव्यवस्थित रूप में इसका विस्तार करके दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है। योग की शुरुआत भारत में हुई थी और सबसे प्राचीन साहित्य 'वेद' में इसका वर्णन सर्वप्रथम पाया जाता है। १८९३ में जब स्वामी विवेकानन्द जी शिकागो आये थे, तब उन्होंने अपने ऐतिहासिक भाषण में योग का उल्लेख करके सारे विश्व को योग से परिचित कराया था। इसके पश्चात कई योगियों ने पश्चिमी दुनिया को अपने योग के कौशल्या से प्रभावित किया हैं। ११ दिसंबर २०१४ को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में २१ जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। योग मानव, स्वास्थ्य, व कल्याण के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हम बच्चों को योग के अनेक आसान और कठिन आसनों का अभ्यास करके हमें अपने जीवन शैली में समावेश करना अति आवश्यक है।

२. आयुर्वेद

लाखों वर्ष पुराने वेद, ऋग्वेद, अथर्ववेद, इत्यादि ग्रंथों में आयुर्वेद ने अपनी प्राचीनता सिद्ध की है। आचार्य अश्विनीकुमार आयुर्वेद के आदि आचार्य माने जाते है। भगवान विष्णु के अवतार श्री धन्वन्तरि जिनका अवतरण समुद्र मंथन के समय हुआ था, सनातन मान्यता के अनुसार वे आयुर्वेदिक के प्रवर्तक रहे हैं। 'चरक संहिता' एक ऐसा विशाल

ग्रन्थ हे जिसमें आयुर्वेद चिकित्सा शास्त्रों के विविध अंगो का वर्णन किया है। स्वतंत्रता के बाद कई दशकों तक आयुर्वेद की उपेक्षा होती रही। धीरे धीरे आयुर्वेद

को आधुनिक चिकित्सा पद्धति की मान्यता प्राप्त हुयी। आज भरत में ही नहीं, परन्तु बहुत सारे देशों में सनातन धर्म की देन को सारे चिकित्सक अभ्यास कर रहे हैं। हम बच्चों को इस महत्वपूर्ण मानव स्वास्थ्य की उपचार पद्धति को सीखना बहुत ज़रूरी है, जिससे हम आगे चल कर आयुर्वेद चिकित्सक बनने की चाह रख सकते हैं और आयुर्वेद को दुनिया में प्रचार कर लोगों की सहायता कर सकते है।

३. शल्य शास्त्र

महान चिकित्साशास्त्री सुश्रुत ने १००० ईसा पूर्व अपने समय के स्वास्थ्य वैज्ञानिकों के साथ प्रसव, मोतियाबिंदू, कृत्रिम अंग लागाना, हड्डी जोड़ना, अन्य इलाज और प्लास्टिक सर्जरी जैसी कई तरह की जटिल शल्य चिकित्सा के सिद्धांत प्रतिपादित किए थे। महर्षि सुश्रुत द्वारा लिखित 'सुश्रुत संहिता' ग्रंथ में

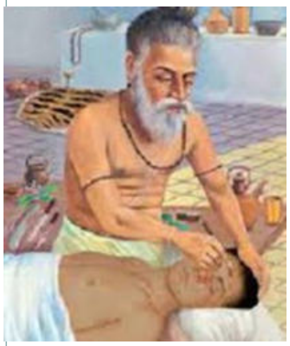

शल्य चिकित्सा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इस ग्रंथ में चाकू, सुइयां, चिमटे इत्यादि सहित १२५ से भी अधिक शल्य चिकित्सा हेतु आवश्यक उपकरणों के नाम मिलते हैं और इस ग्रंथ में लगभग ३०० प्रकार की सर्जरियों का उल्लेख मिलता है।

४. खगोल विज्ञान

वेदों को सबसे प्राचीन लिखित दस्तावेजों में माना जाता है। ऋग्वेद ने खगोल विज्ञान से सम्बंधित ३० श्लोक यजुर्वेद में ४४ अथर्ववेद में १६२ श्लोक है। सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र सौर मंडल के ग्रहों और ग्रहण के विषय में वेदों में बहुत सारी जानकारी है। जोतिष्य अंग में संपूर्ण ब्रंम्हाड़ की गति और स्थिरता की व्याख्या

बताई गयी हैं। पाँचवीं सदी में पृथ्वी अपनी धुरी पर रहते हुए सूर्य की परिक्रमा करती है, और इसे पूरा करने में ३६५ दिन का समय लगता है इसकी खोज भी भारत के प्रति हुई थी।

५. शून्य

६२८ ईस्वी सन में ब्रह्मगुप्त नामक विद्वान और गणितज्ञ थे, जिन्होंने सर्वप्रथम शून्य और उसके

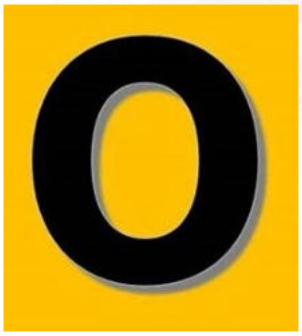

सिद्धांतों को विकसित किया। सर्व प्रथम उन्होंने जोड़ (addition) और घटाव (subtraction) के लिए शून्य के प्रयोग के नियम लिखे। इनके बाद महान गणितज्ञ और खगोलविद आर्यभट्ट ने दशमलव (decimal) में शून्य का इस्तेमाल करना शुरू किया। शून्य का अर्थ 'कुछ भी नहीं' या 'कुछ नहीं' है। शून्य का उपयोग हम जटिल समीकरण और गणनाओ में करते हैं। इसके साथ 'शून्य' कंप्यूटर का मूल आधार भी है। शून्य के आविष्कार के बाद हमें ऐसा पता चला की आकाश और अंतरिक्ष जैसे शब्द 'कुछ भी नहीं' अर्थात शून्य का प्रतिनिधित्व करते है। हम विद्यार्थियों को बहुत गर्व होना चाहिए की भारत ने शून्य का आविष्कार कर विश्व भर के गणितज्ञ को एक बहुमूल्य उपहार दिया है।

मैं हिंदी यू.एस.ए. को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने हम विद्यार्थियों को सनातम धर्म के बारे में पढ़ने और सीखने का अवसर प्रदान किया। अंतर्जाल की विविध वेबसाइट पर उपलब्ध साहित्य का संग्रह कर इस लेख को मैं लिख पायी। मैं अपनी माताजी को भी धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होंने मुझे इस विषय को समझाने के लिए मेरी मदद की और मेरे व्याकरण में सुधार किया। इस परियोजना से मुझे बहुत सारे नए शब्द और वाक्य रचनाओं का भी बोध हुआ।

धन्यवाद, सरगम गोडबोले

चैरी हिल हिन्दी पाठशाला, उच्चस्तर-२

हमारे जीवन में सनातन धर्म का महत्व

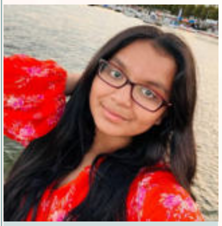
अन्वी सिंह

अरनव सिंह

हमारा नाम अन्वी और अरनव सिंह है। हम चैरी हिल हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ते हैं। अन्वी सिंह वूरहीस मिडल स्कूल में आठवीं कक्षा की छात्रा हैं और अरनव सिंह ईस्टर्न रीजनल हाईस्कूल में बारहवीं कक्षा के छात्र हैं। हम दोनों बहन -भाई हैं और हम बहुत मेहनती और होशियार हैं। हमने हिन्दी यू.एस.ए. पाठशाला से बहुत कुछ सीखा और हमें ख़ुशी है कि हम कई वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. में बिता सके। आज हम आपको यह बताएँगे कि हमारे जीवन में सनातन धर्म का क्या महत्व है।

अगर आपको सनातन धर्म के बारे में नहीं पता है तो फिर आपको उसका महत्व कैसे समझ में आएगा, इसलिए हम आपको सबसे पहले यह बताएँगे कि सनातन धर्म क्या है। “सत्यम शिवम सुंदरम”, इस छोटे से मंत्र में ही सनातन धर्म का अर्थ छुपा है। सनातन का अर्थ है जो शाश्वत हो, या फिर जो सदा के लिए सत्य हो। जिन बातों का शाश्वत महत्व हो वही सनातन कही गई हैं, क्योंकि सत्य सनातन है। ईश्वर ही सत्य है, आत्मा ही सत्य है, मोक्ष ही सत्य है और इस सत्य के मार्ग को बताने वाला धर्म, सनातन धर्म भी सत्य है। वह सत्य जो बहुत समय से चला आ रहा है, जिसका कभी भी अंत नहीं हो सकता, वह ही सनातन है। जिसका न कोई प्रारंभ है और न कोई अंत है, उस सत्य को ही सनातन कहते हैं। यह ही सनतान धर्म का सत्य है। सनातन धर्म के मूल तत्व सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, दान, जप, तप, यम-नियम, आदि हैं जिनका शाश्वत महत्व है। सनातन धर्म और उसके सिद्धांत सबसे पुराने हैं जो अन्य प्रमुख धर्मों के होने से पूर्व वेदों में प्रतिपादित हो गये थे।

अब जब आपको सनातन धर्म के बारे में पता चल गया है तो अब हम दूसरे विषय पर आपको बताएँगे। अब हमारा विषय है कि सनातन धर्म का हमारे जीवन में क्या महत्व है। सनातन धर्म हमें अच्छा जीवन जीने की कला सिखाता है। वह हमें बताता है कि हमारा अपने से और दूसरों के साथ कैसा व्यवहार और आचरण होना चाहिये। धर्म हमें यह भी सिखाता है कि हम अपने आसपास के वातावरण और प्रवृत्ति के साथ कैसे सामंजस्य बनाये रखें। सनातन धर्म हमें हमारे कर्तव्यों और दैनिक नित्य कर्म कैसे हों, भी बताता है। वह हमें सही और गलत आचरण को पहचानने की समझ प्रदान करता है। धर्म हमें दैनिक जीवन में आने वाली परेशानियों का दृढ़ता से सामना करने की शक्ति और विश्वास देता है। सनातन धर्म हमें परम पिता परमेश्वर से अपना संबंध स्थापित करने का मार्ग दर्शन देता है। धर्म हमें यह भी सिखाता है कि हम ध्यान और मनन से अपने अंदर उस दिव्य परमात्मा की अनुभूति कैसे कर सकते हैं। धर्म हमें सिखाता है कि कैसे हम अपने मन में छुपी हुई असीम शक्ति को अपने बाहरी जीवन को अच्छा बनाने में उपयोग कर सकते हैं। धर्म हमें दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मविश्वासी, और श्रद्धा जैसी शक्तियाँ प्रदान करता है, जिससे हमें हर समय दिव्य शक्तियों की अनुभूती होती है। इन सबसे हमारा

नित्य जीवन सुंदर, सदाचारी, और सुख-स्मृधि से भर जाता है। सनातन धर्म हमें आजकल के व्यस्त जीवन में शांति और संतोष प्रदान करता है। धर्म से हमारा जीवन बहुत ही सुखमय और आनंद से भर जाता है। चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, हम फल की इच्छा के बिना सदैव अपने कर्म पथ पर पूरी श्रद्धा और विश्वास से अग्रसर रहते हैं, और यही है सही ढंग से जीवन जीने की कला। इसलिये सनातन धर्म हमारे जीवन में बहुत महत्व रखता है और इसके बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है।

कुणाल प्रभाकर

मैं **कुणाल प्रभाकर** आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं टेनिस खेलना, पढ़ना, और पिंग-पोंग खेलना पसंद करता हूँ।

सनातन धर्म अब तक के सबसे पुराने धर्मों में से एक है, और इससे अनेक धर्म निकले हैं। उदाहरण के लिए, जैन धर्म, सिख धर्म और बौद्ध धर्म सभी सनातन धर्म से आए हैं। सनातन धर्म में धर्म का अर्थ और कर्तव्य सिखाया जाता है। धर्म ज्ञात सत्य है, जो अपने आप में सही है, और हमेशा वस्तुनिष्ठ होता है, चयनात्मक नहीं। जो धार्मिक पथ पर बने रहने की इच्छा रखता है, वह आत्मज्ञान, या मोक्ष प्राप्त करने के लिए सही काम करता है। धार्मिक मार्ग पर चलकर हमें बहुत सारे निर्णय करने में सहायता मिलती है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर अधिक से अधिक बहुमत का लाभ होता है और अंततः हम स्वयं और अपने परिवेश की बेहतरी की ओर अग्रसर होते हैं। इस प्रकार धर्म हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें एक बेहतर और अधिक सम्मानजनक जीवन जीने में सहायता करता है, जहाँ हम सबका विकास करने के प्रयास में खुद को समर्पित करते हैं। कुल मिलाकर, धर्म हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारे विचारों को प्रभावित करता है और हमारे परिवेश को बेहतर बनाता है।

अंश जग्गी

मैं, **अंश जग्गी** आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरा प्रिय विषय गणित है और मुझे संगणक बनाने में बहुत रुचि है। खाली समय में मैं चित्रकारी करता हूँ और टेनिस भी खेलता हूँ।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

मैं बचपन से इस श्लोक से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। अधर्म का विनाश करने के लिए और धर्म की स्थापना करने के लिए भगवान मनुष्य रूप में आते हैं। मेरे लिए धर्म का अर्थ है सत्य के मार्ग पर चलना और दूसरों की मदद करना। धर्म मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है न कि एक दूसरे के विरुद्ध भड़काता है। दुनिया का सबसे बड़ा धर्म मानवता का है। अपने माता-पिता और शिक्षकों की बात सुनना और उनका आदर करना भी मेरे लिए धर्म से कम नहीं है क्योंकि माता पिता और शिक्षक हम बच्चों को ज्ञान देते हैं और आगे सत्यवादी जीवन जीने का मार्ग दिखाते हैं। दुनिया में बहुत से धर्म हैं और सब धर्मों का एक ही मूल होना चाहिए, प्रेम और भाईचारा। हम समाज में रहते हैं और समाज के नियमों का पालन करना भी हमारा धर्म है। मेरे लिए हिंदू धर्म जीवन का मार्गदर्शक है। महाभारत के शांति पर्व में महर्षि वेदव्यास द्वारा धर्म का अर्थ बताया गया है कि पूरे विश्व में एक ऐसे समाज की स्थापना हो जिसमें प्रत्येक व्यक्ति समाज के दूसरे व्यक्ति के साथ प्रेम की भावना का अनुभव करे और हर मनुष्य एक दूसरे की सहायता करने के लिए तत्पर रहे, जिससे पूरे समाज का आत्म कल्याण हो सके और यही धर्म का मूल रूप है।

हार्दिक अग्रवाल

नमस्ते, मेरा नाम हार्दिक अग्रवाल है और मैं चैरी हिल हिंदी स्कूल में उच्च स्तर-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं एक बेहद जिम्मेदार और अध्ययनशील लड़का हूँ। अपने खाली समय में मुझे किताबें पढ़ना, आगामी परीक्षाओं के लिए अध्ययन करना और वीडियो गेम खेलना अच्छा लगता है। मैं हिंदी और अंग्रेजी बोल सकता हूँ। एक और अतिरिक्त गतिविधि जो मैं कर रहा हूँ वह रोबोटिक्स है। मैं एक वाद्य यंत्र भी बजा सकता हूँ।

धर्म हम सभी के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है और हमारे कई अनुभवों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करने में सहायता करता है। धर्म को सब लोग जानते हैं और यह हमें अच्छे निर्णय लेने में मदद करता है। हमारे वास्तविक जीवन में धर्म के होने का एक अच्छा उदाहरण है कि एक लड़का अपने भाई और अपने दोस्त दोनों को अलग-अलग तरह से देखता है। यह धर्म का एक अनुप्रयोग है। वह उन दोनों को अलग तरह से देखता है क्योंकि उसके पास अपने परिवार को दूसरों से अलग करने के लिए धर्म की पर्याप्त समझ है।

धर्म हमारा सही विकल्पों की ओर मार्गदर्शन करके हमारे जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में भी सहायता कर सकता है। उदाहरण के लिए, जब आपके जीवन के पथ पर कोई मुश्किल मोड़ आता है, तब धर्म आपको उससे निपटने में सहायता करता है और आपको अपनी यात्रा जारी रखने की शक्ति देता है। धर्म प्रतिदिन हमारे जीवन की अनेक समस्याओं में हमारी सहायता करता है और उन्हें हल करने में हमारी मदद करता है।

धर्म न केवल हमें बल्कि हमारे आसपास के समाज को भी प्रभावित करता है। धर्म बहुत शक्तिशाली है जिसे प्रत्येक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक स्थानांतरित किया जाना चाहिए ताकि लोग अपने दिल में ईमानदारी की भावना के साथ जीवन जी सकें। धर्म हमारी भलाई में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और हर जगह इसका उपयोग किया जाता है।

कनिका सेक्सरिया

कनिका हिन्दी विद्यालय में उच्चस्तर-२ एवं सामान्य विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढ़ती है। वह एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी है। हर वर्ष कविता पाठ में भाग लेती है और बहुत अच्छी कविता बोलती है। मुझे गर्व है कि मैं ही वही छात्रा हूँ।

जीवन में धर्म का महत्व जानने के लिए यह समझना आवश्यक है कि धर्म क्या है। धर्म जीवन जीने की कला है। जिसे हम हमारे अन्दर धारण कर सकें, वह ही धर्म है। धर्म हमारे अंदर मानवीय गुणों को रोपित करता है। दया, करुणा, सेवा, क्षमा, दान, अदि गुणों का विकास करता है। धर्म हमारे जीवन में पवित्र भावनाओं को पैदा करता है और समाज विरोधी और धर्म विरोधी कार्यों से हमें बचाता है। धर्म नियम और सोच है जिसके अनुसार हमें जीना चाहिए। भगवत पुराण में लिखा है कि धर्म के चार भाग हैं: तपस्या, पवित्रता, करुणा, और सत्यता। धर्म हमारे एक ही जीवन को नहीं, सारे जन्मों को जोड़ता है। हमारा धर्म और हमारा कर्म जुड़ा हुआ है।

धर्म संस्कार भी है जो बचपन से हमारे स्वभाव में विकसित होते हैं। जीव मात्र के प्रति दया और करुणा के भाव हम बचपन से सीखते है। हम गाय को माता कहते है, नदी को गंगा मैया कहते है, पेड़ों की भी हम पूजा करते है। इस तरह पूरी प्रकृति के प्रति प्रेम और आदर हम सीखते है जो सुखी जीवन के लिए आवश्यक है। धर्म हमारे लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि धर्म हमे एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

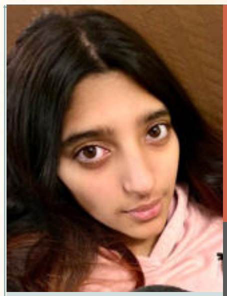

राधा पंत

धर्म क्या है?

मेरा नाम राधा पंत है। मेरी उम्र तेरह वर्ष है। मैं आठवीं कक्षा में हूँ और मुझे हिंदी, संस्कृत, और फ्रेंच बहुत पसंद है।

धर्म का अर्थ है वह सार्वभौमिक नियम जो पूरे ब्रह्मांड को एक साथ रखता है। यह गुरुत्वाकर्षण की तरह है। अगर गुरुत्वाकर्षण नहीं होता तो हममें से कोई भी यहाँ नहीं होता। गुरुत्वाकर्षण के कारण तारे, ग्रह और आकाशगंगाएँ अपनी जगह पर हैं। सूरज हर दिन उगता है और पृथ्वी को ऊर्जा देता है। नदियों का जल समुद्र की ओर बहता है। फूल खिलते हैं और सुगंध बिखेरते हैं और यही उनका धर्म है। बिना व्यवस्था के, बिना धर्म के जीवन संभव नहीं है। मानव जीवन का अपना धर्म है और यह जीवन के विभिन्न चरणों में बदलता रहता है। एक छात्र के रूप में मेरा धर्म कठिन अध्ययन और ज्ञान प्राप्त करना है। मुझे अपने माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान करने की आवश्यकता है ताकि वे मुझे ज्ञान दे सकें। फिर अपने ज्ञान का उपयोग करके समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना मेरा धर्म है। मुझे अपने आप को मानव जाति, सभी जानवरों, पक्षियों, पेड़ पौधों और मेरे आस-पास की हर चीज की सेवा करने के लिए सक्षम बनाना है। मेरे जैसे सभी युवकों को अपनी शक्ति को समझने और उसे अच्छे काम में लगाने की आवश्यकता है। यही हमारा धर्म है। शिक्षक का धर्म है सर्वोत्तम तरीके से पढ़ाना। अपने बच्चे की जरूरतों का ख्याल रखना माता-पिता का धर्म है। डॉक्टर का धर्म मरीजों को ठीक करना और सैनिकों का धर्म देश को सुरक्षित रखना है। धर्म को समझना मुश्किल नहीं है। यह धर्म ही है जो हमारे हृदय में धड़कता है। यह धर्म है जो हमारे रक्त में स्पंदित होता है। यह धर्म है जो साँस लेता है, जिससे हम सब बने हैं।

एडिसन पाठशाला
उच्चस्तर-१

सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति

मेरा नाम हर्षित कक्का है। मैं १३ वर्ष का हूँ। मैं एडिसन, न्यू जर्सी में रहता हूँ, और जॉन एडम्स मिडिल स्कूल में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए में उच्चस्तर-१ में पढ़ता हूँ, जहाँ मैं ८ वर्ष से हिंदी सीख रहा हूँ।

मेरा नाम मधावप्रिया अडबोइना है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन में रहती हूँ। मुझे पुस्तक पढ़ना और चित्रकारी करना अच्छा लगता है।

सनातन धर्म, हिंदू धर्म के अनुसार, धार्मिक प्रथाओं का एक समूह है। यदि कोई उचित जीवन चाहता है तो ये अभ्यास महत्वपूर्ण हैं। इसे लगभग ६००,००० साल पहले बनाया गया था। भगवद् गीता कहती है कि कृष्ण ने सनातन धर्म की रचना की। कृष्ण ने पृथ्वी पर प्रवेश कर धर्म का प्रसार करना प्रारम्भ किया। जो लोग उनके उपदेशों को सुनते थे वे वेद कहलाते थे। क्योंकि यह धर्म इतने लंबे समय तक चला है, बहुत से लोग इसे पहला धर्म कहते हैं। लगभग ५,००० साल पहले हिंदू धर्म सनातन धर्म से निकला था। वर्तमान में, सनातन धर्म के लगभग एक अरब अनुयायी हैं। सनातन धर्म में अनेक देवता हैं। नरसिंह भगवान जिन्होंने धार्मिक उत्पीड़न को समाप्त किया। उनका शरीर तो मनुष्य का है, परन्तु सिर सिंह का है। वामन भगवान जिन्होंने स्वर्ग, पृथ्वी और नरक को मापा। उसका शरीर एक बौने जैसा दिखता है। परशुराम ने न्याय किया। राम भगवान ने अंधकार पर प्रकाश की जीत में मदद की। कृष्ण ने मनुष्यों को नुकसान से बचाया। वह ज्यादातर बांसुरी बजाते हुए खींचे जाते हैं।

भारतीय संस्कृति सनातन धर्म पर आधारित है। सनातन धर्म सांप्रदायिक नहीं है। यह एक जाति या एक देश तक ही सीमित नहीं है। यह सभी पर लागू होता है क्योंकि यह सभी जीवों को शाश्वत व्यवसाय के बारे में बताता है। सनातन धर्म के अनुसार लोगों की गतिविधियों और गुणों के आधार पर समाज को चार भागों में विभाजित किया गया है। यह विभाजन सभी जीवों में स्वाभाविक है। सनातन धर्म के अनुसार मनुष्य को चार वर्गों में बांटा गया है। चार वर्ग हैं पुरोहित वर्ग(ब्राह्मण), प्रशासनिक वर्ग(क्षत्रिय), व्यापारी वर्ग(वैश्य) और श्रमिक वर्ग(शूद्र)। निर्धारित व्यवसायों को ईमानदारी से करने से लोग जीवन के विभिन्न चरणों के माध्यम से प्रगति करते हैं और अंततः खुद को शाश्वत व्यवसाय में स्थित करते हैं। सब का शाश्वत व्यवसाय, "भगवान की सेवा करना" है। सनातन धर्म सभी जीवों को एकजुट करता है और स्वाभाविक रूप से लोगों के बीच एकता का प्रचार करता है।

हमारी समस्या का समाधान केवल हमारे पास है,
दूसरों के पास केवल सुझाव हैं।

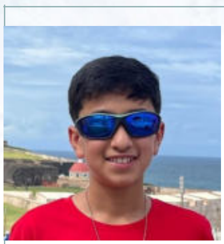

नमस्ते, मेरा नाम राम शेठ है। मैं एडिसन, न्यू जर्सी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं तेरह साल का हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे गणित और कला पसंद है। मेरा मन पसंद खेल बास्केटबॉल, फुटबाल, टेनिस, और गोल्फ हैं। आज में सनातन धर्म के विभिन्न ग्रंथों के बारे में जानकारी दूंगा।

सनातन धर्म में बहुत सारे ग्रन्थ हे। उन ग्रंथों में से सनातन धर्म के सबसे पुराने ग्रन्थ जो विश्व के भी सबसे पुराने ग्रन्थ माने जाते हैं वे है वेद । वेदों में कर्मकांड, विज्ञान शिक्षा, ज्ञानकाण्ड, तर्क, पूजन, वंदन, योग, दर्शनशास्त्र, छन्दशास्त्र इत्यादि विषयों पर गहन चिंतन और विस्तार है। वेद से पहले स्मृति और स्मृति से पहले श्रुति आयी ऐसी सनातन धर्म में मान्यता है। ऋषियों ने ध्यान समाधि में जो ईश्वर से सुना और याद रखा वही स्मृति ग्रन्थ है। जो स्मृतियाँ ऋषियों ने अपने शिष्यों को सुनाईं वही श्रुति ग्रन्थ है। इन श्रुतियों से वेद मिले। वेद व्यास जी ने वेदों का चार भागों में विभाजन किया। वे चार वेद ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, और अथर्ववेद के नाम से प्रसिद्ध हैं। वेदो के अंत में एक सौ आठ उपनिषद् के ग्रन्थ हैं। इनमें से कुछ मुख्य उपनिषद है जैसे ईशावास्य उपनिषद्, बृहदआरण्यक उपनिषद्, केनोपनिषद, कठोपनिषद इतियादी। उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, और विश्व और इन तीनों के परस्पर में क्या सम्बन्ध है उसकी विस्तार से परिभाषा और चर्चा गुरु शिष्य के संवाद के रूप में है। उपनिषदों में जीव ईश्वर से कैसे मिले उसके भी उपाय है। सनातन धर्म के वेद उपनिषद् के बाद पुराण ग्रंथों का महत्व है। पुराणों की संख्या अठारह है। पुराणों कि रचना भी महर्षि वेद व्यास ने की है। अठारह पुराण में से, भागवत महापुराण सबसे बड़ा है। स्कन्द पुराण, मत्स्य पुराण, देवी भागवत, वायु पुराण, इत्यादि और भी कई पुराण है। पुराणों में विश्व कि उत्पत्ति स्थिति और लय की पौराणिक कथाएँ है। पुराणों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ती, देवी, गणपति, कार्तिकेय, काली, इंद्र, वरुण, अग्नि, आदि देवों कि असंख्य कथाएँ है। पुराणों में सर्वप्रथम मनुष्य-मनु और शतरूपा की भी कथाएँ है। पुराणों में कई महान राजा जैसे की शिबि, हरिश्चंद्र, नहुष, त्रिशंकु, मान्धाता, पृथु, नल, आदि के प्रभावकारी चरित्र मलते हैं। अत्रि, वशिष्ट, विश्वामित्र, भृगु, अंगिरस, आदि, ऋषियों का वर्णन पुराणों में मिलता है। पुराणों में चौबीस भगवान के अवतारों का विस्तार से वर्णन मिलता है। अवतारों में से विष्णु भगवन के दो मुख्य अवतार राम और कृष्ण रामायण और महाभारत नाम के ऐतिहासिक ग्रंथों में मिलता है। महाभारत में कृष्ण ने अर्जुन को रण भूमि में जो उपदेश दिया वही ग्रन्थ भगवद् गीता नाम से जाना जाता है। सात सौ श्लोक में भगवान कृष्ण ने सनातन धर्म का सार अर्जुन को कहा जो आज भी हमें मार्गदर्शन करता है।

ऐतिहासिक ग्रंथों के बाद सनातन धर्म के आचार्यों ने वेद पुराण स्मृति आदि धर्म ग्रन्थों को समझने के लिए भाष्य लिखे। इन आचार्यों ने कई भक्ति के स्तोत्र और मंत्र भी लिखे जैसे की कृष्णाष्टकम, मधुराष्टकं, शिवपंचाक्षरस्तोत्र आदि। हमारे सनातन धर्म में पूरे भारत की भाषाओं में अनेक पौराणिक और आधुनिक रचनाएँ देखने को मिलटी हैं। भक्ति काल में सारे भारत के संतों ने भक्ति साहित्य और कविताएँ लिखी। जैसे तुलसीदासजी ने रामचरितमानस की रचना की। मीराबाई ने अनेक भजन लिखे। तुकारामजी ने मराठी में अभंग लिखे। नरसिंह मेहता ने गुजराती में भजन लिखे। जयदेव ने संस्कृत में भक्ति कविताओं की रचना की। दक्षिण से त्यागराज जी ने तमिल, तेलुगु, और संस्कृत में भक्ति कृतियाँ लिखी। इस तरह सनातन धर्म और सनातन धर्म के ग्रन्थ संपूर्ण भारत के विभिन्न प्रांतों को एकत्र करता है।

संध्या वंदन

सिद्धित कृष्णा वुडरो विल्सन स्कूल में छठी कक्षा के छात्र हैं। वे राष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट खेलते हैं। वे मृदंगम और कर्नाटक संगीत सीख रहे हैं। उन्हें अमेरिकी फुटबाल देखना पसंद है।

हमारा वेद, पुस्तकों का एक विशाल संग्रह है। कोई उन्हें सामान्य जीवनकाल में नहीं पढ़ सकता है। हमारे ऋषियों ने हर दिन वेदों के कुछ छोटे अंशों के साथ-साथ कुछ प्रसादों के बारे में पाठ करने का एक आसान, सुखद, फलदायी और शक्तिशाली तरीका बनाया, जिसका पालन हमारे सनातन परिवार द्वारा अति प्राचीन काल से किया जा रहा है।

अब, मैं आप सभी को आकर्षक संध्या वंदनम् पढ़ने के लिए आमंत्रित करता हूँ जो शायद मानव जाति को दी जाने वाली प्रार्थना, धन्यवाद और मंत्र ध्यान की सबसे अच्छी और सूक्ष्म दैनिक दिनचर्या में से एक है।

संध्या का अर्थ

संध्या का अर्थ है रात के साथ दिन के मिलन का समय। वे आमतौर पर शाम और प्रातःकाल होते हैं। लेकिन संध्या ऐसे समय में ही क्यों? यही वह समय है जब व्यक्ति खाली पेट होता है, जो किसी भी आध्यात्मिक अभ्यास के लिए एक शर्त है।

प्राणायाम

विस्तारित गायत्री का मानसिक जप करते हुए प्राणायाम करना है। पूरक, कुम्बक और रेचक प्रकार के प्राणायाम मूल रूप से सुझाए गए और अभ्यास किए गए थे लेकिन आजकल पूरक और रेचक स्वयं भी लाभ प्राप्त करने के लिए पर्याप्त हैं।

प्राण शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है: सुबह-सुबह ठंडी जलवायु में भी आप गहरी सांस लेकर और नहाते समय अपने शरीर पर ठंडे पानी के छींटे मार सकते हैं। आपको ठंड बिल्कुल नहीं लगेगी। जरा उन दिनों को याद करें जब नदी या तालाब में डुबकी लगाते समय बुजुर्ग नाक बंद कर लेते थे।

गायत्री जप

संध्या वंदनम् का मध्य भाग गायत्री मंत्र है और इसी पर अनेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। गायत्री सबसे पवित्र और रहस्यमय मंत्र है जो मानव शरीर के चौबीस स्थानों को सक्रिय कर सकता है। इस चित्र को देखें जहाँ साधक के शरीर पर गायत्री की अलग-अलग ध्वनियाँ अंकित हैं।

गायत्री की कार्यप्रणाली बहुत सूक्ष्म है और कहा जाता था कि ब्राह्मण को गायत्री करने के लिए कोई साधना करने की आवश्यकता नहीं है।

संध्या वंदनम् के लिए-

एक पंचपात्र, उधरैनी और एक आसन की जरूरत है।

सारे मंत्र रट कर बोलना चाहिए।

मेरे दादाजी ने एक कहावत सुनाई कि आपको आसन लगाने की अति आवश्यकता है क्योंकि आपके नीचे हर २ फुट पर एक सांप उस पूजा से लाभ लेने के लिए इंतजार कर रहा है। आसन के सहारे से, हम संध्या वंदनम का लाभ, पूरी तरह से ले सकते हैं।

सनातन धर्म मेरी समझ

रिया बोर्डिया

नमस्ते, मेरा नाम रिया बोर्डिया है और मैं बारह वर्ष की हूँ। यहाँ मैं सनातन धर्म की मेरी समझ के अनुसार लिख रही हूँ।

"सना" का अर्थ है कभी शुरू न होना। "ताना" का अर्थ है कभी न खत्म होने वाला। "धर्म" का अर्थ उन कानूनों/मूल्यों से है जिनका पालन हम दुनिया को एक साथ रखने के लिए करते हैं।
सनातन धर्म (हिंदू धर्म) ने विभिन्न धर्मों को जन्म दिया है। जैसे सिख धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म। मैं जैन धर्म का पालन करती हूँ। जैन धर्म अहिंसा, धैर्य, और सत्य में विश्वास करती है।

मैं वास्तव में इन मूल्यों से प्यार करती हूँ क्योंकि वे मेरे साथ प्रतिध्वनित होते हैं। मैं शाकाहारी हूँ, क्योंकि मैं अहिंसा में विश्वास करती हूँ। अपनी भूख के लिए जानवरों को मारना अच्छा नहीं है। अपशब्द कहकर या शारीरिक रूप से किसी को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए।

जैन धर्म का एक अन्य
महत्वपूर्ण हिस्सा धैर्य और ईमानदारी है। व्यक्ति को हमेशा ईमानदार रहना चाहिए। झूठ बोलने का परिणाम बुरा होता है। आपको भी धैर्य रखना चाहिए। धैर्यवान होना आपको अभिमानी या आवेगी होने के बजाय सकारात्मक, केंद्रित और उत्पादक बनाता है।

सनातन धर्म का एक सिद्धांत पुनर्जन्म की मान्यता है। यह वह प्रक्रिया है जब आप मरते हैं, तब आप एक अलग शरीर की आत्मा में प्रवेश करते हैं। और यह चक्र तब तक दोहराता रहता है जब तक आप मोक्ष तक नहीं पहुँच जाते।

और, सबसे महत्वपूर्ण सनातन धर्म की एक और महत्वपूर्ण प्रथा कर्म के सिद्धांत में विश्वास करना है। यह कानून कहता है कि व्यक्ति को हमेशा अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार होना चाहिए। जैसी करनी वैसी भरनी।

व्यक्ति निर्धन तब नहीं होता
जब उसके पास कुछ नहीं रहता,
बल्कि तब हो जाता है
जब लोग उससे
मांगना बंद कर देतें हैं
वो चाहे प्रेम हो,
समय हो या सहायता हो|
कुछ चीजें और कुछ लोग दूर से बहुत अच्छे लगते हैं पास आने पर ही उनकी असलियत पता चलती है

मध्यमा-३

साउथ ब्रन्सविक पाठशाला

अल्का भारद्वाज

निकिता जैन

मेरा नाम अल्का भारद्वाज है। निकिता जी और मैं पिछले ११ वर्षो से हिन्दी पढ़ा रहे है। मध्यमा-३ को पढ़ाने का यह हमारा प्रथम वर्ष है। सनातन धर्म, सरल भाषा में कहें तो यह जीवन जीने की ऐसी शैली है जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी वह हज़ारों वर्ष पहले थी। यह वह धर्म है जिसमें वृक्षों, पशुओं, नदियों को पूजा जाता है, यहाँ तक कि कंकड़ में भी भगवान शंकर का रूप दिखता है। इसलिये यह सदियों से चला आ रहा धर्म है। सनातन धर्म के मूल तत्व, सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, दान, जप, तप, यम-नियम आदि हैं, जिनका शाश्वत महत्व है। यही सनातन सत्य है।

भारत के बाहर सनातन धर्म के मंदिर

गौरी श्रीवास्तव

मेरा नाम गौरी श्रीवास्तव है। मैं छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं ग्यारह वर्ष की हूँ। मैं मध्यमा-३ हिंदी कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे बैडमिंटन खेलना, लिखना, और चित्र बनाना अच्छा लगता है। मेरा प्रिय विषय गणित है। मुझे रोटी और पालक पनीर खाना अच्छा लगता है।

भारत के बाहर सनातन धर्म के कई मंदिर हैं जैसे कंबोडिया में एक हिन्दू मंदिर है जिसका नाम अंगकोर वाट है। यह दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है, जिसका कुल क्षेत्रफल १६२.६ हेक्टेयर है। कई इतिहासकारों ने अंगकोर वाट को ताजमहल या पिरामिड से भी ऊँचा दर्जा दिया है। कुछ ने यह भी कहा कि अंगकोर वाट १०० ताजमहल या पिरामिड के संयोजन से भी बड़ा है।

राधा माधव मंदिर टेक्सास में सबसे पुराना हिन्दू मंदिर है। यह मंदिर २०० एकड़ भूमि पर बना है और यूनाइटेड स्टेट्स अमेरिका में सबसे बड़े हिन्दू मंदिरों में से एक है। राधा माधव धाम एक गैर-लाभकारी, धार्मिक, शैक्षिक और धर्मार्थ संगठन है जो रागानुगा भक्ति के मार्ग का अनुसरण करता है।

हिन्दू सांस्कृतिक केन्द्र हिन्दू मंदिर, मिसिसॉगा, ओंटारियो शहर में है। यह कनाडा के सबसे बड़े हिंदू मंदिरों में से एक है। इसमें १०,००० वर्ग फुट का प्रार्थना कक्ष और १६ कक्षाएँ हैं जहाँ दैनिक ध्यान भी किया जाता है| भारतीय भाषाओं में कक्षाएँ, हिंदू संगीत और नृत्य, हिंदू संस्कृति, योग और सामाजिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं| और वहाँ ९,००० वर्ग फुट का बैंक्वेट हॉल है जो सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए है।

सनातन धर्म

शनाया वार्ष्णेय

मेरा नाम शनाया वार्ष्णेय है। मैं दस वर्ष की हूँ। मैं पांचवीं कक्षा' में पढ़ती हूँ। मेरी 'गणित एवं नृत्य' में रुचि है। मैं कविताएँ भी लिखती हूँ।

सनातन धर्म को हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म भी कहा जाता है। सनातन धर्म शाश्वत है अर्थात हमेशा बना रहने वाला, जिसका न आदि है न अन्त। इसलिए इसे सनातन नाम दिया गया है। सनातन धर्म की पहचान सत् संस्कृति सत्य से है। सात्विक आहार, सद्व्यवहार एवं आनन्द का विचार ही सनातन है। सभी जीवों के प्रति कर्म, मन एवं वाणी, अद्वेष, दया और दानशीलता ही सनातन धर्म है। सनातन धर्म वास्तव में भारतीय प्राचीन धर्म है, जो किसी जमाने में पूरे भारत में व्याप्त रहा। अनेक कारणों से हुए भारी धर्मान्तरण के बाद भी बहुसंख्यक आबादी इसी धर्म में आस्था रखती है। मत अनेक हो सकते है, लेकिन धर्म एक ही है। आस्तिक, नास्तिक, सगुण- निर्गुण, साकार और निराकार सभी सनातन धर्म के अंग हैं। सनातन धर्म का संस्थापक कोई मनुष्य नही है। यह ईश्वरीय ज्ञान एवं वेदों को मानता है। वेदों का ज्ञान ईश्वरीय है। सृष्टि के आदि में प्रथम चार श्रेष्ठ मनुष्यों को वेद का ज्ञान स्वयं परम पिता परमेश्वर ने उनके अंतःकरण में दिया जो सदा से है। वही सनातन है। सनातन धर्म ही सच्चे ईश्वर में विश्वास करता है। वह मानता है कि ईश्वर एक है। सनातन ही परम आत्मा है। जैसा कि गीता के दूसरे अध्याय में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है - हे अर्जुन! जो छेदा नहीं जाता, जलाया नहीं जाता, जो न सूखता है न गीला होता है, ऐसे रहस्यमय सात्विक गुण तो केवल परमात्मा में ही होते हैं। जो सत्ता इन दैवीय गुणों से परिपूर्ण हो, वही सनातन कहलाने के योग्य है। कर्तव्य का कभी त्याग नहीं करना चाहिए, यही सनातन धर्म है।

सिद्धार्थ पाठक

मेरा नाम सिद्धार्थ पाठक है। मैं साउथ ब्रंसविक पाठशाला में मध्यमा-३ स्तर का विद्यार्थी हूँ। मुझे सॉकर खेलना बहुत पसंद है। हमारे शरीर और दिमाग़ के विकास के लिए खेल-कूद और व्यायाम बहुत आवश्यक हैं। जब हम गर्मियों की छुट्टियों के लिए भारत जाते हैं तो हम पहले से ही मंदिरों में जाने की योजना बनाते हैं और विशेष रूप से हम गंगा नदी में स्नान करते हैं, जोकि मुझे सबसे ज्यादा पसंद है।

सनातन धर्म विश्व के सभी धर्मो में सबसे पुराना धर्म है। सनातन का अर्थ है जो शाश्वत हो, सदा के लिए सत्य हो। जैसे सत्य सनातन है। ईश्वर ही सत्य है, आत्मा ही सत्य है, मोक्ष ही सत्य है और इस सत्य के मार्ग को बताने वाला धर्म ही सनातन धर्म है। वह सत्य जो अनादि काल से चला आ रहा है और जिसका कभी भी अंत नहीं होगा वह ही सनातन या शाश्वत है। जिनका न प्रारंभ है और जिनका न अंत है, उस सत्य को ही सनातन कहते हैं। यही सनातन धर्म का सत्य है। वैदिक या हिंदू धर्म को इसलिए सनातन धर्म कहा जाता है, क्योंकि यही एकमात्र धर्म है जो ईश्वर, आत्मा और मोक्ष को तत्व और ध्यान से जानने का मार्ग बताता है। ॐ सनातन धर्म का प्रतीक चिह्न ही नहीं बल्कि सनातन परम्परा का सबसे पवित्र शब्द है। यह धर्म अपने आप में इतना विशाल है कि इसमें से समय-समय पर विभिन्न धर्म निकलते रहे, कुछ पुरानी परम्पराएँ टूटती रहीं और कुछ नई जुड़ती रहीं, कुछ पुरानी मान्यताएँ ज्यों की त्यों रहीं तो कुछ मान्यताएँ इसमें समाती रहीं। कुछ मिला, कुछ पुराना छूटता गया, कुछ पुराना यूँ ही रहा तो कुछ नया जुड़ता गया। इसलिए सनातन धर्म का नाम सनातन धर्म है।

चेरी हिल - मध्यमा-३

ऋतु जग्गी

मैं मध्यमा-३ की शिक्षिका हूँ। मुझे बच्चों को हिन्दी पढ़ाने का शौक है। मुझे किताबें और लेख पढ़ने में भी बहुत रुचि है। सत्य, अहिंसा, त्याग और परोपकार सनातन धर्म के मूल मंत्र हैं।

मैं मध्यमा-३ की सह-शिक्षिका हूँ। मुझे बच्चों में भारतीय संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाने में रुचि है और साथ ही नवीनतम संगणक प्रौद्योगिकी में भी आनंद आता है।

चारु खुराना

आदित्य खुराना

नमस्ते! मैंने ९ वर्ष हिंदी यू.एस.ए. में पढ़ाई की। २०२२ में स्नातक होकर अब मैं युवा स्वयंसेवक हूँ। मुझे खाली समय में शतरंज खेलने का शौक़ है और साथ ही मैं स्नीकर्ज़ का व्यापार करता हूँ।

हमारी मध्यमा ३ की कक्षा ने सनातन धर्म के बारे में पढ़ा और अपने शब्दों में कुछ लिखने का प्रयास किया है।

सनातन धर्म का नाम सनातन धर्म क्यों है?

द्विज गिरधर

मेरा नाम द्विज गिरधर है। मैं ११ वर्ष का हूँ। मैं मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मुझे खेलना और पढ़ना बहुत पसंद है। मेरा प्रिय विषय गणित है। मुझे हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेना बहुत अच्छा लगता है।

सनातन धर्म अथवा वैदिक धर्म, आज जिसे हिन्दू धर्म भी कहा जाता है, इसका करीब २० अरब वर्ष पुराना इतिहास है! वैदिक काल में भारतीय उप महाद्वीप के धर्म के लिये 'सनातन धर्म' नाम मिलता है। 'सनातन' का अर्थ है - शाश्वत या 'सदा बना रहने वाला', अर्थात जिसका न आदि है न अंत। सनातन धर्म मूलतः भारतीय धर्म है, जो किसी समय पूरे बृहत्तर भारत (भारतीय उपमहाद्वीप) तक व्याप्त रहा है। विभिन्न कारणों से हुए भारी धर्मान्तरण के उपरांत भी विश्व के इस क्षेत्र की बहुसंख्यक जनसंख्या इसी धर्म में आस्था रखती है। प्राचीन काल में भारतीय सनातन धर्म में गाणपत्य, शैवदेव, कोटी वैष्णव, शाक्त और सौर नाम के पांच सम्प्रदाय होते थे। गाणपत्य गणेश की, वैष्णव विष्णु की, शैव देव कोटी शिव की, शाक्त शक्ति की, और सौर सूर्य की पूजा आराधना किया करते थे। प्रत्येक सम्प्रदाय के समर्थक अपने देवता को दूसरे सम्प्रदायों के देवता से बड़ा समझते थे और इस कारण से उनमें वैमनस्य बना रहता था। एकता बनाए रखने के उद्देश्य से धर्मगुरुओं ने लोगों को यह शिक्षा दी कि सभी देवता समान हैं। विष्णु, शिव और शक्ति आदि देवी-देवता परस्पर एक दूसरे के भी भक्त हैं। उनकी इन शिक्षाओं से तीनों सम्प्रदायों में मेल हुआ और सनातन धर्म की उत्पत्ति हुई।

प्रतीक्षा नैथानी

मैं चेरी हिल हिंदी स्कूल में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे संगीत में दिलचस्पी है और फुटबॉल खेलना भी पसंद है। मुझे खाना बनाना अच्छा लगता है। मुझे अलग-अलग भाषाएँ सीखना अच्छा लगता है।

हिन्दू धर्म सनातन धर्म के नाम से भी जाना जाता है। धर्म का अर्थ होता है धारण करने योग्य, अर्थात जिसे सब को धारण करना चाहिए। सनातन धर्म एक परंपरा के मानने वालों का समूह है। सनातन धर्म का अर्थ है सदा बना रहने वाला यानी जिसका न आदि है और न ही अंत है। ॐ - सनातन धर्म का प्रतीक चिहन है और सनातन परंपरा का सबसे पवित्र शब्द है। यह धर्म ६००० वर्षों पुराना है। इसे दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म माना जाता है। यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। वैदिक काल में भारतीय उपमहाद्वीप में धर्म के लिये सनातन धर्म का नाम मिलता है। इस धर्म के सर्वपूज्य ग्रंथ वेद हैं। वेद चार हैं और जिन्हें धीरे-धीरे रचा गया है।

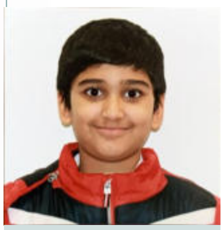
ध्रुवा खगाति

मेरा नाम ध्रुवा खगाति है। मै मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मुझे बास्केटबॉल खेलना बहुत पसंद है और वीडियो गेम खेलना भी पसंद है। मुझे गणित विषय पसंद है।

मैंने जो भी लेख पढ़ा, उससे मैंने यह समझा कि सनातन का अर्थ है शाश्वत या कालातीत और सनातन धर्म का अर्थ है जाति या पंथ के बावजूद नैतिकता का सार्वभौमिक कोड। मैं विभिन्न उपनिषदों में वर्णित सनातन धर्म के नियमों के बारे में बताने जा रहा हूँ।

- छांदोग्य - पाँच अच्छी बातों का पालन करने की सलाह देते हैं, तप, दान, आर्जव, अहिंसा और सत्य -वचन।
- बृहदारण्यक उपनिषद- लोगों से तीन अच्छी बातों का पालन करने का आग्रह करता है, संयम, दया और दान।
- कठोपनिषद - हमें बुराई नहीं करने के लिए कहता है, और शांति और एकाग्रता को आत्मा के साधक के महत्वपूर्ण कारकों के रूप में महत्व देता है।
- ऋग्वेद हमें सच बोलने और सच्चाई से काम करने के लिए कहता है।

अर्णव सेठी

लोग सनातन धर्म को सनातन धर्म इसलिए कहते हैं क्यूँकि यह अनन्त शिक्षाओं को संदर्भित करता है। सच्चाई में सनातन का अर्थ अनन्त है और धर्म का अर्थ अभ्यास या कर्तव्य है। बहुत से लोग सनातन धर्म का पालन भी करते हैं। सनातन धर्म ईश्वर, आत्मा और मोक्ष को तत्व और ध्यान से जानने का मार्ग बताता है। सनातन धर्म एक सुंदर धर्म है और बहुत प्रसिद्ध है। सनातन धर्म जीवन जीने की कला सिखाता है।

पुर्वि अग्रवाल

नमस्ते, मेरा नाम पुर्वि अग्रवाल है। मुझे नृत्य करना अच्छा लगता है और मुझे चित्र बनाना भी अच्छा लगता है। मेरा कर्मभूमि लेख सनातन धर्म के बारे में है। यह लेख बताता है कि सनातन धर्म क्यों महत्वपूर्ण है और इसके इतिहास क्या है।

सनातन धर्म बहुत महत्वपूर्ण है। सनातन धर्म सबसे पुराना धर्म है। जैसे सिख, बौद्ध, जैन, सब सनातन धर्म के ही पंथ है। सनातन का अर्थ है सदा सत्य बोलना। ईश्वर ही सनातन है। न कभी नया था और न कभी पुराना होगा। धर्म हमें सही मार्ग पर चलना सिखाता है और वह हमें अच्छे संस्कार भी देता है, जैसे पशु-पक्षी को खाना और दाना देना, गरीब और असहाय की मदद करना, माता-पिता की सेवा करना, आदि।

सनातन धर्म में मूर्ति पूजा

संस्कृत जी
मध्यमा-२, प्लेनस्बोरो पाठशाला

हमारी अधिकांश धारणाएँ हम जो देखते हैं उस पर निर्मित होती हैं। जैसा कि लोग कहते हैं, देखना ही विश्वास करना है। भौतिक जीवन के बीच हर कोई हमेशा आध्यात्मिक स्तर पर नहीं होता है। एक मूर्ति ईश्वर की अभिव्यक्ति है, या कई ऊर्जाएँ हैं जिन्हें हम ईश्वरीय मानते हैं। किसी मूर्ति को देखना या किसी मूर्ति की उपस्थिति को महसूस करना तुरंत ही ईश्वरत्व से जुड़ जाता है। Idol या मूर्ति (विग्रह, सूर्य, अग्नि, जल, गंगा, शालिग्राम, लिंग) सभी भगवान के प्रतीक या symbol हैं जो आकांक्षियों को मन की एकता और हृदय की शुद्धता प्राप्त करने में सहायता करते हैं। मन को स्थिर करने के लिए प्रतीक की नितांत आवश्यकता है। मूर्ति-निर्माण वह विज्ञान है जिसके द्वारा आप अपनी ऊर्जा को एक विशिष्ट तरीके से प्रकट करते हैं ताकि आपके जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हो सके। भारत एक ऐसा स्थान है जहाँ हम मूर्तिकला की विस्तृत प्रणालियों में गए। हिंदू जीवन शैली में मूर्तियाँ केवल देवी-देवताओं का चित्रण नहीं हैं, बल्कि वैज्ञानिक रूप से शक्तिशाली ऊर्जा केंद्रों के रूप में बनाई गई हैं।

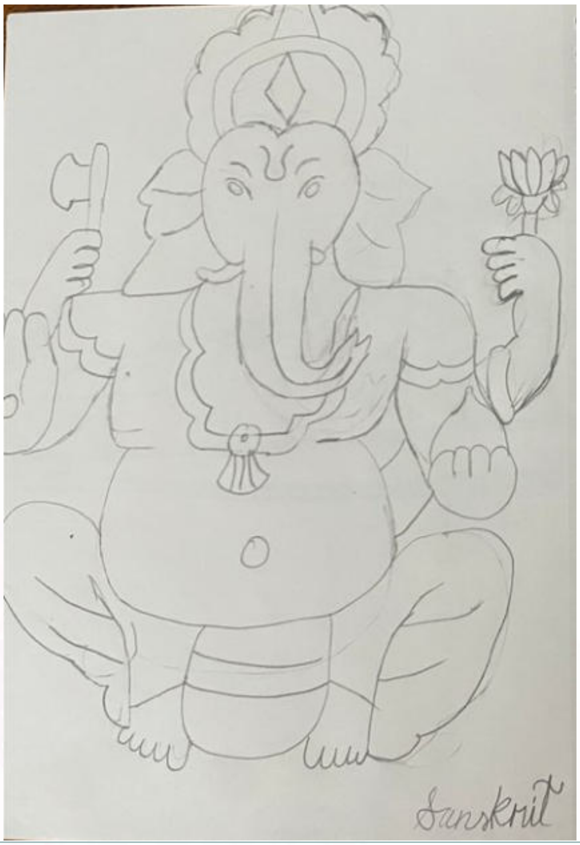

सनातन धर्म: परिभाषा, संत, ग्रंथ और जीवन शैली

साऊथ ब्रन्सविक, मध्यमा-१

शिक्षिका: इंदु श्रीवास्तव, साक्षी भट्टाचार्य
युवा स्वयंसेविका: अरुषि ठाकुर, साईशा पाई

इस वर्ष की कर्मभूमि के सनातन धर्म विशेषांक ने हमारी मध्यमा-१ कक्षा के सभी विद्यार्थियों को सोचने पर विवश कर दिया कि यह धार्मिक विषय है या भारतीय संस्कृति की बड़ी ही प्राचीन और समृद्ध जीवन शैली है, जिसे पूरी तरह समझने की आज बहुत आवश्यकता है। इस बारे में हमारे सभी छात्र-छात्राओं ने जो छान बीन की है आइए आप भी इसे पढ़ें, समझें, जाने और अपने प्रिय जनों से साझा भी करें।

विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई "शू बॉक्स परियोजना"

खड़े-१: साईशा पाई, अरुषि, ठाकुर, साक्षी भट्टाचार्य, इंदु श्रीवास्तव,

खड़े-२: साची, मुहम्मद, आरव, छवि, नयोमी, आयुष, बैठे: ओजस्वी, चिरांशी, दिया, चार्वि, केशव

१. सनातन धर्म क्या है - परिभाषा और विशेषता

केशव

साची

केशव: सनातन धर्म का अर्थ है सदा रहने वाला, जिसका न आदि है न अंत है। यह विश्व के प्राचीन धर्मों में से एक है। इस धर्म और परम्परा को मानने वालों के घर में भगवान गणेश, शिव, विष्णु, सूर्य और देवी दुर्गा आदि की पूजा आराधना होती है।

साची: धर्म का अर्थ है कर्तव्य और सनातन का अर्थ है हमेशा, हर समय अपने कामों को समझदारी से करना ही सनातन धर्म है। सनातन धर्म हर हिन्दू को जीवन जीने के प्राकृतिक और शाश्वत तरीक़े के रूप में अनुवादित किया जा सकता है। जीव हत्या या किसी भी प्राणी को चोट नहीं पहुँचाना, पवित्रता, क्षमा, दया, धैर्य, वचनशीलता और सद्भावना रखना भी सनातन धर्म ही है।

चिरांशी

मुहम्मद

चिरांशी: सनातन धर्म में योग-प्राणायाम दैनिक जीवन के अहम अंग हैं। योग से हमारे शरीर, मन, जीवन के सभी आयामों को बल, सेहत और सुरक्षा मिलती है। प्राणायाम से श्वसन, ऊर्जा संचार और जीवन शक्ति में संतुलन बढ़ता है। दोनों के संतुलित प्रयोग से शारीरिक लचीलापन, बौधिक कुशग्रता, दीर्घ आयु और पुराने रोग भी मिटते जाते हैं।

मुहम्मद: सनातन धर्म हमें जीवन जीने का बना बनाया सूत्र (फ़ॉर्मेला) नहीं देता, बल्कि मानव मन में जो भी जिज्ञासा और प्रश्न खड़े होते रहते हैं उनके हल निकालने के साधन, ज्ञान, और स्रोत प्रदान करता है। इसके सभी आयामों (व्यक्तिगत, सामाजिक, भौतिक, आध्यात्मिक, लौकिक, अलौकिक, आदि) को पूरी तरह से उपयोग में लाने की आवश्यकता है ताकि यह एक आध्यात्मिक अध्ययन का रूप भर बन कर न रह जाए।

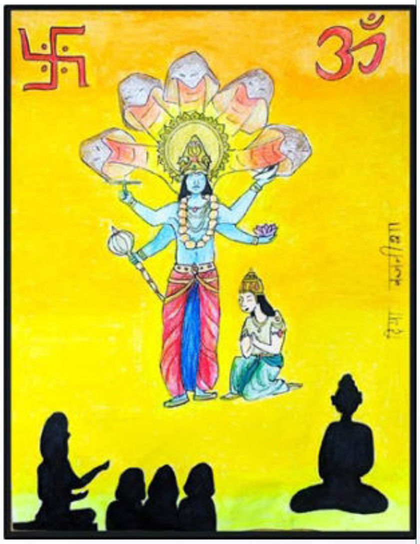

दिया

दिया: मेरा नाम दिया रजनीशा है। मुझे किताबें पढ़ना, बाँसुरी बजाना, लेखन और चित्रकारी करना पसंद है। सनातन धर्म क्या है इसको मैंने एक चित्र बनाकर बताने का प्रयास किया है। आशा है आपको यह चित्रकारी पसंद आएगी।

ऑजस्वी

२.सनातन धर्म - ऋषि मुनि संत, और ग्रंथ

ऑजस्वी: भगवद् गीता सनातन धर्म का बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ है, भगवद् गीता जो भारतीय संस्कृति और दर्शन की गहन समृद्धि को दर्शाता है। भगवान कृष्ण ने अर्जुन के द्वारा हम सभी को जीवन मूल्यों, कर्म, धर्म, समाज, राजनीति, सुख, दुःख, जन्म, मरण की सार्थकता के बारे में शिक्षा दी है।

छवि मोहन

छवि मोहन: स्वामी विवेकानंद
स्वामी विवेकानंद जी एक महान हिन्दू संत और वेदांत आंदोलन के प्रणेता थे। इस सन्यासी ने ३० वर्ष की अल्पायु में ही अमेरिका, शिकागो में सन् १८९३ में आयोजित विश्व धर्म सभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। अपने महान कार्यों द्वारा आपने भारत और पाश्चात्य जगत में सनातन धर्म, वेदों, तथा शास्त्रों का ज्ञान फैलाया।

अन्वेशा: गोस्वामी तुलसीदास
तुलसीदास को रामचरितमानस लिखने के लिए जाना जाता है, जो भगवान राम की कहानी रामायण का पुनर्कथन है। उन्होंने हनुमान चालीसा और विनय पत्रिका भी लिखी, जिनका उपयोग दुनिया भर के हिंदू प्रार्थना के लिए करते हैं। वाराणसी में गंगा नदी पर स्थित तुलसी घाट का नाम उनके नाम पर रखा गया है।

अन्वेशा

चार्वि मोहन

चार्वि मोहन: आदि गुरु शंकराचार्य
आदि गुरु शंकराचार्य जी ने बहुत कम आयु में वेदों के ज्ञान में महारत प्राप्त कर ली थी। आपने भारत देश की चारों दिशाओं में मठों की स्थापना करवाई थी। सनातन और वैदिक परम्परा पर आधारित उपनिषद और वेदांत सूत्रों पर लिखी उनकी टीकाएँ बहुत प्रसिद्ध हैं और आज भी पढ़ी जाती हैं। विश्व को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास भी शंकराचार्य जी के द्वारा किया गया था, जो कि सामान्य मानव से सम्भव नहीं है।

आयुष

३.सनातन धर्म - हिंदी भाषा, गौशाला, जीवन दर्शन सारा

आयुष: हिंदी एक खड़ी बोली है जो वैदिक संस्कृत भाषा से स्वाभाविक रूप से जन्मी है। यह ७वीं शताब्दी ईस्वी में उत्तर भारत क्षेत्र में उभरी थी, जब भारत आने वाले अप्रवासियों को भारतीय-समाज के साथ तालमेल बिठाना पड़ा। लिखित हिंदी देवनागरी लिपि का उपयोग करके बनाई गई है। सनातन धर्म के कई पौराणिक ग्रंथों और जानकारियों को जन साधारण तक पहुँचाने का कार्य अब हिंदी भाषा के द्वारा किया जा रहा है।

नायोमी: सनातन धर्म में गाय माता के रूप में पूजनीय है। बहुत सी गौ (या गाय) की देख रेख गौशाला में की जाती है। गाय के दूध में आयुर्वेदिक औषधीय गुण होते हैं और गोबर से बायो ऊर्जा एवं खाद बनाई जा सकती है। गाय एकमात्र ऐसा जीव है जो साँस लेते समय आक्सीजन लेती है और साँस छोड़ते समय आक्सीजन ही छोड़ती है।

नायोमी

इंदु श्रीवास्तव: सनातन धर्म में सभी जीव, जंतु, निर्जीव आदि एक समान, उपयोगी और ज़रूरी माने जाते हैं। जगत में सूरज हो या पक्षी, फल हो या नदी, वनस्पति, प्रकृति, मनुष्य योनि या फिर देव गण - सभी को अपने-अपने कर्तव्य (धर्म) का पालन करना होता है। इस संसार में सभी को आपसी संतुलन, सामंजस्य और सहकार में रहकर जीना ही सनातन धर्म है।

साऊथ ब्रन्सविक, मध्यमा-१

पुनीत माहेश्वरी, अदिति माहेश्वरी, विदुर जैन, साईशा धाम

मेरा नाम अदिति माहेश्वरी है। मैं हिंदी यू.एस.ए. की साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला में मध्यमा-१ स्तर की अध्यापिका हूँ। साथ ही में मैं मध्यमा वर्ग की स्तर संचालिका भी हूँ। मुझे हिंदी यू.एस.ए. से जुड़े हुए १० वर्ष हो गए हैं जिसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ कि मुझे समाज सेवा करने का यह अवसर प्राप्त हुआ है। साथ ही मुझे अत्यंत संतोष है कि मैं हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से अमेरिका में प्रवासित परिवारों और बच्चों में हिंदुत्व की भावना प्रवाहित कर रही हूँ। हिंदी पठन और लेखन के साथ-साथ हम अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति और मूल्यों से भी अवगत कराते हैं। इस वर्ष हमारी कक्षा में बच्चों ने बहुत सुंदर शू बॉक्स प्रोजेक्ट बनाये और उसके माध्यम से नए शब्द भी सीखे। बच्चों को यह प्रोजेक्ट करने में बहुत आनंद आया। आशा है कि आपको भी बच्चों का यह कार्य पसंद आएगा और आप उनकी मेहनत की प्रशंसा करेंगे।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

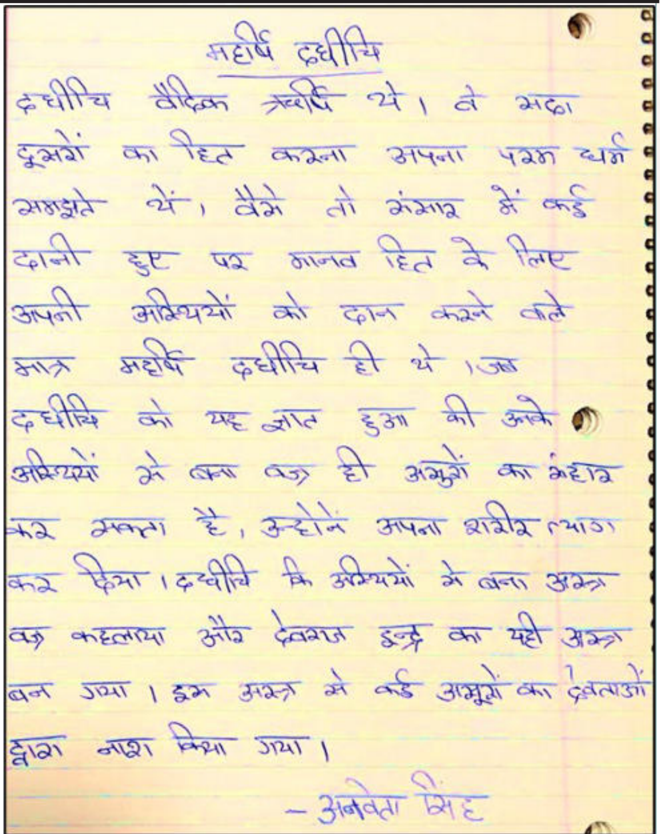

महर्षि दधीचि

दधीचि वैदिक ऋषि थे। वे सदा दूसरों का हित करना अपना परम धर्म समझते थें। वैसे तो संसार में कई दानी हुए पर मानव हित के लिए अपनी अस्थियों को दान करने वाले मात्र महर्षि दधीचि ही थे। जब दधीचि को यह ज्ञात हुआ की उनके अस्थियों से बना वज्र ही असुरों का संहार कर सकता है, उन्होंने अपना शरीर त्याग कर दिया। दधीचि कि अस्थियों से बना अस्त्र वज्र कहलाया और देवराज इन्द्र का यही अस्त्र बन गया। इस अस्त्र से कई असुरों का देवताओं द्वारा नाश किया गया।

— अन्वेता सिंह

इशान श्रीवास्तव

सनातन धर्म क्या है?

सनातन धर्म बहुत सारे धर्मों जैसे हिंदू, सिख, बौद्ध धर्मों की नीव है। हिन्दू धर्म का पहला नाम सनातन धर्म है। मनुष्य और सारे जीवों को अपना धर्म का पालन करना होता है। सनातन धर्म के अनुसार मनुष्य के कुछ मूल भूत धर्म हैं, जैसे -

१. हमेशा सच बोलो और बड़ों का आदर करो।
२. दूसरों की मदद करो और जलन मत करो।
३. अपने कर्मों पर और भगवान में विश्वास रखो।

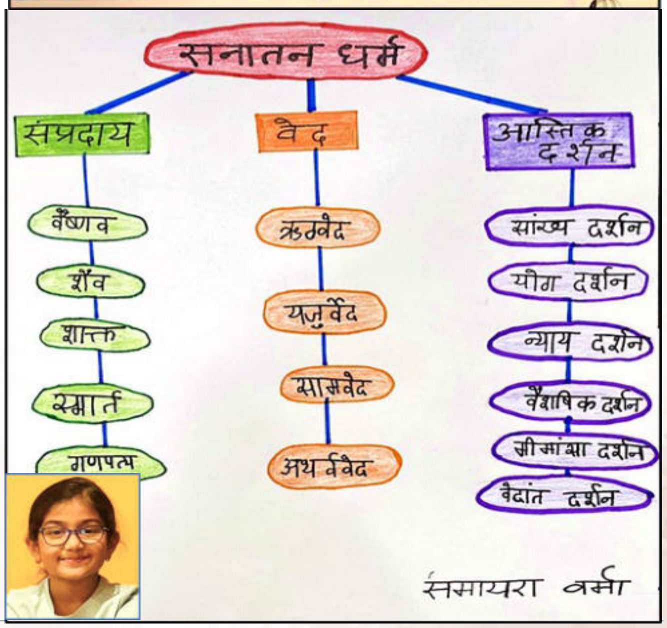

बच्चों द्वारा बनाई गई परियोजनाएँ

जीवन के लिए एक श्रेष्ठ सोच यह भी है कि प्रत्येक व्यक्ति की सुनो और प्रत्येक व्यक्ति से सीखो, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति सब कुछ नहीं जानता, किन्तु प्रत्येक व्यक्ति कुछ न कुछ अवश्य जानता है!

भारतीय सनातन धर्म — एक महान वृक्ष

नेहा श्रीवास्तव

इशान श्रीवास्तव

नमस्ते, मेरा नाम नेहा श्रीवास्तव है। मध्यमा-१ के छात्र ईशान श्रीवास्तव मेरे सुपुत्र हैं। कर्मभूमि के लिए लिखा यह मेरा पहला लेख है जो मैंने इशान के साथ मिलकर लिखा है।

सनातन शब्द का अर्थ है निरंतर, कभी न समाप्त होने वाला। इस शब्द का प्रयोग बतलाता है कि भारत में चलने वाला धर्म, आचरण, विचार आज का नहीं है, किसी ने इसे खोजा नहीं है, बल्कि यह आदिकाल से चला आ रहा है। “कोई ऐसा आदर्श कार्य जिस पर चलने या आरूढ़ होने से मनुष्य को सुख और शांति प्राप्त होती है, वही सनातन धर्म है।"

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानु पश्याते।
सर्वभूतें चात्मनि ततो न विजुगुप्सते।।

जो मनुष्य संपूर्ण प्राणियों में परमात्मा को ही निरंतर देखता है, उसके पश्चात् वह कभी भी किसी से घृणा नहीं कर सकता। कहते हैं कि ऋषियों ने ही इसे समझा, जाना और फिर पृथ्वी पर प्रवाहित कर दिया। हम सब देख रहे हैं कि मनुष्य के ज्ञान से यह संचालित हो रहा है। यह विचारधारा सहिष्णुता, परोपकारिता तथा समानता की भावना को लेकर आगे बढ़ी है। यह मूर्ति में भी ईश्वर को देखती है, चलते फिरते जीवों में भी उसी का दर्शन करती है। संसार में जितनी भी जीवात्मा सशरीर है उनमें से मनुष्य को यह सौभाग्य मिला है अर्थात ऐसी बुद्धि, ज्ञान जो किसी भी देहधारी के पास नहीं है। ऐसा इसलिए कहा गया कि जिससे मनुष्य अच्छे बुरे की पहचान कर सके, संसार के द्वंध को समझ सके और उसमें से शांति का मार्ग निकाल सके। एक और चीज मनुष्य को उपहार में मिली है, वह है "मन"। लोग इस मन को बुरा समझते हैं, परन्तु यह गरुड़ के समान है जिस पर सवार होकर हम ब्रहम लोक जाते हैं। यही वह वाहन है जो संसार के दलदल से हटाकर आनंद के लोक में खड़ा कर देता है, जहाँ शान्ति के झरने बहते हैं। सनातन विचार कहता है कि मूल्यवान वस्तुओं का प्रयोग यदि ज्ञानपूर्वक करें तो आचरण में विषमता नहीं आ पायेगी। सनातन धर्म महान वृक्ष है और इसके कोष में विश्व के सारे ज्ञान समा गये हैं। ज्ञान ने कभी धर्म आचरण से विरोध उत्पन्न नहीं होने दिया, इसीलिए विद्वान नतमस्तक हैं। हमारे ऋषि इसकी व्याख्या इस तरह से करते हैं कि ईश्वर कैसा है। किसी ने कहा "ऐसा है" किसी ने "ऐसा भी है” अर्थात निराकार निर्गुण नहीं साकार सगुण।

ये शब्द किसी साधारण पुरुष के नहीं है, स्वयं भगवान शंकर के हैं जो माता पार्वती के पति कहे गये हैं। उन्हीं के शब्दों में "अज्ञानियों के लिये जल, हिम (बर्फ) और उपल (ओला) अलग- अलग हैं, पर समझदारों की दृष्टि में तीनों एक हैं।"

अवस्था के अनुसार भेद दिखाई पड़ता है। वैसे तीनों में कोई भेद नहीं। इसे और स्पष्ट कर सकते हैं. ‘बहता हुआ जल है’ जिसे हम देखते हैं, ग्रहण करते हैं। दूसरा जल 'मेघ' है, वह उसकी अव्यक्तावस्था है। तीसरा जल 'भाप' है। ओला भी जल का ही रूप है। चौथा रूप 'बर्फ' का है, यह भी जल है और पांचवाँ जो सर्वव्याप्त है, जहाँ आप बैठे हैं वहाँ भी वह छाया हुआ है। इसी प्रकार अग्नि भी सर्वत्र व्याप्त है। समझदार लोग इसे मानेंगे और कहेंगे कि हाँ वास्तव में ठीक है, परंतु जैसे जल के पाँच रूपों को समझने के लिये विज्ञान की आवश्यकता है उसी तरह मनुष्यों में व्याप्त मित्रता को समझने के लिये सनातन व्याख्या समझना आवश्यक है। ज्ञान ही सनातन है। यह सब को सब प्रकार से समझ लेता है देख लेता है और अंत में संदेश देता है कि किसी जीवात्मा से घृणा नहीं की जा सकती। सभी प्रेम के बराबर के हकदार हैं।

सनातन धर्म में मूर्ति पूजा और मंदिर

- हिन्दू धर्म मूल रूप से सनातन धर्म के रूप में जाना जाता है।
- सनातन का अर्थ है शाश्वत, अर्थात इसका कोई आदि या अंत नहीं है।
- सनातन सिर्फ एक धर्म न हो कर अपितु एक प्रतिदिन नीतिबद्ध जीवन जीने का तरीका है।
- हमारे वेद और उपनिषद में नीतिबद्ध रूप से जीवन जीने के बारे में बताया गया है।
- शास्त्रों में परभ्रम को समस्त अस्तित्व का कारण बताया गया है।
- ब्रह्मा विष्णु और महेश परभ्रम के ३ प्रतिरूप है।
- सनातन धर्म में देवी देवताओं के सामान रूप से पूजा की जाती है।
- सनातन धर्म मोक्ष, पुनर्जन्म और कर्म में विश्वास करता है।
- सनातन धर्म में मूर्ति पूजा को महत्वपूर्ण और आस्था का प्रतीक मना जाता है क्योंकि ईश्वर पृथ्वी के हर कण में विद्यमान है।
- सनातन धर्म में मूर्ति पूजा भक्तों को ईश्वर से जोड़ने का सरल माध्यम है। मूर्तियाँ भक्तों को भगवान के आध्यात्मिक रूप से परिचित कराती है।

लेखिका: येशा मेवानी, कक्षा: मध्यमा-२, स्रोत: इंटरनेट और माता-पिता

सनातन धर्म

सनातन धर्म एक भारतीय धर्म है। सनातन धर्म को हिंदू धर्म या वैदिक धर्म भी कहा जाता है। सनातन धर्म में चार वेद हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। वेद हिन्दू धर्म के सबसे पुराने ग्रन्थ हैं। हिन्दू धर्म में पूजा मंदिर में करते हैं। मंदिर में भगवान की मूर्तियाँ होती हैं, जैसे गणेश जी, राम जी ,लक्ष्मण जी, सीता जी, हनुमान जी, दुर्गा माता।

हिन्दू धर्म में रामायण और महाभारत जैसे ग्रन्थ हैं जिनमें अलग-अलग कहानियाँ हैं। महाभारत की कहानियाँ हमें सिखाती हैं कि हमें ईर्षा को अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिये और लड़ाई को बातचीत से हल करने की कोशिश करनी चाहिए। रामायण की कहानियाँ हमें सिखाती हैं कि बुराई पर हमेशा अच्छाई की जीत होती है। रामायण और महाभारत की कहानियों से हम जो सीखते हैं हमे उसे अपने प्रतिदिन के कामों में अपनाना चाहिये।

एंजेला आनंद, प्रथम कुमार, रीव बकरानिया
मध्यमा-२, चेस्टरफील्ड पाठशाला

चेरी हिल पाठशाला, उच्च स्तर - १

सनातन धर्म का इतिहास और इसकी विश्व को देन

प्रशम जैन

भारत में सनातन धर्म का गौरवशाली इतिहास विश्व में सर्वाधिक प्राचीन माना जाता है। कहते हैं कि लगभग १४००० विक्रम सम्वत् पूर्व भगवान नील वराह ने अवतार लिया था। नील वराह काल के बाद आदि वराह काल और फिर श्वेत वराह काल हुए। इस काल में भगवान वराह ने धरती पर से जल को हटाया और उसे इंसानों के रहने लायक बनाया था। उसके बाद ब्रह्मा ने इंसानों की जाति का विस्तार किया और शिव ने सम्पूर्ण धरती पर धर्म और न्याय का राज्य कायम किया। सभ्यता की शुरुआत यहीं से मानी जाती है। सनातन धर्म की यह कहानी वराह कल्प से ही प्रारंभ होती है। जबकि इससे पहले का इतिहास भी पुराणों में वर्णित है जिसे मुख्य ५ कल्पों के माध्यम से बताया गया है। यदि भारत के इतने प्राचीन एवं महान सनातन धर्म के इतिहास पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि हिन्दू संस्कृति एवं सनातन वैदिक ज्ञान वैश्विक आधुनिक विज्ञान का आधार शिला रहा है। इसे कई उदाहरणों के माध्यम से हिन्दू मान्यताओं एवं धार्मिक ग्रंथों का हवाला देते हुए समय-समय पर सिद्ध किया जा चुका है।

भारतीय विचार परंपरा में प्रकृति को भी भगवान का दर्जा दिया गया है। हम तो **'क्षिति जल पावक गगन समीरा'** को मानने वाले लोग हैं और **"परस्परोपग्रहो जीवानाम्"** के सिद्धांत पर जीवन जीते हैं। हमारी परंपरा में नदी, पर्वत और जल को पूजे जाने की परंपरा रही है। भारत में आज भी परम्परा अनुसार किसी भी शुभ अवसर पर प्रकृति को भी याद किया जाता है। इसके साथ ही, भारतीय ज्ञान परंपरा में जिन औषधियों की चर्चा मिलती है, आज वे अचानक बेहद महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय हो गई हैं। आज पूरी दुनिया में भारतीय खान-पान की आदतों को लेकर चर्चा हो रही है। भारत में तो हर मौसम के हिसाब से भोजन तय है। मौसम तो छोड़िए, सूर्यास्त और सूर्योदय के बाद या पहले क्या खाना और क्या नहीं खाना ये भी बताया गया है। आज भारतीय पद्धति में वर्णित "भोजन यानि ताजा खाने" की वकालत की जा रही है, फ्रिज में रखे वासी खाने को हानिकारक बताया जा रहा है। कोरोना काल के दौरान पूरी दुनिया ने भारतीय योग विद्या को आशा भरी नजरों से देखा है। आज जब कोरोना का कोई ज्ञात ट्रीटमेंट नहीं है तो ऐसे में श्वसन प्रणाली को ठीक रखने, जीवन शैली को संतुलित रखने के तथ्य को लोगों ने स्वीकारा है। भारत में तो इन चीजों की एक विस्तृत परंपरा रही है।

अतः जब कोई संस्कृति और विचारधारा इतनी समृद्धशाली, विवेकशील, उन्नत, क्रांतिकारी होगी तो फिर उस संस्कृति और विचारधारा की स्वतः उन्नति होगी, स्वतः: ग्रहण करने की प्रेरणा होगी। आज हम यह निश्चित तौर पर कह सकते हैं कि इन्हीं विशेषताओं को लेकर दुनिया भर में सनातन धर्म के प्रति जागरूकता बढ़ी है, सनातन धर्म की विचारधारा को स्वीकार्य करने की क्रियाएं बढ़ी हैं। सनातन धर्म की विचारधारा को आज जीवन की सुखमय प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए एक प्रेरणा दृष्टि के तौर पर देखा जा रहा है और इसे विश्व में शांति और सद्भावना स्थापित करने के लिए एक आवश्यक घटक माना जा रहा है।

सुदीप्ति रेड्डी

योग: विश्व को भारत का योगदान

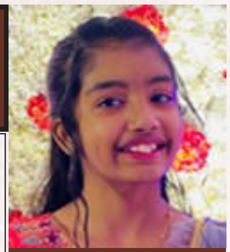
निधि बांगड़

योग क्या है?

योग मुक्ति पाने और इंद्रियों को नियंत्रित करने के लिए एक साधन है। संस्कृत के शब्द युग से योग शब्द आया है, जिसका अर्थ - एकजुट करने के लिए- है। चार वेदों में योग ऋग्वेद से आता है। योग के चार भाग हैं; ध्यान, कर्म, ज्ञान, और भक्ति।

योग का दुनिया में क्या योगदान है?

योग शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। योग मन को शांत करने और एकाग्रता में सुधार लाने में मदद करता है। योग तनाव को भी दूर करता है। पश्चिमी देशों में योग आत्म परिवर्तन और शारीरिक चुस्ती के लिए लोकप्रिय है। योग लचीलेपन और ताकत में सुधार करने में मदद करता है। योग शरीर के दर्द से राहत दिलाने में भी मदद करता है। हिंदू धर्म में यह माना जाता है कि योग मन और शरीर को शुद्ध करने में मदद करता है। योग आपको एक बेहतर इंसान बनाने में मदद करता है।

हिंदू योग और पश्चिमी योग में क्या भिन्नता है?

पश्चिमी योग हिंदू योग से आता है, लेकिन यह बहुत अलग है। हिंदू योग ध्यान साधना और मस्तिष्क की एकाग्रता पर केंद्रित है और पश्चिमी योग केवल शरीर के लचीलेपन पर केंद्रित हैं।

दुनिया भर में लाखों लोग योग का अभ्यास करते हैं। जो देश हमारी संस्कृति को नहीं जानते हैं वे भी अब योग के जरिए भारत से जुड़ रहे हैं।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

अनन्या रेलिया

मुझे सनातन धर्म क्यों अच्छा लगता है?

सनातन शब्द का अर्थ है जो "सदा के लिये सत्य हो"। सनातन धर्म के मूल तत्त्व सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, दान, जप, तप, और नियम हैं। इनका सदैव महत्व रहेगा। सनातन धर्म हिन्दू धर्म का पर्याय है। इसे विश्व का सबसे पुराना धर्म माना जाता है। ओम शब्द सनातन धर्म का सबसे पवित्र शब्द है।

सनातन धर्म की विश्व को देन:

सनातन धर्म सारे विश्व को एक परिवार के समान समझना सिखाता है। यह मानवता का सम्मान करना और अहिंसा के मार्ग पर चलने का उपदेश देता है। सनातन धर्म ने गणित और विज्ञान के तथ्य भी संसार को प्रदान किए हैं।

आरुष वर्मा

सनातन धर्म के कुछ मूल तत्व तथा विशेषताएँ

सनातन धर्म के मूल तत्व 'अहिंसा', 'श्रम', 'दान', 'तप', 'दया', 'जप', 'नियम' इत्यादि हैं।

हिन्दू धर्म आत्मा के अमर होने में विश्वास रखता है। व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसकी आत्मा किसी और शरीर में चली जाती है। नए शरीर का चयन उसके कर्मो के अनुसार होता है। सनातन धर्म कर्म में विश्वास रखता है। हमारे कर्मों के अनुसार ही हमको जीवन भर सुख या दु:ख का अनुभव होता है। सनातन धर्म मोक्ष प्राप्ति में विश्वास रखता है। सनातन धर्म में ४ वेदों को बहुत महत्व दिया गया है। रामायण तथा महाभारत हिन्दू धर्म के लोकप्रिय धार्मिक ग्रन्थ हैं। मुझे अपने सनातन धर्म पर बहुत गर्व होता है।

हमारे प्रसिद्ध मंदिर

मध्यमा-२ पाठशालाओं के लेख

विल्टन हिंदी पाठशाला

मेरा नाम गरिमा अग्रवाल है। मैं मध्यमा-२ की स्तर संचालिका के साथ-साथ विल्टन, कनेक्टिकट पाठशाला में पिछले १३ वर्षो से अध्यापिका भी हूँ। मेरे पति व दोनों बच्चे भी हिन्दी यू.एस.ए. से जुड़े हुए हैं। बच्चों को पढ़ाने के अतिरिक्त मुझे नए-नए व्यंजन बनाने का व किताबें पढ़ने का बहुत शौक है।

मेरा नाम आरिव मुल्की है। मैं विल्टन, कनेक्टिकट में रहता हूँ। मेरी उम्र दस वर्ष है और मैं पाँचवीं कक्षा में पढता हूँ। मुझे तैरना और लेगोस के यन्त्र बनाना पसंद है।

बप्पनाडु मंदिर कर्णाटक में है। इसे आठ सौ वर्ष पहले चौदह शताब्दी में बनाया गया था। इस मंदिर की देवी दुर्गा परमेश्वरी है। इसकी मूर्ति नंदिनी नदी के बीच में मिली थी, जो मुल्की गांव के नजदीक है और इसे एक मुसलमान ने बनाया था। वहाँ एक बहुत (आठ फुट) बड़ा डमरू भी है, जिसे उत्सवों में बजाया जाता है। मैं यहाँ २०२१ में गया था। मुझे यहाँ का प्रसाद खाना अच्छा लगता है।

मेरा नाम सियोना दत्ता है। वेस्टन मिडिल स्कूल में ७वीं कक्षा की छात्रा हूँ। मैं अपना खाली समय चित्रकारी, पियानो बजाने और फिक्शन किताबें पढ़ने में बिताती हैं।

कोणार्क सूर्य मंदिर भारत में ओडिशा राज्य में पत्थर से बना एक प्रसिद्ध मंदिर है। कोणार्क नाम संस्कृत शब्द "कोना" से आया है, जिसका अर्थ है कोण और "अर्क" का अर्थ सूर्य है। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है। मंदिर पानी से बाहर निकलते हुए सूर्य के रथ की तरह दिखता है। मंदिर में २४ खूबसूरती से नक्काशीदार पहिए हैं, दोनों तरफ १२ पहिए हैं। १२ पहिए साल के १२ महीनों का द्योतक है। ७ घोड़े भी हैं जो इंद्रधनुष में ७ रंगों और सप्ताह में ७ दिनों का द्योतक हैं। यह सूर्य मंदिर १२५० में बनाया गया था। इसकी पत्थर की दीवारों पर जटिल नक्काशी आज भी इसे एक लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण बनाती है।

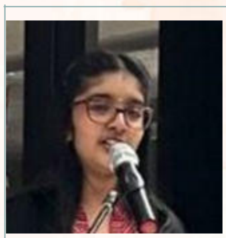

मेरा नाम किआरा पुरबिया है।

श्री **सिद्धिविनायक गणपति मंदिर** एक हिंदू मंदिर है जो भगवान श्री गणेश को समर्पित है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सिद्धिविनायक मंदिर एक छोटे मंदिर से आज के भव्य मंदिर के रूप में विकसित हुआ। इसका निर्माण १९ नवंबर १८०१ को हुआ था। इस देवता की उत्कृष्ट विशेषता सूंड का दाहिनी ओर झुकना है। मूर्ति के चार हाथ (चतुर्भुज) हैं, जिसमें ऊपरी दाहिनी ओर एक कमल, ऊपरी बाईं ओर एक छोटी सी कुल्हाड़ी, नीचे दाईं ओर पवित्र मोती और मोदक से भरा कटोरा है (स्वादिष्टता जो श्री सिद्धिविनायक के साथ एक बारहमासी पसंदीदा है)। देवता के दोनों ओर रिद्धि और सिद्धि हैं, जो पवित्रता, पूर्णता, समृद्धि और धन का प्रतीक हैं। देवता के माथे पर एक आँख उकेरी हुई है, जो भगवान शिव की तीसरी आँख के समान है। श्री सिद्धिविनायक मंदिर जो प्रभादेवी में स्थित है, ग्रेटर मुंबई के इच्छा पूर्ति तीर्थ के रूप में बहुत प्रसिद्ध और पसंदीदा है। यह प्राचीन मंदिर दुनिया भर में अपने भक्तों और तीर्थयात्रियों के लिए सांत्वना पाने के लिए एक पूजा स्थल है।

मेरा नाम कृषा भट्टाचार्जी है। कक्षा ८ में पढ़ती हूँ। मैं वियोला बजाती हूँ, सॉकर खेलती हूँ और गर्ल्स स्काउट का हिस्सा भी हूँ। मुझे संगीत सुनना और सुंदर कलाकृतियां बनाने का भी शौक है।

मीनाक्षी मंदिर मदुरै, तमिलनाडु, भारत में स्थित है। मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर, मदुरै दक्षिणी भारतीय राज्य तमिलनाडु के लोकप्रिय तीर्थ केंद्रों में से एक है। मंदिर देवी मीनाक्षी को समर्पित है। आज लगभग २०,००० लोग प्रति दिन मीनाक्षी मंदिर जाते हैं। मंदिर परिसर के अंदर फोटोग्राफी/वीडियोग्राफी प्रतिबंधित है। मीनाक्षी मंदिर का बहुत समृद्ध पौराणिक और ऐतिहासिक महत्व है। मदुरै में मीनाक्षी अम्मन मंदिर के मंदिर परिसर में ३३,००० से अधिक मूर्तियां हैं। यह मंदिर भारत के सबसे पुराने और सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है, जो अपनी आश्चर्यजनक द्रविड़ शैली की वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। द्रविड़ वास्तुकला का एक प्रमुख स्तंभ, एक गोपुरम आमतौर पर मंदिरों के प्रवेश द्वार को चिह्नित करता है। मंदिर में १४ गोपुरम हैं। आज मीनाक्षी मंदिर भारत के सात आश्चर्यों में शामिल है।

मेरा नाम अन्विता मिश्रा हैं| दुर्गा पूजा के नौवें दिन को मनाने के लिए मैं और मेरा परिवार एक स्कूल में गए जहाँ एक कार्यक्रम आयोजित किया था। यह कार्यक्रम स्टैमफोर्ड में आयोजित किया गया था।| मेरी सहेली ऐशनी और उसका परिवार भी हमारे साथ आया था। मैंने और ऐशनी ने साथ में नृत्य किया।

जीवन में दो मित्र अवश्य होने चहिये, एक कृष्ण जो ना लड़े फिर भी जीत पक्की कर दे ....
और दुसरा कर्ण जो हार सामने हो फिर भी साथ ना छोड़े.....

ट्रंबुल हिंदी पाठशाला

व्योम धीर, अनन्या मयेकर और तृष्णा सिंह

श्री जगन्नाथ मंदिर

श्री जगन्नाथ पुरी मंदिर भारतीय राज्य ओडिशा के सबसे प्रभावशाली स्मारकों में से एक है, जिसका निर्माण गंगा राजवंश के एक प्रसिद्ध राजा अनंत वर्मन चोडगंगा देव द्वारा १२ वीं शताब्दी के पुरी में किया गया था। पुरी का प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर भक्तों के लिए एक प्रमुख स्थान रखता है। यह भारत के चार धाम तीर्थ स्थलों में से एक है।

कामाख्या मंदिर

कामाख्या मंदिर भारत में देवी शक्ति के सबसे प्रतिष्ठित मंदिरों में से एक है। माँ कामाख्या या कामेश्वरी देवी का मंदिर गौहाटी के पश्चिमी भाग में स्थित नीलांचल पहाड़ी के मध्य में स्थित है, जो उत्तर पूर्व भारत में असम राज्य की राजधानी है। माँ कामाख्या को धरती पर मौजूद ५१ शक्तिपीठों में सबसे पवित्र और सबसे पुराना माना जाता है। १६वीं शताब्दी की शुरुआत में मुगलों द्वारा इस मंदिर को लगभग नष्ट कर दिया गया था और कूच बिहार के हिंदू राजा नर नारायण द्वारा १७वीं शताब्दी में पुनर्निर्माण किया गया था।

बद्रीनाथ मंदिर

बद्रीनाथ मंदिर भारत के उत्तराखण्ड राज्य के चमोली जनपद अलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। यह मंदिर हिन्दू देवता विष्णु को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण सातवीं सदी में हुआ था।

केदारनाथ मंदिर

केदारनाथ मंदिर भारत के उत्तराखण्ड राज्य केरुद्रप्रयाग जिले में स्थित है। इस मंदिर में शिव भगवान की पूजा की जाती है। यह मंदिर १२०० साल से भी ज्यादा पुराना है। यह मंदिर चार भारत के चार धामों में से एक है।

सोमनाथ मंदिर

सोमनाथ मंदिर भगवान शिव के लिए जाना जाता है। यह मंदिर बहत्तर साल पुराना भी है। सोमनाथ मंदिर भारत के गुजरात राज्य के सोमनाथ शहर में स्थित है।

अक्षरधाम मंदिर

अक्षरधाम मंदिर उत्तर भारत के नई दिल्ली में स्थित है। इस मंदिर में भगवान स्वामीनारायण, राधा किशन, सीताराम, शिवपार्वती और लक्ष्मीनारायण की मूर्तियाँ स्थित हैं। यह मंदिर १४१ फीट ऊंचा, ३१६ फीट चौड़ा और ३५६ फीट लंबा है, इसीलिए यह मंदिर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दुनिया के सबसे बड़े हिंदू मंदिर परिसर के रूप में दर्ज है।

Learn Hindi
In-Person and Online(Virtual)

Join Hindi Classes in New Jersey and other states

- Classes taught in 9 levels by experienced teachers for children between 5 and 15 years of age
- Structured syllabus tailored for each Hindi level Books written by HindiUSA teachers to match learning goals of defined syllabus
- Reliable organization backed by 18 years of practical experience in teaching
- Adult Hindi classes are also available in certain schools
- Required books are included in registration fee.
- Hindi Poetry Competitions, annual Hindi Mahotsava and many other activities organized throughout the year for the growth of children
- Mid-term/final written and oral exams are conducted

School sessions run between September and June

Classes Held On Fridays between 7:00 PM and 8:30 PM

* A few school have different timing, please contact the respective School Coordinator for the school timing.
All in-person classes will operate in the regular school buildings. Online (virtual) school is available for the students who reside outside of the in-person school areas.
No geographical limitations for the online school. Virtual school classes will be held on Fridays between 7:30 PM and 8:30 PM: (U.S. Eastern Standard Time)

Register online at www.hindiusa.org

For more information and Registration, Contact Rachita Singh: 609-353-8411 or HINDI USA @1-877-HINDI-USA (1-877-446-3487), www.hindiusa.org

सन् २००१ से हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति की सेवा में कार्यरत एक समर्पित संस्था...
पूर्वजों की विरासत हिन्दी भाषा नयी पीढ़ी को सौंपने का एक अभियान

Please contact one of our school coordinators in your area

Locations	Name	Contact	Locations	Name	Contact
Edison, NJ	Manak Kabra	718-414-5429	South Brunswick, NJ	Umesh Mahajan	908-489-8913
Woodbridge, NJ	Shiva Arya	908-812-1253	West Windsor & Plainsboro, NJ	Gulshan Mirg	609-451-0126
Basking Ridge, NJ	Sanjay Gupta	732-331-9342	Cherry Hills, NJ	Venugopal Varma Jay Kumar Jain	609-598-4038 856-236-6272
Chesterfield, NJ	Madhu Rajpal	732-331-5835	East Brunswick, NJ	Swagata Mane	646-415-4072
Montgomery, NJ	Reena Singh Swati Agarwal	908-499-1555 630 796 1259	North Brunswick, NJ	Yogita Modi	609-721-2321
Piscataway, NJ	Saurabh Udeshi Latha Sanjay	732-801-6380 732-318-0384	Monroe, NJ	Dr. Sunita Gulati	732-762-2692
Jersey City, NJ	Manoj Singh	201-233-5835	Lawrenceville, NJ	Rakhi Vaish	732-881-1995
Holmdel, NJ	Ranjana Gupta	908-380-8697	Ellicott City, MD	Murli Tulshyan Sandhya Tulshyan	443-574-4419
Stamford, CT	Manish Maheshwari Babita Gupta	203-522-8888 203-252-9210	Wilton, CT	Amit Agrawal Chetna Mallarapu	630-401-0690 732-593-9827
Avon, CT	Gitanjali Garag Basavaraj Garag	908-848-0723 203-621-8331	Atlanta, GA	Ranjan Pathania	203-993-9631
Needham, MA	Vikram Kaul	203-919-1394	San Diego, CA	Mudita Tiwary	858-229-5820
Trumbull, CT	Ruchi Sharma Sheetal Abbi	203-570-1261 732-322-4801	St. Louis, MO	Mayank Jain	636-575-9348

Online (Virtual) Hindi School: Rajeev Shrivastava | 732-429-8612 (For Students-Worldwide)

Visit our website www.hindiusa.org (1-877-Hindi-USA) or call Rachita Singh: 609-353-8411

प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला

शिक्षिकाएँ- अल्पना भरथुआर व सीमा वशिष्ट

नीति पिचा

श्रीरंगनाथ मंदिर विश्व में विष्णुजी का सबसे बड़ा मंदिर है। यह भारत के तमिलनाडु राज्य के तिरुचिरापल्ली (त्रिची) के श्रीरंगम में स्थित है। यह मंदिर १५६ एकड़ में फैला हुआ है तथा २३९ फीट ऊँचा, ७ प्रकारों और २१ गोपुरम का बना है। इसके मुख्य द्वार को "राजगोपुरम" कहा जाता है। यह मंदिर विशाल परिसर, ग्रेनाइट के १००० स्तंभ कक्ष, वास्तुकला और हर्बल एवं वनस्पति रंगों के उत्तम चित्रों के लिये प्रसिद्ध है।

आरिन दत्त

कामाख्या मंदिर भारत के शक्ति पीठों में से एक है। यह असम राज्य में नीलांचल पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। इस मंदिर में देवी की कोई मूर्ति नहीं है। यहाँ देवी की योनि की पूजा की जाती है। जून के महीने में कामख्या मंदिर के पास से गुजरने वाली ब्रह्मपुत्र नदी लाल हो जाती है।

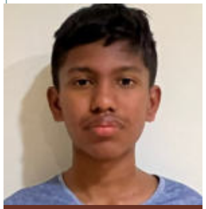
आदित्य रविशंकर

बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण दक्षिण भारत के तंजावुर ज़िले में १००३-१०१० में चोल शासक राजराज चोल ने करवाया था। इस मंदिर के आराध्य देव भगवान शिव हैं। इसके लंबे शिखर की परछाई जमीन पर नहीं पड़ती है। पूरा मंदिर ग्रेनाइट पत्थरों से बनाया गया है। यह मंदिर यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साईट में सम्मिलित है।

वेन्या प्रशांत

भारत प्राचीन काल से ही अपनी सभ्यता व संस्कृति लिए प्रसिद्ध है। हमारी संस्कृति का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे मंदिर हैं। भारत में पूरब से लेकर पश्चिम, उत्तर से लेकर दक्षिण तक कई प्रसिद्ध मंदिर देखने को मिलते हैं। इसमें से **वैष्णवदेवी मंदिर, तिरूपति बालाजी मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर, रामेश्वरम मंदिर, श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर और केदारनाथ मंदिर** बहुत ही मशहूर हैं। हर साल हज़ारों लोग इन मंदिरों के दर्शन करते हैं। मंदिरों के दर्शन करने से हमारे मन को शांति मिलती है।

विवान सबरवाल

वैष्णवदेवी का मंदिर एक विश्व प्रसिद्ध और प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर के जम्मू क्षेत्र में कटरा नगर के समीप की पहाड़ियों में स्थित है। इन पहाड़ियों को त्रिकुटा पहाड़ कहते हैं। यह भारत में तिरुमाला वेंकटेश्वर मंदिर के बाद दूसरा सर्वाधिक देखा जाने वाला धार्मिक तीर्थ स्थल है। त्रिकुटा की पहाड़ियों पर स्थित एक गुफा में माता वैष्णोदेवी की स्वयंभू तीन मूर्तियाँ हैं।

सौम्या सिन्हा

तमिलनाडु राज्य के रामनाथपुरम ज़िले में **रामेश्वरम मंदिर** स्थित है। यह मंदिर हिन्दुओं का एक पवित्र मंदिर है और इसे चार धामों में से एक माना जाता है। जिस तरह उत्तर भारत में काशी का महत्व है, उसी प्रकार दक्षिण भारत में रामेश्वरम का महत्व है। मैं दिसंबर में यहाँ गई थी। भीड़ काफ़ी थी पर पूजा करके बहुत अच्छा लगा। सबसे सुंदर भाग वहाँ पर २२ कुंड में स्नान करना लगा जो अपने आप में एक अद्भुत अनुभव था।

आर्य गुल्हाने

गुजरात के पंचमहल ज़िले में बना पावागढ़ के **महाकाली मंदिर** की ख़ास बात यह है कि यहाँ दक्षिणमुखी काली माँ की मूर्ति है। यह मंदिर पावागढ़ की ऊँची पहाड़ियों के बीच लगभग ५५० मीटर की ऊँचाई पर है। पावागढ़ पहाड़ी की शुरुआत प्राचीन गुजरात की राजधानी, चंपानेर से होती है। यहाँ १४७१ फ़ीट की ऊँचाई पर “माची हवेली” स्थित है। मंदिर तक जाने के लिये माची हवेली से रोप-वे सुविधा है। यहाँ से पैदल मंदिर तक पहुँचने के लिये लगभग २५० सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।

काशी विश्वनाथ मंदिर

कौस्तुभी सिन्हा

कौस्तुभि सिन्हा ११ वर्ष की हैं और न्यू जर्सी के मोनरो में रहती हैं। उसे भारत में अपने दादा-दादी के साथ अंताक्षड़ी खेलने में आनंद आता है। उसका पसंदीदा रंग नीला है, और उसे तैरना, बाइक चलाना और तुरही (ट्रम्पेट) बजाना अच्छा लगता है।

काशी दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है। आदि शंकराचार्य, गोस्वामी तुलसीदास, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद और गुरु नानक जैसे कई महान संत गंगा के पवित्र जल में स्नान करने के लिए वाराणसी (जिसे काशी भी कहा जाता है) आए थे। जिसके बाद काशी के पवित्र मंदिर काशी विश्वनाथ के दर्शन भी किए थे। काशी विश्वनाथ मंदिर भारत का एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित मंदिर है क्योंकि यह १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है जो भगवान शिव का प्रतिनिधित्व करता है। यह मन्दिर तीन बार तोडा गया था! भगवान शिव का सुंदर मंदिर विक्रमादित्य ने बनवाया था। ११९४ में कुतुबुद्दीन ऐबक ने असनी की लड़ाई में जय चंद्र को हराया और बनारस पर कब्जा कर लिया। हसन निजामी की एक पुस्तक “ताज-उल-मासीर” के अनुसार "वहाँ से (असनी) शाही सेना ने बनारस की ओर हमला किया, जो हिंदुस्तान का केंद्र है।” यहाँ सेना ने लगभग १,००० मंदिरों को ध्वस्त कर दिया, जिसमें काशी विश्वनाथ भी शामिल है। राजा टोडरमल के पुत्र गोबर्धन दास द्वारा लगभग १२५ वर्षों के बाद मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया था। एक इतिहासकार, साकी मुस्तैद के अनुसार, "१७ जिलक़दा, हिजरी १०७९ (१८ अप्रैल,१६६९) को बादशाह को पता चला कि बनारस में मूर्ख ब्राह्मण स्कूलों में अपनी बेकार की किताब पढ़ाते हैं, और हिंदू और मुस्लिम दोनों छात्र आते हैं।” यह सुनकर, धर्म के संरक्षक सम्राट ने विद्वानों को गैर-विश्वासियों के सभी स्कूलों और मंदिरों को ध्वस्त करने का आदेश जारी किया। काशी विश्वनाथ मंदिर को भी तोड़ा गया। १८८८ में इंदौर की महारानी अहिल्या बाई होल्कर ने ज्ञानवापी मस्जिद से सटे काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने १८३९ में मंदिर के दो शिखरों की सजावट के लिए ८२१ किलो सोना दान किया था। जैसाकि आप देख सकते हैं, काशी विश्वनाथ मंदिर भारत के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है क्योंकि यह बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

मोनरो हिंदी पाठशाला

अक्षज नारायणा

स्वर्ण मंदिर - पंजाब: १९८० में इसे सोने से ढक दिया गया था और सामग्री महाराजा रणजीत सिंह द्वारा दान की गई थी।

मुंडेश्वरी मंदिर - बिहार: यह दुनिया का सबसे पुराना हिंदू मंदिर है।

कोणार्क सूर्य मंदिर - उड़ीसा: इसे सूर्य देव का विशाल रथ माना जाता है।

खजुराहो मंदिर - मध्य प्रदेश: ये चंदेल राजवंश के शासकों द्वारा निर्मित मंदिरों का समूह है।

मीनाक्षी मंदिर - तमिलनाडु: यह मुख्य प्रवेश द्वार पर अपने ३ मंजिला गोपुरम के लिए प्रसिद्ध है।

रामनाथस्वामी मंदिर - तमिलनाडु: इस मन्दिर में भारत के सभी हिंदू मंदिरों में सबसे लंबा गलियारा है।

हमारे प्रसिद्ध मंदिर

नमस्ते! मेरा नाम रोहित है। मैं पाँचवीं कक्षा में हूँ। मैं मनरो टाउनशिप, न्यू जर्सी में रहता हूँ। मुझे क्रिकेट खेलना और किताबें पढ़ना पसंद है। मेरी पसंदीदा किताब हैरी पॉटर है और पसंदीदा क्रिकेटर रोहित शर्मा है।

मैं सनातन धर्म के पाँच मंदिरों की बात करने जा रहा हूँ। इन मंदिरों में कुछ तो खास है।

तंजावुर बृहदीश्वर मंदिर तमिलनाडु में है। मुख्य देवता एक बड़े शिवलिंग के रूप में भगवान बृहदीश्वर हैं। इसका निर्माण चोल राज्य में हुआ था। यह मंदिर वास्तुकला में चोल की उपलब्धियों को दर्शाने के लिए राजा चोझान द्वारा बनवाया गया था। वहाँ के नंदी एक ही पत्थर के बने हुऐ हैं। मीनार की छाया धरती पर नहीं पड़ती। भारत के सबसे ऊँचे मंदिरों में यह मंदिर भी एक है।

तिरुपति बालाजी मंदिर, आंध्र प्रदेश के तिरुपति में है। मुख्य देवता भगवान बालाजी हैं। यह भारत का सबसे धनवान और सबसे ज्यादा देखा जाने वाला मंदिर है। मूर्ति, भगवान बालाजी, ६१४ ईस्वी से वहाँ है। तिरुपति में लोग आशीर्वाद के रूप में अपने बाल मुंडवाते हैं। मंदिर तक पहुँचने के लिए हमें ७ पहाड़ियों को पार करना पड़ता है। तिरुपति मंदिर के लड्डू बहुत प्रसिद्ध हैं।

श्रीरंगम रंगनाथ स्वामी मंदिर त्रिची, तमिलनाडु में है। मुख्य देवता भगवान विष्णु आदिशेष पर लेटे हुए हैं। यह सबसे बड़ा सक्रिय हिंदू मंदिर है। यहाँ २१ मीनारें हैं। इसमें गरुड़ के लिए सबसे बड़ा मंडप है। वर्ष के ३२२ दिनों में यहाँ त्यौहार मनाए जाते हैं।

गुरुवायुरप्पन मंदिर केरल, भारत में है। गुरुवायुरप्पन के रूप में मुख्य देवता भगवान कृष्ण हैं। यह लगभग ५००० वर्ष पुराना है। मंदिर में ५६ हाथी हैं।

मदुरै मीनाक्षी अम्मन मंदिर तमिलनाडु में है। मुख्य देवता मीनाक्षी अम्मन हैं। इसमें १००० स्तंभ हैं। यहाँ १२ ऊँची मीनारें हैं जिनका हर १२ वर्ष में पुनर्निर्माण किया जाता है। एक स्वर्ण कमल का तालाब है। वहाँ लगभग ३३,००० मूर्तियाँ हैं।

भारत कई विविध संस्कृतियों और धर्मों का घर है।

भारत की संस्कृति प्राचीन है और यहां मंदिरों की विशेष मान्यताएँ हैं। यहाँ हजारों मंदिर अस्तित्व में हैं। भारत के कुछ प्रमुख मंदिरों के नाम यहाँ दिये किए हैं।

भगवान गणेश को समर्पित **सिद्धिविनायक मंदिर** महाराष्ट्र राज्य के प्रभादेवी, मुंबई में स्थित है। यह मुंबई के महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है।

श्री जगन्नाथ मंदिर उड़ीसा राज्य के पुरी में भगवान जगन्नाथ (श्री कृष्ण) को समर्पित है।

इस मंदिर को चार धामों में से एक माना जाता है। भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है विश्व प्रसिद्ध

सबरीमाला का मंदिर जहाँ लाखों लोग भगवान अय्यप्पा स्वामी के दर्शन करने के लिए आते हैं। चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरा हुआ यह मंदिर केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम की पहाड़ियों पर स्थित है। प्रतिदिन श्रद्धालु दृढ़ संकल्प, भक्ति, अटूट विश्वास के साथ मंदिर में भगवान के दर्शन करने जाते हैं और परम आनंद की अनुभूति करते हैं। वेदांत उमेश

प्लेन्सबोरो हिंदी पाठशाला

तनिशी मित्रा, सानिका गोलेच्छा

तनिशी मित्रा

उत्तर में **स्वर्ण मंदिर** है, जो अमृतसर में स्थित है। यह मंदिर सिखों के लिए सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है और अपने पूरे सुनहरे गुंबद के लिए प्रसिद्ध है। इसे श्री हरमंदिर साहिब मंदिर के रूप में भी जाना जाता है और "गुरु का लंगर" हर रोज मुफ्त भोजन प्रदान करता है, जिसका हजारों लोग आनंद लेते हैं।

सानिका गोलेच्छा

श्री जगन्नाथ पुरी मंदिर भारत के पूर्व में ओडिशा के पुरी में स्थित है; यह सबसे पुराने हिंदू मंदिरों में से एक है और विष्णु के एक रूप जगन्नाथ को समर्पित है। वार्षिक रथ यात्रा, या रथ उत्सव देखने के लिए हजारों लोग पुरी आते हैं। तीन प्रमुख देवताओं को विशाल और सजी हुई मंदिर की से खींचा जाता है, और उनके नाम भगवान जगन्नाथ, देवी सुभद्रा और भगवान बलभद्र हैं।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश में स्थित है और इसे तिरुपति मंदिर के नाम से जाना जाता है। भगवान वेंकटेश्वर के सिर पर काला मुकुट शुद्ध हीरे से बना है जिसे दुनिया का सबसे कीमती एकल आभूषण माना जाता है।

भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात के सौराष्ट्र में स्थित **श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर** है। यह शिव के बारह ज्योतिर्लिंग मंदिरों में से एक है, और मंदिर एक त्रिवेणी संगम के बगल में स्थित है जहाँ तीन नदियाँ, हिरन, कपिला और सरस्वती अरब सागर से मिलती हैं। सोमनाथ मंदिर हिंदूओं का सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक स्थलों में से एक है।

बद्रीनाथ मंदिर उत्तराखण्ड में स्थित है। बद्रीनाथ मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है।

राणकपुर मंदिर राजस्थान में स्थित है। राणकपुर मंदिर एक ही संगमरमर की स्लैब से बनी पार्श्वनाथ भगवान की सुंदर नक्काशीदार मूर्ति के लिए जाना जाता है।

सूर्य मंदिर उड़ीसा में स्थित है। सूर्य मंदिर हिंदू भगवान सूर्य को समर्पित है।

किसी बड़ी परेशानी के समय आपको ये सात गुण बचायेंगे: आपका ज्ञान या शिक्षा, आपकी विनम्रता, आपकी बुद्धि, आपके भीतर का साहस, आपके अच्छे कर्म, सच बोलने की आदत और ईश्वर में विश्वास॥

स्टैम्फर्ड हिंदी पाठशाला

केदारनाथ मंदिर, उत्तराखण्ड

प्रताप शर्मा

केदारनाथ मंदिर भारत के उत्तराखंड राज्य में ऋषिकेश से २२१ कि.मी. दूर मंदाकिनी नदी के पास स्थित एक बहुत प्रसिद्ध और पुराना हिंदू मंदिर है। यह मंदिर लगभग १२०० साल पहले बनाया गया था, और भगवान शिव को समर्पित है। केदारनाथ नाम का अर्थ क्षेत्र का स्वामी होता है। पांडवों (पांच दिग्गज भाइयों- युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव) ने इस मंदिर का निर्माण किया था, और आदि शंकराचार्य (एक गुरु) द्वारा इसका पुनर्निर्माण किया गया था। यह मंदिर Little Ice Age के दौरान ४०० वर्षों तक बर्फ के नीचे था। इसके अतिरिक्त केदारनाथ मंदिर चमत्कारिक रूप से २०१३ की बाढ़ से बच गया, क्योंकि एक शिलाखंड मंदिर की ओर लुढ़क रहा था, लेकिन २-३ मीटर दूर होने पर लुढ़कना बंद हो गया और इस शिलाखंड ने मंदिर को बाढ़ से बचा लिया। इस मंदिर तक जाने के लिए कोई सीधा कार मार्ग नहीं है। हमें या तो घुड़सवारी से, हेलिकॉप्टर से या १४ मील लंबी पैदल यात्रा करके जाना पड़ता है। तीर्थ यात्रियों के लिए यह खूबसूरत मंदिर भारी बर्फबारी के कारण केवल ६ महीने ही खुल सकता है।

बिरला मंदिर, जयपुर

रिया शर्मा

बिरला मंदिर जयपुर, राजस्थान में है। बिड़ला मंदिर १९८८ में बनाया गया था और यह पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बना है। बिड़ला परिवार ने इसे हिंदू देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु के लिए बनाया था। अन्य हिंदू देवताओं के साथ मंदिर के अंदर उनकी बहुत सारी तस्वीरें हैं। इसके अलावा कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। यह वृक्षों से घिरा हुआ है। इसमें रंगीन काँच की खिड़कियाँ भी हैं। संगमरमर का मंदिर रात में चमकता प्रतीत होता है।

श्री काशी विश्वनाथ मंदिर, बनारस

अमेया अग्रवाल

क्या आप जानते हैं कि काशी विश्वनाथ बनारस का सबसे पुराना मंदिर है? यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, और बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जिसे सभी शिव मंदिरों में सबसे पवित्र माना जाता है। बनारस को हिंदू धर्म और भगवान शिव की नगरी के रूप में भी जाना जाता है। मंदिर पवित्र गंगा नदी के घाटों के पास स्थित है। बनारस मेरी माँ की जन्मभूमि है, और मेरे नाना-नानी का आज भी वहाँ एक घर है। मंदिर के शिखर पर ८०० किलो सोना चढ़ा हुआ है। इसे हिंदुओं का तीर्थस्थल माना जाता है और हर साल लगभग ७० लाख श्रद्धालु इस मंदिर में आते हैं। मंदिर ने कई वर्षों में विनाश और पुनर्निर्माण के कई चरणों को देखा है। हाल ही में भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मंदिर और इसके आसपास के क्षेत्र को इसके पूर्व गौरव को बहाल करने के लिए बड़े पैमाने पर बहाली और सौंदर्यीकरण की पहल की है।

भगवती छिन्नमस्तादेवी मंदिर, हिमाचल प्रदेश

मान्या पूरी

हिमाचल प्रदेश देवी देवताओं की भूमि है। यहाँ के हर कोने में किसी न किसी देवी देवता का मंदिर

स्थित है, और हर मंदिर का अपना महत्व है।

हिमाचल में मुख्य ५१ शक्ति पीठ हैं जो मुख्यतः देवी सती के ही रूप हैं। आज आपको जिस देवी के तीर्थ स्थल के बारे में बताने जा रही हूँ वह हिमाचल के ऊना जिले में स्थित माता चिंतपूर्णी का मंदिर है। चिंतपूर्णी अर्थात चिंता को दूर करने वाली माता। चिंतपूर्णी माता को छिन्मस्तिका के नाम से भी पुकारा जाता है। छिन्मस्तिका का अर्थ है एक ऐसी देवी जो बिना सर के है। कहा जाता है कि इस स्थान पर माता सती के चरण पड़े थे। यह माता भगवती छिन्नमस्ता देवी का पुराना मंदिर है। सनातन धर्म के पवित्र ग्रंथों में से एक श्री मार्कंडेय पुराण के अनुसार सभी असुरों का वध करने के बाद और बड़े युद्ध में जीत के बाद माँ भगवती की २ 'सहयोगिनी', जया और विजया, जिन्होंने विभिन्न असुरों का वध किया था और उनका खून पिया था अभी भी और खून की प्यासी थी। इसलिए माँ ने अपना सिर काट लिया और अपने ही रक्त से अपनी सहयोगियों की प्यास बुझाई। तभी से माँ भगवती के इस रूप को माँ छिन्नमस्तिका या माता छिन्नमस्ता कहा जाने लगा।

श्री दुर्गा मल्लेश्वर स्वामी मंदिर, विजयवाडा

शैवी पुनुकोल्लू

श्री दुर्गा मल्लेश्वर स्वामी का देवस्थानम, जिसे कनक दुर्गा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, इंद्रकीलाद्री पहाड़ियों की चोटी पर विजयवाड़ा में स्थित है। यह यहाँ स्थायी रूप से स्थापित होने के लिए जाना जाता है. क्योंकि दुर्गादेवी ने महिषासुर से युद्ध किया और विजयवाड़ा में विश्राम किया। कनक दुर्गा मंदिर त्रिभुवन मल्ल, अर्जुन और राजा गोपीनाथ द्वारा निर्मित किया गया माना जाता है, और ५०० से अधिक वर्षों से भक्त यहाँ आ रहे हैं। यहाँ मुख्य रूप से दुर्गादेवी की पूजा होती है, विशेष रूप से महिषासुर मर्दानी, और लक्ष्मी देवी के रूप में। नवरात्रि के नौ दिनों में मंदिर में लोग विभिन्न पूजा, सजावट, नाटक और समारोह करके जश्न मनाते हैं। कनक दुर्गा भारत के सबसे बड़े मंदिरों में से एक मंदिर है। आंध्र प्रदेश में दूसरा सबसे बड़ा मंदिर है तिरुपति बालाजी है।

बड़ा गणपति मंदिर, मध्य प्रदेश

स्तुति जोशी

बड़ा गणपति मंदिर धार, मध्य प्रदेश में स्थित है । राजा भोज नाम के एक राजा ने यह मंदिर बनवाया था। यह मंदिर तीन हजार (३,०००) साल पुराना है। इस मंदिर में भगवान गणेश रिद्धि और सिद्धि के बीच विराजमान हैं। "स्वर्ग कर्मो यजते"। परम्परानुसार पौराणिक युग में गणेश देवस्थान को "स्वर्ग कोमो मंदिर" भी कहा गया है। इस मंदिर में काई पीढियों से मेरे पूर्वज (जो कौशिक गोत्र के हैं) पुजारी हैं। कुँज मुँज तालाब के किनारे प्रकृति से भरपूर गणेश मंदिर बहुत ही आकर्षक दिखता है। हम दूर्वा, मोदक का भोग लगाकर भगवान गणेश की पूजा करते हैं। हर वर्ष गणेश स्थापना पर्व पर अनेक शहरों और गावों से लोग अर्चना करने आते हैं और पांच क्विंटल लड्डू का भोग लगता है।

श्री रंगनाथस्वामी मंदिर, तमिलनाडु

सान्वी कुलकर्णी

श्री रंगनाथस्वामी मंदिर दुनिया के सबसे सुव्यवस्थित और सबसे बड़े मंदिरों में से एक है। यह प्रसिद्ध मंदिर तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली में स्थित है। ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण विजयनगर काल (१३३५-१५६५) के दौरान हुआ था। श्री रंगनाथस्वामी मंदिर में ८१ मंदिर, २१ गोपुरम और ३९ मंडप हैं। यह मंदिर १५५ एकड़ भूमि में फैला हुआ है। ९५३ अखंड स्तंभ मंदिर को सुशोभित करते हैं। इस मंदिर में श्री

वैष्णव को तेलकायी परंपरा का पालन करता है। मुख्य देवता, भगवान रंगनाथ यानि विष्णु की पूजा मंदिर के गर्भगृह में की जाती है। यह मंदिर विमान के अकार में है और इसको रंगा विमान भी कहा जाता है। यह विमान समुद्र मंथन के दौरान उद्भव हुआ था और इसे वैकुण्ठ में रखा गया था। सूर्य वंश के राजा इक्ष्वाकु ने इसे अयोध्या लाए थे, जहाँ श्रीराम जी ने इसको विभीषन जी को भेट स्वरूप में दिया था। कहा जाता है जब विभीषण जी इसे लंका ले जाते समय कावेरी के तट पर रुके, यह विमान वहीं स्थित हो गया। इसीलिए श्री रंगनाथ जी की मूर्ति ने पूर्व - पश्चिम दिशा में सोए हुए और दक्षिण की तरफ मुँह किया हुआ है। श्री रंगनाथस्वामी मंदिर वास्तव में भारत के सबसे अद्भुत मंदिरों में से एक है।

गुरुवायुर मंदिर, केरल

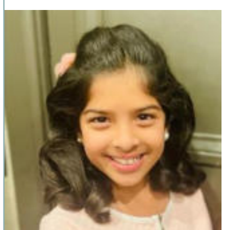
मानसी पंडलाई

मान्यता है कि इस मंदिर में शिवजी की पहली पूजा हुई थी। इंद्र की अध्यक्षता में देवताओं ने पुष्प की वर्षा की और नारदजी ने बहुत सारे गीत गाए। मूर्ति की स्थापना बृहस्पति को और खुली वायु में की गई थी, इसीलिए यह स्थान गुरुवायुरप्पन मंदिर के नाम से जाना जाने लगा। इसका अर्थ है "गुरुवायूर के भगवान"॥ यह मंदिर इतना महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह मंदिर कृष्ण भगवान को समर्पित हैं. क्योंकि यहाँ उनके गुरुवायुरप्पन रूप को पूजा जाता है। इस मंदिर की उत्पत्ति सर्वविदित है। जब राजा सुप्त और उनकी पत्नी ने भगवान ब्रह्मा से प्रार्थना की, और बहुत देर प्रार्थना करने के बाद राजा को विष्णु द्वारा दी गई कृष्ण की मूर्ति मिली। राजा और रानी ने प्रार्थना की कि उनका पुत्र भगवान जैसा ही हो। विष्णु भगवान ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे तीन अवतार लेंगे। पहली बार उनका जन्म प्रसंग गर्भ के रूप में हुआ था। उन्होंने लोगों को ब्रह्मचर्य का महत्व सिखाया था। दूसरी बार उन्होंने कश्यप और अदिति के रूप में जन्म लिया और विष्णु भगवान ने वामन अवतार का रूप धारण किया। तीसरी बार उन्होंने कृष्ण के माता पिता वासुदेव और डेविल के रूप में जन्म लिया।

श्री जगन्नाथ स्वामी मंदिर, ओडिसा

चंद्रला कुलकर्णी

यह प्रसिद्ध मंदिर ओडिसा के पूरी में स्थित है। भगवान जगन्नाथ जी को कृष्ण के रूप में पूजा जाता है। राजा इन्द्रद्युम्ना ने भगवान विष्णुजी के आशीर्वाद से इस पवित्र मंदिर को बनवाया था। भगवान जगन्नाथ की मूर्ति लकड़ी की बनी है। इसे हर १२ साल में बदलते हैं। यह मंदिर ४००००० वर्ग फुट से अधिक में फैला हुआ है और ६५ मीटर लम्बा है। श्री जगन्नाथ मंदिर अपनी वार्षिक रथ यात्रा के लिए भी प्रसिद्ध है। ३ देवताओं को विशेष रूप से सजाये गए रथ में लेकर रथ यात्रा की जाती है। भगवन श्री कृष्ण, सुभद्रा और बलराम जी ऐसे ३ देवताओं का आराधन इस मंदिर में होता है। हर रोज एक पुजारी मंदिर के ऊपर चढ़कर मंदिर का ध्वज बदल देता है। ऐसा कहा जाता है कि ऐसा न करने पर मंदिर १४ साल तक बंद हो जाता है। जगन्नाथ पुरी भगवान को चढ़ाये जाने वाली प्रसाद के लिए भी प्रसिद्ध है। एक दिन में ६ बार प्रसाद का भोग चढ़ाया जाता है। यह मंदिर भारत के चार धाम में से एक है।

अक्षरधाम मंदिर, अहमदाबाद

आर्या जैन

अहमदाबाद के गाँधीनगर में अक्षरधाम मंदिर गुजरात के प्रमुख सांस्कृतिक केंद्रों मे से एक है। १९९२ से इस मंदिर की स्थापना हुई थी और भगवान स्वामीनारायण को समर्पित है। यह मंदिर कला का अद्भुत नमूना है। यह मंदिर हरे-भरे पेड़-पौधों से सुशोभित है। मंदिर में स्थित बच्चों को खेलने के लिए उद्यान भी हैं।

वैष्णोदेवी मंदिर, जम्मू कश्मीर

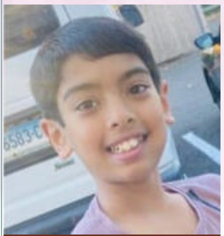
यश पंडलाई

वैष्णोदेवी मंदिर को श्री वैष्णो देवी माता मंदिर या वैष्णो देवी भवन के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर वैष्णो देवी और माँ दुर्गा को समर्पित है। यह भारत में जम्मू और कश्मीर में त्रिकूटा पहाड़ियों की ढलान पर कटरा रियासत में स्थित है। यह १०८ महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। यह मंदिर माँ दुर्गा का प्रमुख स्वरूप है। यह भारत के सबसे अधिक ध्यान दिए जाने वाले पवित्र अभियानों में से एक है। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं। यह भारत के सबसे अमीर मंदिरों में से एक है, जिसकी कमाई १६ बिलियन डॉलर है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि इसकी पवित्र गुफाऐं लगभग एक लाख वर्ष पुरानी है, जिससे यह “माता वैष्णों देवी मंदिर” एक प्राचीन मंदिर बन जाता है।

महाकालेश्वर मंदिर, उज्जैन

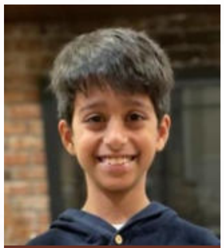
आशय पाराशर

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग एक हिंदू मंदिर है जो शिव को समर्पित है और बारह ज्योतिरलिंग में से एक है, जिन्हें शिव का सबसे पवित्र निवास कहा जाता है। यह भारत के मध्य प्रदेश राज्य के प्राचीन शहर में स्थित है। मंदिर पवित्र नदी शिप्रा के किनारे स्थित है। शिव भगवान अपने वैभव से उज्जैन शहर में सदा ही शासन करते हैं। महाकालेश्वर मंदिर का शिखर आकाश में उड़ते हुए अपनी महिमा के साथ एक प्रभावशाली विस्मय और श्रद्धा पैदा करता है। महाकाल शहर और उसके लोगों के जीवन पर हावी है और प्राचीन हिंदू परंपराओं के साथ एक अटूट रिश्ता प्रदान करता है। महाशिवरात्रि के दिन मंदिर के पास एक विशाल मेला लगता है और रात भर पूजा चलती रहती है।

माता-पिता पूजन दिवस उत्सव २०२३

मानक काबरा

इस वर्ष मार्च २०२३ में हिंदी यू एस ए के एडिसन, साउथ ब्रंसविक और प्लेंसबोरो पाठशालाओं ने मात-पिता पूजन दिवस मनाया, जिसमे हमारे विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ के भाग लिया ।इसका उद्देश्य हमारी आने वाली पीढ़ी को माता-पिता के लिए श्रद्धा और उनके प्रति प्रेम को दिखाना था ।यह कार्यक्रम लगभग ४० मिनट का था और १६० विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया (एडिसन (७०), साउथब्रंसविक (५०) और प्लेंसबोरो(४०)) ।

इसकी शुरुआत गुरु के प्रति प्रेम और प्रार्थना से हुई जिसको एडिसन की एक छात्रा ने कत्थक नृत्य के द्वारा प्रस्तुत किया ।जिसके बाद सभी को एक पूजा की थाली दी गयी जिसमे पुष्प, कुमकुम, चावल, मिठाई और दिया था ।मंत्रोच्चारण के साथ प्रारम्भ हुई मात-पिता पूजन विधि, बच्चों ने खूब भाव से विधि का पालन करते हुए पूजा संपन्न की तत्पश्चात अपने माता-पिता को तिलक कर उनकी आरती उतार कर उन्हें मिठाई प्रसाद के रूप में खिलाकर उनका आशीर्वाद लिया ।

छात्र-छात्राएं अपने माता-पिता को तिलक लगाकर उनकी पूजा करते हुए.......

इस तरह के कार्यक्रम के आयोजन के लिए पाठशाला के अभिभावकों ने हिंदी यू. एस. ए का धन्यवाद किया और इसे हर वर्ष मनानेमें रूचि एवं सहमति जतायी ।हिंदी यू. एस. ए भारतीय संस्कृति के प्रोत्साहन लिए जो भी संभव हो सकेगा वो हमारी अगली पीढ़ी के लिए करेगा ।

कर्महीन मनुष्य" हमेशा किस्मत को कोसते हुए शिकायतों का अंबार लगा देता है।

जर्सी सिटी हिंदी पाठशाला

मध्यमा-२, जर्सी सिटी: आर्या साह, आयुष सिन्हा, अद्वैत चोपड़े, अनय वर्मा, अनाया कुरुप, एनासेली गुप्ता, हरिता महेंद्र चौहान, ईश्वरी निकम, कीर्ति डागा, कृशिव हिराय, मनस्विनी श्री अभिज्ञा बोड्डुपल्ली, प्रथमेश वर्मा, सिमरन कौर रंधावा, तिशा अवस्थी, चहल जैन

हमारी हिंदी यू.एस.ए. जर्सी सिटी पाठशाला के विद्यार्थियों ने मंदिरों पर शोध किए और सबको अवगत करवाया। चार धाम मंदिरों में बद्रीनाथ और केदारनाथ के बारे में आर्या साह और अनाया कुरुप के अनुसार बद्रीनाथ भगवान विष्णु को समर्पित हैं और स्वामी आदि शंकराचार्य ने इसकी स्थापना की है। केदारनाथ मंदिर उत्तराखंड में हिमालय पर्वत की गोद में १२ ज्योर्तिलिंगों में सम्मिलित होने के साथ-साथ चार धाम और पंच केदार में से भी एक है। यहाँ की प्रतिकूल जलवायु के कारण यह मंदिर अप्रैल से नवंबर माह के मध्य ही दर्शन के लिए खुलता है। अनय वर्मा की खोज के अनुसार सोमनाथ भी ऐसा ही एक महत्वपूर्ण मंदिर है। सोमनाथ मंदिर गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र के वेरावल शहर में स्थित है और यह मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में पहला माना जाता है। आयुष सिन्हा ये कहते हैं कि ओडिशा के कोणार्क सूर्य मंदिर का निर्माण १३वीं शताब्दी में गंगवंश के राजा नरसिंह देव ने किया था। यह मंदिर २४ पहियों पर टिका है जो दिन के चौबीस घंटों को दर्शाते हैं और इस मंदिर के ७ घोड़े सप्ताह के सात दिनों के प्रतीक हैं। अद्वैत चोपड़ा की जानकारी से ये प्राप्त होता है कि बृहदीश्वर मंदिर तंजौर, तमिल नाडु में है। मंदिर की सबसे ज्यादा खास बात है यह है कि मंदिर की छाया जमीन पर नहीं बनती है। एनासेली गुप्ता का अनुसन्धान यह बताता है कि साँची का स्तूप मध्य प्रदेश में स्थित एक प्रसिद्ध बौद्ध स्मारक है। साँची स्तूपों का निर्माण ५ वीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था। साँची स्तूप सांची का अर्थ है "आध्यात्मिक स्मारक"।

हरिता महेंद्र चौहान के अन्वेषण के अनुसार वैष्णो देवी मंदिर भारत में सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह जम्मू और कश्मीर के त्रिकुटा पर्वत पर कटरा में स्थित है। इस कारण वैष्णो देवी को कभी-कभी त्रिकुटा के नाम से भी जाना जाता है। इसके अतिरिक्त देवी दुर्गा को समर्पित आठ शक्तिपीठों में से यह एक है। ईश्वरी निकम के अनुसन्धान के अनुसार सिद्धिविनायक मंदिर गंणपति बप्पा का दूसरा नाम है। यह मंदिर दादर मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित है, जिसकी स्थापना १८०१ में हुई थी। सिद्धिविनायक मंदिर में आने-जाने के लिये दो मुख्य द्वार हैं और उनके नाम रिद्धि - सिद्धि है। मंदिर में भगवन गणपतिबप्पा की अति सुन्दर मूर्ति स्थापित है जिसे देख कर भक्तगण तृप्त हो जाते हैं। गंगोत्री मंदिर उत्तराखंड में स्थित है। कीर्ति डागा की खोज से यह प्रकट होता है कि यह भी चार धामों में से एक है। यह मंदिर देवी गंगा को समर्पित है। गंगोत्री १८वीं शताब्दी में अमर सिंह थापा ने बनवाया था। गंगा भारतीय इतिहास की सबसे पवित्र नदी है। कृशिव हिराय अमृतसर के स्वर्ण मंदिर की विशेषता बताते हैं कि यह मंदिर बहुत सुंदर है और शुद्ध सोने से सजाया गया है। वह कहते हैं कि यह मंदिर भारत में सिख लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण मंदिर है। वाराणसी उत्तरप्रदेश में काशी विश्वनाथ मंदिर के बारे में शोध करते हुए मनस्विनी बोड्डुपल्ली ने पाया कि यह मंदिर महादेव शिवजी का है और १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जो गंगा नदी के किनारे स्थित है। प्रथमेश वर्मा के अनुसार जगन्नाथ मंदिर का इतिहास

बहुत पुराना है और यह सतयुग से निर्मित है। पुरी का जगन्नाथ मंदिर पहली बार १०वीं शताब्दी में राजा जाजति केसरी द्वारा बनवाया गया था और इसे १२वीं शताब्दी में अनंगभिमा देव द्वारा पूरी तरह से पूरा किया गया था। सिमरन कौर तिरुमाला, आंध्र प्रदेश में तिरुपति बालाजी मंदिर के बारे में बताती हैं कि दक्षिण भारत का यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह मंदिर भगवान वेंकटेश्वर को समर्पित है जो भगवान विष्णु के अवतार थे और यह मंदिर समुद्र तल से ८५३ मीटर ऊपर है और शुद्ध सोने से ढका हुआ है, जो इसे आंखों के लिए एक आश्चर्य की बात है। तिशा अवस्थी मदुरै में मीनाक्षी मंदिर के बारे में कहती हैं कि प्रवेश द्वार लगभग ४०-५० मीटर लंबा है। यह मंदिर देवी पार्वती को समर्पित है और यह एक बहुत ही पवित्र मंदिर है।

करणी माता मंदिर

मेरा नाम सिद्धार्थ अग्रवाल हैं। मैं विल्टन पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे ट्रम्पेट बजाने का शौक हैं। मैं कराटे भी सीखता हूँ।

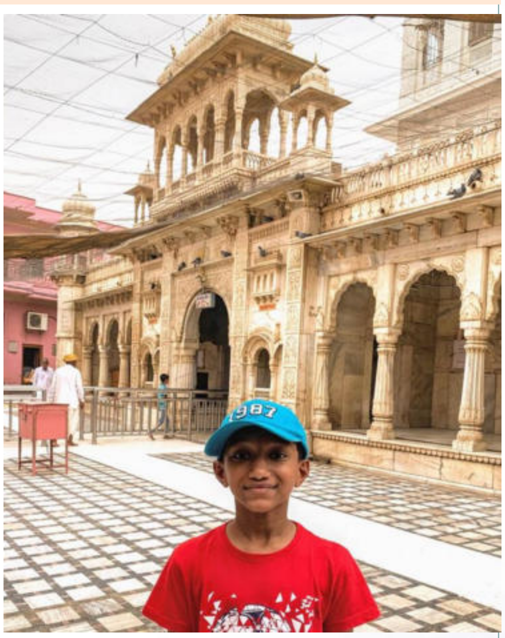

आइए आपको एक अनोखे प्रसिद्ध मंदिर के बारे में बताते हैं। करणी माता मंदिर, बीकानेर राजस्थान भारत में हैं। करणी माता देवी दुर्गा का अवतार हैं। मंदिर में पच्चीस हजार चूहे हैं। सफेद चूहे को देखना अत्यधिक शुभ माना जाता है क्योंकि उन्हें करणी माता का पुत्र माना जाता है। कहानी यह है कि करणी माता के सौतेले पुत्र लक्ष्मण पानी पीने का प्रयास करते समय कपिल सरोवर में डूब गए, करणी माता ने मृत्यु के देवता से प्रार्थना की, इसलिए उन्होंने न केवल लक्ष्मण को जीवित किया बल्कि उनके सभी पुत्रों को चूहों के रूप में पुनर्जन्म दिया। ये चूहे आमतौर पर चूहों की तरह किसी भी तरह की बदबू नहीं फैलाते हैं और ये कभी भी किसी बीमारी को फैलने का कारण नहीं रहे हैं। मंदिर के सामने एक सुंदर संगमरमर का अग्रभाग है, जिसमें ठोस चांदी के दरवाजे हैं। बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह द्वारा उन्नीस सौ की शुरुआत में मंदिर को उसके वर्तमान स्वरूप में पूरा किया गया था। मैंने इस मंदिर के बारे में लिखा क्योंकि यह एकमात्र मंदिर है जो चूहों की पूजा करता है! जब भी मैं भारत जाता हूं मैं करणी माता मंदिर जाता हूँ। आप भी इस अनोखे प्रसिद्ध मंदिर एक बार अवश्य जाएँ।

चेरी हिल हिंदी पाठशाला

मेरा नाम डॉ. दीप्ति रायबागकर-मलिक है। मेरे सह शिक्षक पीयूष नाथानि जी हैं और पूजा पटेल हमारी युवा स्वयंसेविका है। मध्यमा-२ के छात्र-छात्राओं ने इस वर्ष भारत के प्रसिद्ध मंदिरों के बारे में सीखा।

जगन्नाथ मंदिर

पुरी का श्री जगन्नाथ मन्दिर भारत के ओडिशा राज्य के शहर पुरी में स्थित है। इस मन्दिर को हिन्दुओं के चार धाम में से एक गिना जाता है। यह वैष्णव सम्प्रदाय का मन्दिर है, जो भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है। जगन्नाथ मंदिर में भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलराम और उनकी बहन सुभद्रा जी की पूजा होती है। इस मन्दिर का वार्षिक रथ यात्रा उत्सव प्रसिद्ध है।

- सुहाना पुरीनी

सोमनाथ मंदिर

सोमनाथ मंदिर भारत के गुजरात राज्य के सोमनाथ में है। यह भगवान शिव का मंदिर है। यह मंदिर देश के १२ ज्योतिर्लिंगों में से पहला माना जाता है। कहते हैं कि इस मंदिर की स्थापना चंद्रदेव ने कई देवताओं के साथ मिलकर की थी जिसका उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। अत्यन्त वैभवशाली होने के कारण इतिहास में कई बार यह मंदिर तोड़ा तथा पुनर्निर्मित किया गया। सोमनाथ मंदिर इतना लोकप्रिय है कि हर साल लगभग ५०,०००,००० लोग आते हैं।

- हैली झावेरी

वृन्दावन

वृंदावन उत्तर प्रदेश के मथुरा शहर में है। यहाँ भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। यहाँ भगवान कृष्ण ने अपना बचपन बिताया था। यह कृष्ण लीला का केंद्र है। वृन्दावन यमुना नदी से घिरा हुआ है।

- अरनव रेलिया

तिरुपति वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर

तिरुपति वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर आंध्र प्रदेश में है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी को विष्णुमूर्ति का कलियुग अवतार मानते हैं। वेंकटेश्वर स्वामी को बालाजी, गोविंदा, श्रीनिवास या ऐसे कई नाम से पुकारते हैं। तिरुपति का प्रसाद लड्डू बहुत प्रसिद्ध है। ये मंदिर बहुत महत्व पूर्ण हैं, इस मंदिर को रोज कम से कम ५०,००० से एक लाख लोग दर्शन करते हैं ।

- रीतिशा पराती

राम मंदिर, अयोध्या

श्रीराम जी का जन्म अयोध्या में हुआ था। अयोध्या शहर अत्तर प्रदेश मे है। श्री राम अयोध्या के राजा थे। अयोध्या सरयू नदी के पास है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण जारी है और यह मन्दिर २०२४ में तैयार हो जायेगा।

- वेदांत सिंह सिकरवार

केदारनाथ मंदिर

केदारनाथ मंदिर भारत के उत्तराखण्ड प्रदेश में है। यह मंदिर आठवीं शताब्दी मेंना था। यह मंदिर १२०० साल पुराना है। इस मंदिर में भगवान शिव की पूजा की जाती है। यह मंदिर मंदाकिनी नदी के तट पर है। इस स्थान पर कहा जाता है कि भगवान शिव की जटाओं से गंगा नदी धरती पर उतरी थी। इस मंदिर में बद्रीकेदार उत्सव, श्रावणी अन्नकूट मेला और समाधि पूजा, ये त्योहार मनाए जाते हैं।

- ईशान मलिक

वैष्णो देवी मंदिर

माता वैष्णो देवी मंदिर भारत के सबसे पवित्र धार्मिक स्थलों में से एक है। यह मंदिर जम्मू में कटरा से १४ किलोमीटर दूर त्रिकुटा पर्वत पर स्थित है। देवी सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के नाम की तीन पिंडियाँ एक साथ वैष्णो देवी कहलाती हैं। वे एक माँ के निर्माण, संरक्षण और विनाश जैसी तीन विशेषताओं का प्रतीक हैं। वैष्णो देवी के मंदिर को सबसे पवित्र माना जाता है। अस्सी लाख तीर्थयात्री हर साल वैष्णो देवी की यात्रा करते हैं, जिससे यह तिरुपति के बाद दूसरा अधिक देखा जाने वाला तीर्थ स्थल बन जाता है।वैष्णो देवी के दर्शन के लिए जाते समय हर कोई पूरे मन से "जय माता दी" का जाप करता है।

- अशीता नलावडे

श्री वेंकटेश्वर स्वामी वारी मंदिर

श्री वेंकटेश्वर स्वामी वारी मंदिर भारत के आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले के तिरुपति में तिरुमाला के पहाड़ी शहर में स्थित है। यह मंदिर विष्णु के एक रूप वेंकटेश्वर को समर्पित है। इस मंदिर का निर्माण राजा थोंडाईमन नाम के एक तमिल राजा ने करवाया था। तिरुपति मंदिर साल में ४३३ त्योहार मनाता है। उन सभी त्योहारों में 'ब्रह्मोत्सवम' तिरुपति का सबसे प्रसिद्ध त्योहार है।

- आद्या चावला

सिद्धिविनायक मंदिर

भारत की आर्थिक राजधानी कहलाने वाली मुंबई के प्रभादेवी में स्थित है सिद्धिविनायक का पावन धाम। इस मंदिर में गणपति जी की पूजा की जाती है। विश्व प्रसिद्ध इस मंदिर के बारे में मान्यता है कि यहाँ गणपति के दर्शन मात्र से ही व्यक्ति के सारे दुःख दूर और मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। सिद्धि विनायक जी के मंदिर में मंगलवार को काफी भीड़ रहती है। हर मंगलवार लाखों लोग सिद्धि विनायक जी के मंदिर में दर्शन के लिए जाते हैं।

- आरुष चौधरी

गुड़ी पड़वा/चैत्र नवरात्रि
प्रकृति का नव श्रृंगार..
नव वर्ष के रूप..
जब प्रकृति का श्रृंगार होता है तब हमारा नववर्ष प्रारम्भ होता है।
चैत्र का अर्थ होता है, "मधु"
वसंत के चैत्र मास में इस लोक में मधु रस उत्पन्न होता है।
आज से पेड़-पौधे व लताए पुष्पादित होती है
और वृक्षो की नई कोपले फुटकर प्रकृति को नवीनता प्रदान करती है,
प्रकृति में चहुओर हरियाली हरित चुनरिया सा दृश्य बनना आरम्भ होता है।
इसलिये हम चैत्र शुक्ल एकम को गुड़ी पड़वा महापर्व नव वर्ष के रूप में मनाते है

हमारे पूर्वज, ऋषि मुनियो का ज्ञान-विज्ञान उद्देश्य पूर्ण था

सम्भाल कर रखी हुई चीज...
और ध्यान से सुनी हुई बात
कभी ना कभी काम आ ही जाती है ।।

मेरी कहानी - मुहावरों की माला

तनीषा वर्मा
जर्सी सिटी हिंदी पाठशाला

सभी को मेरा नमस्ते। मेरा नाम तनीषा वर्मा है और मैं जर्सी सिटी हिंदी पाठशाला के उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदी सीखने और पढ़ने में बहुत आनंद आता है। मेरे अध्यापक और अध्यापिका बहुत ही रोचक और सरल तरीके से हिंदी पढ़ाते हैं। मैं कक्षा ७ में पढ़ती हूँ और मुझे नृत्य, कला तथा पियानो बजाना बहुत पसंद है। मुझे बहुत अच्छा अनुभव हो रहा है की मैं इस वर्ष हिंदी पाठशाला से स्नातक हो जाऊँगी। पर यह मेरे अगली कड़ी की शुरुआत होगी। मैं युवा स्वयंसेवक बनकर इस संस्था से जुड़ी रहूँगी। जब मुझे गृहकार्य में मुहावरों के बारे में लिखने को मिला तो मैंने सोचा क्यों न कुछ मुहावरों का उपयोग करके मैं एक कहानी लिखूँ।

कैंपिंग ट्रिप के दौरान एक रात मैं बस सोकर उठने वाली ही थी कि किसी ने मुझसे सुप्रभात कहा। मैंने भी उसको नमस्ते बोला। जब मैंने देखा तो मुझे मेरे अपने केबिन के अंदर एक सुन्दर भालू दिखा और उसको देखकर मैंने अपने **दांतो तले उंगली दबा ली**। "अरे, तुम तो एक भालू हो!" मैंने आश्चर्य से कहा। "हाँ, तुम एक जादुई जगह पर हो" भालू ने उत्तर दिया। मुझे खाने की बहुत अच्छी सुगंध आ रही थी। उस सुगंध से मेरे **मुँह में पानी आ गया**। "कुछ स्वादिष्ट भोजन पक रहा है क्या?" मैंने भालू से पूछा। "हाँ, मैंने आलू पराठा और चाय बनाई है" उसने खुश होकर बताया।
भूख से मेरे पेट में **चूहे कूद रहे थे**, इसीलिए मैंने उससे पूछा "क्या मैं थोड़ा सा खा सकती हूँ?" भालू बोला "हाँ, तुम थोड़ा क्या भरपेट खा सकती हो, पर तुम्हारा नाम क्या है?" मैंने उसको बताया कि मेरा नाम तनीषा है। भालू खुश होकर बोला "मेरा नाम बालू है, तुमसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई।" फिर हम दोनों ने केबिन के बाहर बैठकर गरमा-गरम आलू पराठे खाये। आलू पराठे के स्वाद से मैं आश्चर्यचकित हो गई और मैं ख़ुशी से बोली, "बालू तुम्हारा यह पराठा तो बहुत ही बढ़िया है और इसने सुबह-सुबह **रंग जमा दिया**।" बालू ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया "धन्यवाद, इसको मैंने अपना **खून पसीना** एक करके बनाया है।"

हम लोगों ने आलू पराठा खाते-खाते थोड़ी देर इधर-उधर की बातें की और जब हम लोग पराठे खा चुके, बालू चाय लेने चला गया। वह चाय ला ही रहा था की अचानक से वहाँ कहीं से भागता हुआ एक शेर आ गया और उससे बालू को धक्का लग गया जिससे उसके हाथ से चाय गिर गई। बालू गुस्से से बोला "अरे! मैंने यह चाय बहुत लगन से बनाई थी, तुम्हारे कारण गिर गई।" शेर ने दाँत निपोरते हुए कहा "अच्छा ऐसा क्या? मैंने तुम्हें देखा ही नहीं।" मैंने सोचा इस शेर ने तो चाय गिराकर पूरा **रंग में भंग** डाल दिया। शेर ने जैसे ही मुझे देखा वह बोला अरे! यहाँ तो एक मनुष्य का बच्चा भी है, चलो हम उससे दोस्ती करके उसके साथ खेलते हैं, बालू।" मैंने मन ही मन तय कर लिया था कि मैं यहाँ पर शेर की **दाल नहीं गलने दूँगा**। बालू ने शेर से कहाँ "इस मानव के बच्चे को छोड़कर किसी और के साथ खेलो। यह बच्चा बहुत होशियार है और यहाँ पर तुम्हारा

उल्लू सीधा नहीं होगा शेर महाराज।" पर शेर मानने को तैयार नहीं हुआ। थोड़ी देर में बालू और शेर के बीच बहस होने लगी। शेर गुस्से से बोला "मैं, जंगल का राजा हूँ बालू, क्या तुम्हें यह नहीं पता? मैं तुम्हें तुम्हारी **नानी याद दिला सकता** हूँ। बालू ने भी उत्तर दिया "तुम भले ही जंगल के राजा हो पर तुम बहुत घमंडी हो, तुम मेरे दिल के राजा तो नहीं हो न?" दोनों फिर ज़ोर-ज़ोर से बहस करने लगे। उनकी बहस ने मेरी नाक में दम कर दिया। थोड़ी देर बाद जब दोनों की बहस कुछ थमी तो बालू ने कहा "अलविदा शेर, तुमने मुझे बहुत निराश कर दिया। मैं अपने नए मित्र के साथ थोड़ा चाय पीने का आनंद भी नहीं उठा पाया।" ऐसा बोलकर बालू जैसे ही वहाँ से जाने के लिए मुड़ा, शेर ने बालू की **आँख में धूल झोंककर** उसके ऊपर पंजे से प्रहार कर उसे घायल कर दिया। बालू को बहुत क्रोध आया और वह बोला "मारो इस बदतमीज़ घमंडी शेर को।" फिर दोनों आपस में ज़ोर-ज़ोर से लड़ने लगे। मैं भी उनकी लड़ाई देखकर बहुत डर गई और ऊँची आवाज़ में बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगी। इससे पहले कि उन दोनों की लड़ाई में खूनखराबा होता, मेरी नींद खुल गयी। "अरे! यह क्या, मैं तो एक सपना देख रही थी।" मैंने अपने आप से कहा और बहुत खुश हुई। थोड़ी देर बाद मैं अपने केबिन से बाहर आई तो मुझे दूर पहाड़ी पर भालू का एक बहुत प्यारा बच्चा दिखाई दिया। उसको देखकर मैं **फूला नहीं समाई**।

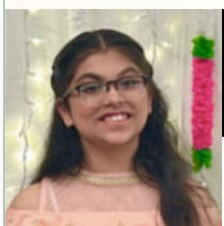
माही सुनेजा

सनातन धर्म

नमस्ते, मेरा नाम माही सुनेजा है। मैं पिस्कैटवे हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-१ में हंसा जी की कक्षा की विद्यार्थी हूँ। चित्रकारी और पुस्तकें पढ़ना मेरी रुचि है।

सनातन धर्म का अर्थ है "शाश्वत धर्म"। यह हिंदू धर्म को संदर्भित करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक उपनाम है। यह हिंदू धर्म के "शाश्वत" सत्य और शिक्षाओं को संदर्भित करता है। इसका अनुवाद "जीने का प्राकृतिक और शाश्वत तरीका" के रूप में भी किया जा सकता है। इसका प्रयोग भारतीय भाषाओं में हिंदू धर्म के लिए किया जाता है। धर्म को अकसर "कर्तव्य" या "धार्मिक कर्तव्य" के रूप में अनुवादित किया जाता है, लेकिन इसका अर्थ गहरा है। सनातन-धर्म की धारणा के अनुसार जीवित इकाई (आत्मन) का शाश्वत और आंतरिक झुकाव सेवा करना है। सनातन धर्म पारलौकिक होने के नाते सार्वभौमिक और स्वयंसिद्ध कानूनों को संदर्भित करता है जो हमारे अस्थायी विश्वास प्रणालियों से परे हैं। १९वीं शताब्दी के अंत में हिंदू पुनरुत्थानवाद (revivalism) आंदोलन के दौरान इस शब्द को हिंदू धर्म के नाम के रूप में एक धर्म के रूप में पुनर्जीवित किया गया था। सनातन धर्म में ईमानदारी, जीवों को चोट पहुँचाने से बचना, पवित्रता, सद्भावना, दया, धैर्य, सहनशीलता, आत्म-संयम, उदारता और तपस्या जैसे गुण सम्मिलित हैं। कर्म प्रक्रिया, विशेष रूप से सनातन के रूप में न तो कोई शुरुआत है और न ही कोई अंत।

मेरी हिंदी यात्रा एवं हिंदी यू.एस.ए. का अनुभव

शिवांश शर्मा

नमस्ते, मेरा नाम शिवांश शर्मा है और मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. की ईस्ट ब्रंसविक पाठशाला में उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ। मुझे संगीत सुनना और किताबें पढ़ना अच्छा लगता है।

हिंदी, इंग्लिश व मैंडरिन के बाद विश्व में सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली भाषा है, जिसे लगभग ७० करोड़ व्यक्ति अर्थात् प्रत्येक ११ व्यक्तियों में से १ व्यक्ति प्रयोग करता है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा होने के साथ ही अन्य देशों में भी बोली जाती है। हिंदी भाषा हमें हमारी संस्कृति, परंपराओं एवं परिजनों से जोड़ती है।

ऊपर दिए सभी कारण हिंदी सीखने के लिए पर्याप्त हैं। इसके साथ ही हिंदी मेरे माता और पिता की मातृभाषा है। इसलिए मेरी हिंदी यात्रा का आरंभ बचपन में ही इंग्लिश व गणित सीखने के साथ ही प्रारंभ हो गया था। मेरी माँ ने घर पर ही मुझे हिंदी अक्षरों एवं मात्राओं का ज्ञान कराया और मुझे हिंदी शब्द एवं वाक्य पढ़ने सिखाये। मैंने हिंदी के बहुत सारे शब्द, वर्ष के माह, सप्ताह के दिन, रंगों के नाम, हिंदी गिनती, व्याकरण आदि अपनी माँ से अपनी प्रारंभिक शिक्षा के साथ ही सीखे। बाद में स्कूल के काम की अधिकता व अन्य गतिविधियों में व्यस्तता के कारण मैं हिंदी कभी-कभी ही पढ़ता था।

पिछले वर्षों कोविड के समय स्कूल ऑनलाइन होने व मेरे अन्य कार्य कम होने से मेरे पास पर्याप्त समय था। इसलिए मेरे माता-पिता ने मेरा रजिस्ट्रेशन हिंदी यू.एस.ए. में कराया, जिससे मैं अपनी हिंदी यात्रा को जारी रख सकूँ। हिंदी यू.एस.ए. में मेरी प्रवेश परीक्षा लेने के बाद मुझे उच्चस्तर-१ में प्रवेश दिया गया। यह मेरे लिए बहुत गर्व का विषय था, क्योंकि मैंने प्रारंभ में सीखी हुई हिंदी को याद रखा था। हिंदी यू.एस.ए. में प्रवेश के बाद मेरा हिंदी पढ़ने व लिखने का अभ्यास लगातार होने लगा। हिंदी कक्षा में अपने मित्रों के साथ मैंने हिंदी व्याकरण, नए-नए शब्द, पर्यायवाची, मुहावरे आदि सीखे। हम अभी लेखन के प्रकार सीख रहे हैं। हिंदी यू.एस.ए. के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेना मुझे पसंद है। उच्चस्तर-१ में कविता पाठ प्रतियोगिता में कक्षा में मुझे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ एवं अमृत महोत्सव-२०२२ में हिंदी पठन में मुझे प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इन उपलब्धियों से मेरा आत्मविश्वास व हिंदी से प्यार बढ़ा है। काव्य प्रतियोगिता के लिए कविता का चयन करते समय मुझे विभिन्न कवियों की रचनाओं को पढ़ने का अवसर मिला। इससे मुझे हिंदी साहित्य को और पढ़ने व समझने की प्रेरणा मिली। उच्चस्तर-२ पूर्ण करने के बाद भी मैं अपनी हिंदी यात्रा को जारी रखना चाहता हूँ । मैं अधिक से अधिक हिंदी साहित्य पढ़ूँगा। मैं हिंदी यू.एस.ए में स्वयंसवेक बनना चाहता हूँ, जिससे मैं अन्य छात्रों को हिंदी सीखने व हिंदी से प्रेम करने को प्रेरित कर सकूँ और हिंदी के प्रचार व प्रसार के महत्वपूर्ण कार्य में हिंदी यू.एस.ए को अपना योगदान दे सकूँ। मेरी हिंदी यात्रा को मनोरंजक बनाने एवं इसे गति व दिशा देने के लिए मैं हिंदी यू.एस.ए एवं अपनी शिक्षिकाओं को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

Indo-American Festivals Inc.

Presents

Free Parking

Free Admission

25th GRAND DUSHAHRA FESTIVAL

Lake Papaianni Park

100 Municipal Blvd, Edison, NJ

Saturday, 21st October, 2023

1:00 PM to 8:00 PM

Rain Date: Sunday, 29th October,2023

This program is made possible in part by funds from the Middlesex County Board of Chosen Freeholders/Office of Cultural & Heritage and the NJ State Council Arts/Department of State.

Dazzling Ramleela - By Varsha Naik

Ravan Dahan *(Burning 25' Tall Ravan Effigy- built in USA by Krishna Singhal)*

Cultural Program - By Pratibha

Exotic Indian and Ethnic Food,

Free Health / Medical screening Camp organized By AGRAWAL SAMAJ of USA

Meena Bazar, Arts & Crafts and much more...

For Booths Call : Shalini Chhabra : 732-915-5634, Shweta Agarwal : 908-342-4401

For Corporate Sponsorship : Kulraaj Anand: 732-668-3726

For Info Call: Chanchal Gupta : 732-690-1249, Dinesh Mittal : 908- 705-6365,

Raj Mittal : 732-423-4619, Kunal Mehta : 201-725-8477

Visit Us @ ***www.dushahra.com*** or write us on **contact@dushahra.com**

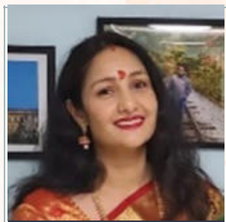
ऋचा खरे

मैं ऋचा खरे साउथ ब्रुंस्विक पाठशाला की मध्यमा-२ की अध्यापिका हूँ। मेरी सह अध्यापिका वंदना हिरनी जी हैं। गत १२ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. में अध्यापन कर रही हूँ। यात्रा का आरंभ बच्चों को पढ़ाने से हुआ और इसमें स्वयं को इतना सीखने को मिला जिससे यह यात्रा और भी रोमांचक व आनंदमय हो गई। हमारी कक्षा की विद्यार्थी ने सनातन धर्म पर अपने विचार इस चित्र के द्वारा व्यक्त किए हैं।

वंदना हिरनी

स्तुति वर्मा

SAI CPA Services
Your Friendly Neighborhood CPA

IMPROVE THE WAY FOR YOUR BUSINESS TO THE NEXT LEVEL

LET US MAKE THINGS EASY!

- BUSINESS STARTUP SERVICES
- ACCOUNTING & BOOKKEEPING
- SALES TAX & PAYROLL TAX
- DEVELOPING & IMPLEMENTING BUSINESS MODELS
- PAYROLL SERVICES
- IRS PROBLEMS & REPRESENTATIONS
- AUDIT AND REVIEW
- INCOME TAX PREPARATION FOR INDIVIDUAL & BUSINESS
- VIRTUAL CFO SERVICES
- NON-PROFIT TAXES & 501C(3) APPROVALS
- TAX COMPLIANCE AND YEAR END PLANNING
- FINANCIAL STATEMENT PREPARATION & ATTESTATION

AJAY KUMAR
CPA, MBA

support@saicpaservices.com
www.saicpaservices.com

(908)380-6876
(732)215-9600
Fax: (908)368-8638

Sai CPA Services is led by Ajay Kumar, CPA, MBA and former CEO of Visionary Group. In his guidance, Sai CPA Services is committed to provide the best possible financial services to its client.

SAI CPA Services
Your Friendly Neighborhood CPA

WWW.SAICAPSERVICES.COM

OFFICE LOCATIONS

1 AUER CT. 2ND FLOOR
EAST BRUNSWICK, NJ 08816
PH: (908) 888-8901

5 VILLA FARMS CIR.
MONROE TWP, NJ 08831
PH: (908) 380-6876

INDIAN BUSINESS ASSOCIATION INC.

Congratulates

हिन्दी USA ®

Twenty Second

Annual Hindi Mahotsav

PLEASE JOIN

INDIA DAY PARADE

13th August 2023

on OAK TREE Rd Edison to Iselin

ibausa.org

CHANDRAKANT PATEL Chairman	Dr. RAJ PANDYA Advisory Board Chair	DHIREN AMIN President	MANHER SHAH Vice Chairman	MAHESH SHAH Vice Chairman
HARSHAD PATEL Exec. Vice President	PRAFUL PATEL Gen. Secretary	SHARAD AGRAWAL Secretary	KAPIL SHAH Past President	